केंद्र और राज्य शासन से विज्ञापन के लिए अनुमोदित

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Website:- www.malwaherald.com

RNI No. MPHIN/2010/33238
dainikmalwaherald@yahoo.com
malwaherald@gmail.com

श्री महाकालेश्वर जी का संध्या काल आरती श्रृंगार दर्शन

मालवा हेराल्ड

सुविचार

दूसरों के लिए दीपक लेकर चलेंगे तो, रोशनी आप पर भी पड़ेगी, और, चेहरा भी आपका ही दमकेगा।

वर्ष 13 अंक 279 | उज्जैन, शुक्रवार 23 मार्च 2023 | पृष्ठ-8 | मूल्य-1 रुपए

न्यूज ब्रीफ

भाजपा ने दिल्ली-राजस्थान सहित चार राज्यों में बदले प्रदेश अध्यक्ष

नई दिल्ली/जीएनएस। 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी ने कुछ बड़े कदम हुए हैं। दरअसल भाजपा ने अपने चार राज्यों के प्रदेशाध्यक्ष बदले हैं। गुरुवार को पार्टी ने दिल्ली, राजस्थान, बिहार और ओडिशा में अपने प्रदेश अध्यक्ष बदले हैं। पार्टी की यहां जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार भाजपा अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने सम्राट चौधरी को बिहार, वीरेंद्र सचदेवा को दिल्ली, सी पी जोशी को राजस्थान और मनमोहन सामल को ओडिशा में पार्टी का नया प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया है।

लोकसभा में फिर हंगामा, सदन की कार्यवाही स्थगित, राहुल गांधी के खिलाफ खूब हुई नारेबाजी

नई दिल्ली/जीएनएस। लोकसभा में गुरुवार को भी सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच आरोप-प्रत्यारोप को लेकर भारी हंगामे की वजह से सदन की कार्यवाही दो बजे तक स्थगित कर दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सदन की कार्यवाही शुरू होते ही स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को श्रद्धांजलि देने के साथ-साथ सदन के तीन पूर्व सदस्यों के निधन पर शोक व्यक्त किया। शहीदों और सदन के पूर्व सदस्यों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए लोकसभा में एक मिनट का मौन रखा गया। अध्यक्ष ने उसके बाद जैसे ही प्रश्नकाल शुरू किया, विपक्षी सदस्य नारेबाज़ी करने लगे। जवाब में सत्तापक्ष के सदस्य भी अपने स्थान पर खड़े होकर कांग्रेस राहुल गांधी को लेकर नारेबाज़ी करने लगे। अध्यक्ष ने कहा कि वह सदन को चलाना चाहते हैं, प्रश्नकाल के बाद नियमों के अनुरूप सभी सदस्यों को बोलने का मौक़ा दिया जाएगा। श्री बिरला के आग्रह करने के बावजूद हंगामा नहीं रुका, जिसकी वजह से सदन की कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी।

रविवार को भी खुलेंगे बैंक, 31 मार्च तक नहीं होगी कोई छुट्टी आरबीआई ने जारी किए निर्देश

नई दिल्ली/जीएनएस। भारतीय रिजर्व बैंक आरबीआई ने सभी बैंकों को 31 मार्च तक बिना किसी छुट्टी के सभी शाखाएं खुली रखने के निर्देश जारी किए हैं। यानी अब बैंक संडे को भी बैंकों में कामकाज होगा। आरबीआई की तरफ से कहा गया है कि 31 मार्च को वित्तिय वर्ष 2022-23 खत्म हो रहा है। सरकार से जुड़े सभी लेनदेन इस तारीख तक पूरे हो जाने चाहिए। यही कारण है कि आरबीआई ने सभी बैंकों को सरकारी लेनदेने के लिए शाखाएं खोलने के आदेश जारी किए हैं। केंद्रीय बैंक के पत्र में कहा गया है कि सभी एजेंसी बैंकों को 31 मार्च, 2023 को सामान्य कामकाजी घंटों तक सरकारी लेनदेन से संबंधित काउंटर लेनदेन के लिए अपनी नामित शाखाओं को खुला रखना चाहिए। इसने आगे कहा कि नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर और रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट सिस्टम के माध्यम से लेनदेन 31 मार्च, 2023 की रात 12 बजे तक जारी रहेगा।

राहुल गांधी को सजा के बाद युवा कांग्रेस ने प्रधानमंत्री का फूंका पुतला

बिलासपुर/जीएनएस। मोदी सरनेम मामले में गुरुवार को राहुल गांधी के खिलाफ कार्रवाई को लेकर युवा कांग्रेस के पदाधिकारी व कार्यकर्ता सड़क पर उतरे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला जलाते हुए केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीवी श्रीनिवास, छत्तीसगढ प्रभारी पलक वर्मा, सह प्रभारी प्रियंका सारसर व प्रदेश अध्यक्ष आकाश शर्मा ने केंद्र पर आरोप लगाते हुए कहा कि केंद्र सरकार राहुल गांधी को फंसाने की साजिश रच रही है। हर मोर्चे पर हम विरोध करेंगे।

मध्यप्रदेश में कोई युवा बेरोजगार नहीं रहेगा।

युवाओं के सहयोग से एक नया और आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश गढ़ेंगे-मुख्यमंत्री चौहान

- *युवाओं को कौशल सीखने और रोजगार के अवसर प्रदान करेंगे*
- *मुख्यमंत्री ने राज्य की युवा नीति एवं यूथ पोर्टल लांच किया*
- *मुख्यमंत्री युवा कौशल कमाई योजना दुनिया की सबसे बड़ी अप्रेंटिसशिप योजना होगी*
- *हर वर्ष मध्यप्रदेश में होंगे खेलो एमपी यूथ गेम्स*
- *मुख्यमंत्री ने युवाओं के हित में की अनेक घोषणाएँ*
- *मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति और विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार राशि वितरित*
- *मुख्यमंत्री श्री चौहान यूथ महापंचायत में युवाओं से हुए रू-ब-रू*

भोपाल/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि जैसे चिड़िया अपने बच्चों को घोंसलों में नहीं रखती, उन्हें उड़ना सिखाती है, वैसे ही हम हमारे युवाओं को बेरोजगारी भत्ता न देकर विभिन्न कौशल सीखने और अपने आप को रोजगार के लिए तैयार करने के अवसर प्रदान करेंगे। मुख्यमंत्री युवा कौशल कमाई योजना का क्रियान्वयन एक जुलाई से आरंभ होगा। इसमें प्रदेश के युवा, श्रेष्ठतम प्रतिष्ठानों से जुड़ कर कौशल सीखेंगे, वे लर्न भी करेंगे और अर्न भी करेंगे। ऐसे युवाओं को हर माह कम से कम 8 हजार रूपए दिए जाएंगे। प्रतिष्ठान अपनी ओर से अलग से भी राशि देंगे। युवाओं के सहयोग से ही नए और आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश का निर्माण होगा। युवा अपने सपने साकार कर सकें और सफलता की ऊँची उड़ान उड़ सकें, इसके लिए राज्य शासन हर संभव व्यवस्था करने और आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराने के लिए तत्पर है। इसी कड़ी में आज राज्य की युवा नीति लांच की जा रही है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान शहीद भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव के शहादत दिवस पर राजधानी भोपाल के मोतीलाल नेहरू स्टेडियम में यूथ महापंचायत को संबोधित कर रहे थे। चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री विश्वास सारंग, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया, उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव, स्कूल शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री इंदर सिंह परमार उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने यूथ महापंचायत में आये युवाओं का पुष्प-वर्षा कर स्वागत किया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने युवा पोर्टल का शुभारंभ किया और राज्य युवा नीति की पुस्तिका का अनावरण कर युवा नीति लांच की। मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री जन-कल्याण शिक्षा प्रोत्साहन योजना के 20 हजार 937 युवा हितग्राहियों के खातों में 17 करोड़ 94 लाख रूपए, मुख्यमंत्री मेधावी विद्यार्थी योजना में देश-प्रदेश के संस्थानों में अध्ययनरत 3 हजार 182 विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए 175 करोड़, 36 वें नेशनल गेम्स में प्रदेश के लिए 66 पदक अर्जित करने वाले 132 खिलाड़ियों को 4 करोड़ 38 लाख 80 हजार की पुरस्कार राशि और गाँव की बेटी योजना में 25 हजार 800 बेटियों के खातों में 12 करोड़ 90 लाख रूपये की राशि अंतरित की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने राज्य युवा पुरस्कार विजेता युवाओं को पुरस्कृत किया। साथ ही प्रदेश में विद्यमान प्रतिष्ठित औद्योगिक इकाइयों में अप्रेंटिसशिप के लिए युवाओं को अनुबंध-पत्र भी प्रदान किए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने युवाओं को युवा नीति के उद्देश्य तथा मुख्य बिन्दुओं की जानकारी भी दी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने अमर शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू के बलिदान दिवस पर उनका स्मरण करते हुए कहा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के संघर्ष और कुर्बानी से ही देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। युवा पीढ़ी उनके त्याग, तपस्या और बलिदान से जुड़ी रहे, इसी उद्देश्य से यूथ महापंचायत का आयोजन अमर शहीदों के बलिदान दिवस पर किया गया।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वैभवशाली, गौरवशाली, शक्तिशाली, सम्पन्न और समृद्ध भारत का निर्माण हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल से आजादी के ज्ञात-अज्ञात और गुमनाम नायकों के संघर्ष और बलिदान से देश परिचित हुआ है। इंडिया गेट पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की प्रतिमा स्थापित की गई है। मध्यप्रदेश में भी जनजातीय क्रांतिकारियों की प्रतिमाएँ तथा स्मारक निर्मित किए गए हैं। देश के युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद प्रेरणा के मुख्य स्रोत हैं। स्वामी जी का मानना था कि कोई भी काम ऐसा नहीं है, जो हम नहीं कर सकते। युवा अपने को दीन-हीन न समझें। प्रधानमंत्री श्री मोदी के अनुसार यह अमृत काल की अमृत पीढ़ी है। आप अपने माता-पिता के साथ राष्ट्र और प्रदेश की भी संतानें हैं। राज्य सरकार युवाओं के सर्वांगीण विकास और उज्ज्वल भविष्य के लिए कृत-संकल्पित है।

मुख्यमंत्री की युवा कल्याण के लिए घोषणाएँ

प्रदेश के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के एमबीबीएस और बीडीएस में प्रवेश के लिए अलग से मेरिट लिस्ट बनाई जाएगी। इसके लिए कॉलेजों में 5 प्रतिशत सीट्स रिजर्व रहेगी।प्रदेश में राज्य स्तरीय युवा आयोग का पुनर्गठन 5 अप्रैल तक किया जाएगा।

अगले वर्ष से युवा बजट बनाया जाएगा। यह मॉनिटरिंग की जाएगी कि युवा-कल्याण पर कितनी राशि किन-किन योजनाओं में आवंटित की गई एवं उन पर कितना कार्य किया गया है।

प्रतिवर्ष खेलो एमपी यूथ गेम्स का आयोजन किया जाएगा। अगले वित्तीय वर्ष से खेलों एवं खेल अधो-संरचना पर लगभग 750 करोड़ रूपये का निवेश करने का निर्णय लिया गया है। स्कूलों में खेल की शिक्षा अनिवार्य की जाएगी और योग को प्रोत्साहित किया जाएगा। हर गाँव में खेल मैदान बनाया जाएगा।भोपाल में ग्लोबल स्किल पार्क इस वर्ष आरंभ हो जायेगा। ग्वालियर, जबलपुर, सागर और रीवा में नए ग्लोबल स्किल पार्क बनाए जाएंगे।मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रदेश में मुख्यमंत्री युवा कौशल कमाई योजना लागू करने की घोषणा की। योजना में युवाओं को लर्न एंड अर्न का अवसर रहेगा।

नवीन पटनायक से ममता बनर्जी ने की मुलाकात, कहा- हमने संघीय ढांचे को मजबूत बनाने का लिया संकल्प

नई दिल्ली/जीएनएस। नवीन पटनायक से मुलाकात के बाद ममता बनर्जी ने कहा कि हमने संघीय ढांचे को मजबूत और स्थाई बनाने का संकल्प लिया है। दूसरी ओर से इस मुलाकात को लेकर नवीन पटनायक से भी सवाल पूछा गया। उन्होंने कहा कि यह एक शिष्टाचार मुलाकात थी।

2024 लोकसभा चुनाव को लेकर सुगबुगाहट तेज होती दिखाई दे रही है। इन सबके बीच ममता बनर्जी भी एक अलग मोर्चे के गठन को लेकर जुटी हुई हैं। इसी कड़ी में आज उन्होंने उड़ीसा के मुख्यमंत्री और बीजू जनता दल के अध्यक्ष नवीन पटनायक से मुलाकात की है। नवीन पटनायक से मुलाकात के बाद ममता बनर्जी ने कहा कि हमने संघीय ढांचे को मजबूत और स्थाई बनाने का संकल्प लिया है। दूसरी ओर से इस मुलाकात को लेकर नवीन पटनायक से भी सवाल पूछा गया। उन्होंने कहा कि यह एक शिष्टाचार मुलाकात थी। गंभीर राजनीतिक मामलों पर कोई गहन चर्चा नहीं हुई है। हम बहुत पुरानी मित्रता साझा करते हैं।हालांकि, ममता बनर्जी लगातार 2024 चुनाव को लेकर गैर कांग्रेसी गठबंधन की कोशिश में लगी हुई हैं। लेकिन दोनों नेताओं ने तीसरे मोर्चे या क्षेत्रीय गठबंधन की संभावनाओं से जुड़े सवालों को टाल दिया। ममता बनर्जी इससे पहले जगन्नाथपुरी भी पहुंची थीं। उन्होंने पुरी में बंगाल निवास के निर्माण के लिए एक भूखंड का भी चयन किया है। ममता बनर्जी नवीन पटनायक से मुलाकात के लिए उनके आवास पर पहुंची थीं।

बेटा ही चलाता है वंश, ऐसी अनर्गल बातें न करें अदालतें, सुप्रीम कोर्ट ने दी यह नसीहत

नई दिल्ली/जीएनएस। अदालतों को फैसलों के दौरान पितृसत्तात्मक धारणा को मजबूत करने वाली टिप्पणियां करने से बचना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने सात साल के बच्चे की हत्या के मामले में फांसी की सजा पाए दोषी की पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई करते हुए यह सलाह दी है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस हिमा कोहली और जस्टिस पीएस नरसिम्हा की बेंच ने सात साल के बच्चे की किडनैपिंग कर उसकी हत्या करने के मामले में दोषी को अदालत ने फांसी की सजा से राहत देने से इनकार कर दिया। इसके साथ ही अदालत ने हाई कोर्ट के फैसले में की गई टिप्पणी पर भी ऐतराज जताया। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने इस मामले में फैसला सुनाते हुए कहा था कि इकलौते बेटे की हत्या करने से उसके माता-पिता को गहरा सदमा लगा है। सात साल का बच्चा उनका इकलौता बेटा था, जो उनके वंश को आगे बढ़ाता और बुढ़ापे में सहारा होता।

उसकी हत्या करना गंभीर और क्रूर अपराध है। इससे उसके माता-पिता को गंभीर आघात पहुंचा है। हाई कोर्ट की इस टिप्पणी पर उच्चतम न्यायालय ने कहा कि अदालतों का इस तरह की टिप्पणी करना उचित नहीं है। यदि हत्या हुई है, तो वह काफी है, भले ही मारने वाले ने लड़की या फिर लड़के किसी को भी मारा हो। शीर्ष अदालत की बेंच ने कहा कि फैसले में यह मायने नहीं रखता कि हत्या जिसकी हुई, वह लड़का है या लड़की। हत्या समान रूस से दुखद है, किसी की भी हुई हो। इसके अलावा अदालतों को ऐसी टिप्पणी नहीं करनी चाहिए, जिससे यह संदेश जाए कि बेटा ही वंश को आगे बढ़ाता है और माता-पिता के लिए बुढ़ापे का सहारा बनता है। बेंच ने नसीहत देते हुए कहा कि ऐसी टिप्पणियां समाज में पितृसत्तात्मक धारणा को मजबूत करने वाली होती हैं। अदालतों को फैसलों के दौरान ऐसी बातों से बचना चाहिए।

हमीरपुर में फसल लूटने के आरोपी 10 पुलिसकर्मी भगोड़े घोषित, कोर्ट ने दिए कुर्की के आदेश

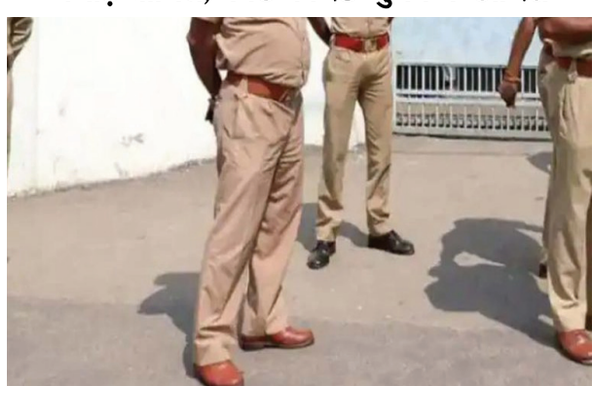

हमीरपुर/जीएनएस। उत्तर प्रदेश में हमीरपुर जिले की एक अदालत ने 22 साल पहले फसल लूटने के आरोपी दस पुलिसकर्मियों को भगोड़ा घोषित कर कुर्की के आदेश कर दिये है। अगली सुनवाई 27 मार्च को होगी। आरोपितों में सात पुलिसकर्मी सेवानिवृत्त हो चुके है। पुलिस सूत्रों ने गुरूवार को बताया कि जरिया गांव निवासी माली प्रसाद तिवारी ने गांव के ही रामपाल को वर्ष 1999 में 12 बीघा जमीन बटाई पर दी थी और एक साल बाद रामपाल से खेत वापस ले लिया और चने की फसल बो दी थी।खेत में चने की फसल कटी पड़ी थी कि रामपाल और पप्पू ने तत्कालीन जरिया थानाध्यक्ष आरसी यादव,सिपाही बलबीर सिंह, रमेशचंद्र बाथम, विमलेश यादव, विनोद यादव, ओमकार यादव, ओमप्रकाश, बाबूराम पाल, हजारीपाल और भैरव सिंह की मदद से फसल लूट ली।

मामले की शिकायत पीडित ने पुलिस आला अफसरो से की और सुनवाई नही होने पर अदालत की शरण ली। मामले की सुनवाई विशष न्यायाधीश(डकैती) प्रदीप कुमार जयंत ने की। कोर्ट ने 14 मार्च को आरोपितों को गिरफ्तार कर अदालत में 21 मार्च तक पेश करने को कहा था लेकिन जरिया पुलिस ने इस मामले में कोई कार्यवाही नही की। नाराज होकर कोर्ट ने बुधवार को सभी को भगोड़ा घोषित करते हुये कुर्की के आदेश कर दिये है। मामले की अगली सुनवाई 27 मार्च को होगी।

एनआईटी रायपुर के छात्रों को अमेजान,सैमसंग से मिला आफर 46 लाख का मिला पैकेज

रायपुर/जीएनएस। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर में चल रहे आनकैंपस प्लेसमेंट प्रोसेस में विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियां प्लेसमेंट के लिए आ रही है। इसी कड़ी में सूचना प्रौद्योगिकी की छात्रा निदामर्थी प्रशांति नागा और कम्प्यूटर साइंस की छात्रा समिधा थवाईत को टेक-मेगा दिग्गज अमेजान से साफ्टवेयर डेवलपर्स के रूप में 46 लाख का सलाना पैकेज आफर किया हैं।

ईवीएम को लेकर शरद पवार के घर हुई विपक्षी दलों की बैठक, दिग्विजय सिंह ने कही यह बात

नई दिल्ली/जीएनएस। दिग्विजय सिंह ने कहाकि पहले वे कहते थे कि यह एक स्टैंडअलोन मशीन है लेकिन अब वे स्वीकार करते हैं कि यह एक स्टैंडअलोन मशीन नहीं है क्योंकि उम्मीदवार का नाम और चुनाव चिन्ह इंटरनेट के माध्यम से डाला जाता है। संसद के बजट सत्र का दूसरा चरण चल रहा है। दूसरे चरण में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच जबरदस्त तरीके से वार-पलटवार का दौर चल जारी है। इन सब के बीच आज एनसीपी प्रमुख शरद पवार के घर विपक्षी दलों की बैठक हुई। जानकारी के मुताबिक विपक्षी दलों की बैठक के में ईवीएम को लेकर गहन चर्चा हुई है। कांग्रेस की ओर से इस बैठक में दिग्विजय सिंह शामिल हुए। इसके अलावा रामगोपाल यादव, कपिल सिब्बल भी इस बैठक में मौजूद थे।

उत्तराखंड में बड़ा हादसा, दर्शन कर लौट रहे श्रद्धालुओं को बस ने मारी टक्कर, 5 की मौत

नैनीताल/जीएनएस। उत्तराखंड के प्रसिद्ध पूर्णागिरी धाम से मां के दर्शन करके लौट रहे उत्तर प्रदेश के पांच श्रद्धालुओं की एक बस की चपेट में आने से दर्दनाक मौत हो गयी जबकि सात अन्य घायल हो गए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने दुर्घटना पर दुख जताया है। केबिनेट मंत्री रेखा आर्य ने भी टनकपुर अस्पताल जाकर वहां भर्ती घायलों का हालचाल जाना। चंपावत के पुलिस क्षेत्राधिकारी अविनाश वर्मा ने बताया कि उत्तर प्रदेश के बदायूं और बहराइच के रहने वाले कुछ श्रद्धालु आज पूर्णागिरी धाम दर्शन के लिए आए थे। सभी लोग सुबह-सुबह मंदिर से दर्शन करके अपने घर लौटने के लिए मंदिर से कुछ दूरी पर ठुलीगाड़ नामक जगह में सड़क किनारे खड़े होकर बस का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान कुछ श्रद्धालु बस की चपेट में आ गए। चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक ने अस्पताल ले जाते दम तोड़ दिया। हादसे में सात लोग घायल भी हुए हैं।

अविनाश वर्मा ने बताया कि इस घटना के बाद मौके पर अफरातफरी मच गयी। जिला पुलिस नियंत्रण कक्ष से सूचना मिलते ही उपजिलाधिकारी सुंदर सिंह और सीओ अविनाश वर्मा दल बल के साथ मौके पर पहुंच गये। सभी घायलों को तत्काल टनकपुर अस्पताल ले जाया गया। बताया जा रहा है कि एक घायल ने टनकपुर अस्पताल से रेफर करते वक्त रास्ते में दम तोड़ दिया। मृतकों में बद्री नारायण (43) उप्र, माया राम (29), रामदेई (30) निवासीगण सौहराव, बहराइच, उप्र, नेत्रावती (20), अमरावती (26) निवासीगण पिंडा, बिल्सी बदायूं, उत्तर प्रदेश शामिल हैं। घायलों के नाम कौशल्या देवी निवासी सौहराव, बहराइच, उप्र, कुसुम देवी, पार्वती देवी, सरोज, राधिका, रामसूरत निवासीगण सौहराव, थाना रामगांव, बहराइच, उप्र, प्रियांशी निवासी पिंडा, बिल्सी, बदायूं हैं। सीएम धामी ने इ स हादसे पर दुख जताया है और मृतकों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से बात कर दुर्घटना की जानकारी ली और घायलों का हरसंभव उपचार के निर्देश दिए। दुर्घटना की सूचना मिलते ही जनपद की प्रभारी मंत्री एवं कैबिनेट मंत्री रेखा आर्य भी मौके पर पहुंच गई। उन्होंने टनकपुर अस्पताल जाकर घायलों का हालचाल जाना।

अंधे कत्ल की गुत्थी सुलझी, पति ने नाबालिग बेटे के साथ मिलकर आरी से काटा पत्नी का सिर, धड़ रेत में दबाया

बैतूल/जीएनएस। तीन माह पहले जिले के हनुमान डोल मंदिर के पास जंगल में एक महिला की सिर कटी लाश रेत में दबी मिली थी। पुलिस ने अंधे कत्ल का यह मामला सुलझा लिया है। महिला की निर्मम हत्या किसी और ने नहीं, बल्कि उसके पति ने ही की थी। साक्ष्यों को छुपाने में उसके नाबालिग बेटे ने भी सहयोग किया था।पुलिस अधीक्षक सिमाला प्रसाद ने बताया कि मृतका राधा राजपूत को उसके पति शैलेंद्र राजपूत ने मारा और 14 साल के बेटे ने भी इसमें सहयोग दिया। हत्या के बाद आरोपित का सहयोग करने वाले दोस्त समेत तीनों के खिलाफ मामला दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि 29 दिसंबर 2022 को रानीपुर थाना क्षेत्र के हनुमान डोल मंदिर के पुल के नीचे महिला की सिर कटी लाश मिली थी।

आयुषी स्वस्थ नारी सशक्त नारी के उपलक्ष में आयुष विभाग झाबुआ द्वारा बस स्टैंड पर महिला स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

आयुर्वेद की दवाइयों से सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसका कोई साइडइफेक्ट नहीं होता-कलेक्टर

झाबुआ/माणक लाल जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मध्यप्रदेश शासन आयुष विभाग के आदेशानुसार आयुषी स्वस्थ नारी सशक्त नारी के उपलक्ष में आयुष विभाग झाबुआ द्वारा बस स्टैंड पर महिला स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कलेक्टर रजनी सिंह , अपर कलेक्टर एसएस मुजाल्दा, गुड मॉर्निंग क्लब के अध्यक्ष श्रीमती प्रफुल्ल शर्मा, वरिष्ठ अभिभाषक श्रीमती अर्चना राठौर द्वारा भगवान धन्वंतरि की पूजा अर्चना एवं माल्यार्पण कर किया गया। आयोजन स्थल पर कन्याओं का पूजन किया गया , उन्हें चॉकलेट भेंट की गई। आयोजन में अतिथियों का पुष्पगुच्छ से अभिनंदन किया गया। अतिथियों को औषधि पौधा प्रदान किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया कि एलोपैथिक की दवाइयां जल्दी असर करती है इसलिए उसके प्रति लोगों का लगाव ज्यादा है। लेकिन कई बार उसका दुष्प्रभाव भी होते हैं कई बार नुकसान भी करती है और बीमारी जल्दी ठीक होती है लेकिन परमानेंट ठीक हो इसकी कोई गारंटी नहीं होती है। जबकि आयुर्वेद की दवाइयों से सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसका कोई साइडइफेक्ट नहीं होता हैं। श्रीमती सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस कैंप का अधिक से अधिक महिलाएं लाभ प्राप्त करें एवं इसका व्यापक प्रचार-प्रसार भी करें।

कार्यक्रम में पोषण वाटिका आयुष विभाग की महत्वपूर्ण योजना आयुष क्योर ऐप एवं देवारणय योजना के बारे में स्टॉल लगाकर प्रदर्शनी के माध्यम प्रदर्शित किया गया। कलेक्टर श्रीमती सिंह द्वारा यहां पर आयुर्वेद की लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया एवं औषधि पौधों के बारे में जानकारी प्राप्त की। यहां पर महिला स्वास्थ्य शिविर में 65 महिलाओं को आयु रक्षा किट का वितरण कलेक्टर श्रीमती सिंह के द्वारा किया गया । शिविर में कुल रोगी लाभान्वित संख्या महिला पुरुष बच्चों सहित 856 रही। शिविर में 16 चिकित्सक एवं 37 पैरामेडिकल स्टाफ द्वारा सेवाएं दी गई। आयोजन में गुड मॉर्निंग क्लब के अध्यक्ष श्रीमती प्रफुल्ल शर्मा ने भी अपना उद्बोधन दिया और कहा कि 1 घंटा प्रतिदिन कम से कम अपने लिए जरूर निकालिए इससे आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा साथ ही आपको काम करने की ऊर्जा भी प्राप्त होगी। वरिष्ठ अधिवक्ता श्रीमती अर्चना राठौर ने अपने उद्बोधन में कहा कि आयुर्वेद का इलाज सबके लिए सुरक्षित एवं कारगर सिद्ध होता है। मेरे द्वारा भी आज तक आयुर्वेद पद्धति से ही इलाज करवा कर अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं।

कार्यक्रम में एडीएम एस.एस.मुजाल्दा, संभागीय आयुष अधिकारी डॉ. रमेश भायल, जिला आयुष अधिकारी डॉ. प्रमिला चौहान, पूर्व जिला आयुष अधिकारी डॉ. सी.एल.वर्मा, आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. मीना भायल , प्रभारी पीआरओ सुधीर कुशवाह, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधि , अधिकारी, कर्मचारी, गुड मॉर्निंग क्लब के सदस्य श्रीमती पार्वती किराड, संतोषी अलावा, पूजा बघेल, राखी शाह, नीलिमा चौहान और बड़ी संख्या में शहरी और ग्रामीण आमजन भी उपस्थित रहे।

किराना दुकान में अज्ञात कारणों से लगी आग,लाखों का सामान जलकर हुआ खाक

सुसनेर/दैनिक मालवा हेराल्ड। सुसनेर में वार्ड 12 के परसुलिया रोड़ स्थित गुरुवार की रात्रि 8 बजे के लगभग एक किराना दुकान में अज्ञात कारणों से आग लग गई। पड़ोस के लोगो ने दुकान के अंदर से आग की लपटें व धुंआ उठते देख शोर मचाया देखते ही देखते आग पूरी दुकान में फैल गई। इस दौरान मौके पर मौजूद लोगों ने आग पर काबू पाने का काफी प्रयास किया लेकिन जब आग बेकाबू हो गई तो घटना की जानकारी फायर बिग्रेड को दी गई। मौके पर पहुंची फायर बिग्रेड की मदद से कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। आग बुझाते समय एक युवक झुलस गया। दुकान संचालक सतीश पाटीदार का लाखों का नुकसान हुआ है।

26 मार्च को जिला कांग्रेस की बैठक आयोजित होगी

पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन कांग्रेस के वचन पत्र के संबंध में कांग्रेस जनों से होंगे रूबरू

झाबुआ/माणक लाल जैन/दैनिक मालव हेराल्ड। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री प्रदेश कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष कमलनाथ ने इसी वर्ष 2023 मैं होने वाले विधानसभा चुनाव में कॉन्ग्रेस पार्टी की सरकार बनाने के उद्देश्य से हर जिले में कांग्रेस जनों से विचार विमर्श कर उनकी भावनाओं विचारों से अवगत होने का निर्णय लिया है। कांग्रेस के संभागीय प्रवक्ता साबिर फिटवेल ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि कांग्रेस आगामी विधानसभा चुनाव में हर जिले के विकासशील मुद्दों को अपने वचन पत्र में शामिल करेगी कांग्रेस का प्रदेश वासियों के लिए घोषणा पत्र (वचन पत्र)की रूपरेखा तय करने हेतु प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री विधायक बाला बच्चन जिला कांग्रेस प्रभारी पूर्व विधायक हमीद काजी का झाबुआ आगमन 26 मार्च को दोपहर 12 बजे होगा। स्थानीय मनोकामना गार्डन एम टू होटल हॉल में जिला कांग्रेस का सम्मेलन आयोजित होगा जहां अतिथि गण समस्त कांग्रेस जनों से वचन पत्र के संबंधी चर्चा हेतु रूबरू होंगे।

इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश राका विधायक विरसिह भूरिया वालसिंह मेडा प्रदेश युवा कांग्रेस अध्यक्ष डॉ विक्रांत भूरिया जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती सोनल भाबर मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी महासचिव निर्मल मेहता पूर्व विधायक जेवियर मेडा जिला कांग्रेस संगठन मंत्री जसवंत भाभर एवं वरिष्ठ कांग्रेस जन विशेष रुप से उपस्थित रहेंगे

इस गरिमा मय कार्यक्रम में जिले के समस्त जिला कांग्रेस पदाधिकारी समस्त ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष गण उप ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष गण शहर कांग्रेस अध्यक्ष गण युवा कांग्रेस अध्यक्ष गण भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन अध्यक्ष महिला कांग्रेस अध्यक्ष सेवादल अध्यक्ष बूथ कमेटी के अध्यक्ष सेक्टर प्रभारी मंडल अध्यक्ष जिला पंचायत प्रतिनिधि जनपद पंचायत प्रतिनिधि सरपंच पंच पार्षद गण पूर्व पार्षद गण मोर्चा संगठन के अल्पसंख्यक विभाग अनुसूचित जाति जनजाति विभाग समाज कल्याण प्रकोष्ठ शिक्षा प्रकोष्ठ बूथ प्रबंधन प्रकोष्ठ पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ आईटी सेल व समस्त कांग्रेस पदाधिकारी कार्यकर्ता गणों को जिला कांग्रेस कमेटी ने आयोजित कार्यक्रम में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर अपने क्षेत्र के प्रमुख मुद्दों को लेकर अपनी राय प्रकट करने व मध्यप्रदेश में कांग्रेस पार्टी की सरकार बनाने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह करने का आह्वान किया है।

मिलावट से मुक्ति अभियान अंतर्गत खाद्य विभाग की जांच कार्यवाही

आगर-मालवा/दैनिक मालवा हेराल्ड। आयुक्त कार्यालय से प्राप्त निर्देश पर चिलिंग प्लांट का खाद्य सुरक्षा अधिकारी केएल कुम्भकार द्वारा रूटीन निरीक्षण कर इंडस्ट्रियल एरिया आगर के पवन श्री इंटरनेशनल प्रायवेट लिमिटेड मिल्क चिलिंग सेंटर से मिश्रित दूध एवं श्रीधी घी के सैंपल जांच लिए लिए। उक्त दोनों नमूने जांच हेतु राज्य खाद्य लैब भेजे गए। जांच रिपोर्ट एवं विवेचना निष्कर्ष के आधार पर कार्यवाही प्रस्तावित की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान चिलिंग प्लांट परिसर में डेयरी के समान एवं पशु आहार खाली आदि का भी संग्रहण पाया गया । जो दूध विक्रेता किसान को कंपनी की और से सप्लाई किए जाते है। जिसे परिसर में प्रथक से उल्लेखित कर रखने एवम साफ सफाई एवं सेनिटेशन बनाए रखने हेतु निर्देशित किया। प्लांट में दूध संग्रहण के दौरान यदि किसी कारण से किसी डेयरी या व्यक्ति का दूध रिजेक्ट वापिस किया जाता है तो मात्रा, वापसी का कारण, प्रदाय कर्ता व्यक्ति का नाम पते का रजिस्टर संधारित कर विभाग को उपलब्ध कराने के निर्देश दिये।

निरीक्षण के समय 22 मार्च शाम का 4000 लीटर एवं 23 मार्च सुबह का 2500 लीटर दूध संग्रहित पाया गया। जिसमे में समरस कर मिश्रित दूध का नमूना लिया गया। संचालक द्वारा उक्त दूध कंपनी के ही मक्सी प्लांट में सप्लाई करना बताया गया।

इस दौरान संचालक को खाद्य लाइसेंस एवम फूड सेफ्टी डिस्प्ले बोर्ड परिसर में लगाने हेतु निर्देशित किया। दूध संग्रहण एवं परिवहन के लिए प्लास्टिक के स्थान पर आसानी से साफ होने वाली स्टील की टंकी, टैंकर का उपयोग करने, दूध को छानकर ही संग्रहित करने एवं साफ सफाई एवं स्वच्छता रखने हेतु निर्देशित करे।दूध प्रदाय कर्ता एवम दूध वाहन के फूड लाइसेंस के दस्तावेज की जानकारी एवं कामियो की प्रतिपूर्ति /सुधार हेतु नोटिस दिया गया है। प्राकृतिक दूध की फैट एवं एस एन एफ में छेड़छाड़ करना, मिलावट करना, खाद्य सुरक्षा एवम मानक अधिनियम का उल्लंघन एवम कानूनन अपराध है के बारे में अवगत कराया।

पुलिस की नाक के निचे कान फाड़ू बुलेट की आवाज निकालते मनचले

बुलेट से ठांय-ठांय, लोग हो रहे परेशान >> कड़ी ठोस कार्यवाही के इंतजार में नगरवासी

बदनावर/मनीष शर्मा/दैनिक मालवा हेराल्ड। बाइक चलाना युवाओं का शौक रहा है, लेकिन वर्तमान में युवाओं में बुलेट का क्रेज बना है, इन बुलेट को भी युवाओं ने मोडिफाइड कराया है। विशेष तौर पर सायलेंसर को मोडिफाइड कराया जा रहा है। सायलेंसर से ठांय-ठांय की आवाज निकालने के लिए एक बटन लगाया जाता है। जब भी बटन को दबाया जाता है तभी सायलेंसर से तेज ठांय की आवाज निकली है, जो रात के अंधेरे में किसी अवैध हथियार से गोली चलाना जैसा लगता है। दिन में भी ये युवा तेज रफ्तार से बुलेट चलाते मिल जायेंगे इनकी बुलेट जब पास से निकलती है तब ह्रदय रोगी या कमजोर कान वालो के लिए ये आवाज मौत में तबदिल हो सकती है। इस तरह की गाड़ी का उपयोग करने वाले युवावर्ग के रिश्ते आपराधिक गतिविधियों से जोड़े देखे जा सकते है। नगरवासियों को अब पुलिस का इंतजार है कब इन मनचलो पर काबू पाकर वातावरण में शोर कम करवाएगी।

दो तस्करों से 10 किलो 780 ग्राम डोडा चुरा बरामद

कालापीपल पुलिस ने डोडा चूरा के तस्करों को किया गिरफ्तार

कालापीपल/ किशोर नाथ राजगुरु/ दैनिक मालव हेराल्ड। पुलिस टीम को राजस्थान के दो तस्करो से अवैध मादक पदार्थ बरामद करने मे मिली सफलता। पुलिस ने डोडा चुरा तस्करी करने वाले दो आरोपियों से 10 किलो 780 ग्राम अफीम डोडा चुरा कीमती करीबन 60000 रूपये(साठ हजार रूपये) का बरामद किया।पुलिस अधीक्षक शाजापुर जगदीश डावर द्वारा लगातार क्षैत्र में सक्रिय अवैध मादक पदार्थ के धंधे करने वाले अपराधियों पर कड़ी कार्रवाही के निर्देश दिये जा रहे थे, इसी तारतम्य मे अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक टी.एस.बघेल,एसडीओपी शुजालपुर दयाराम माले के निर्देशन में थाना क्षेत्र मे अवैध मादक पदार्थ के धंधे करने वाले अपराधियो पर अंकुश लगाने हेतु लगातार कार्रवाई की जा रही है। कालापीपल थाना प्रभारी रवि भण्डारी के नेत्त्व में टीम का गठन किया गया।थाना कालापीपल पुलिस को दिनांक 22.03.2023 को मुखबीर द्वारा सुचना प्राप्त हुई की दो व्यक्ति पंचमुखी चौराहे पर एक बैग में अफीम डोडा चुरा लिये खडा है।सूचना पर त्वरित कार्यवाही कर कालापीपल पुलिस द्वारा पंचमुखी चौराहे पर पहुच कर देखा। दो व्यक्ति संदिग्ध अवस्था मे खड़े हुऐ दिखे जो पुलिस को देखकर हड़वड़ा कर भागने लगे। जिसे फोर्स व पंचान की मदद से पकड़ा।जिसके नाम पता पुछते एक ने अपना नाम किसनलाल पिता देवीलाल तंवर राजपूत निवासी ग्राम खोली तहसील बकानी थाना रडलई जिला झालावाड राजस्थान व दूसरे ने अपना नाम कमलेश पिता रामनारायण तवंर राजपूत निवासी ग्राम गिरधरपुरा तहसील बकानी थाना रटलई जिला झालावाड राजस्थान के होना बताया जिससे प्राप्त मुखबीर सूचना के संबध मे पुछताछ की गयी व आधिपत्य वाले बैग की तलाशी ली गयी जिसमे अवैध रूप से मादक पदार्थ अफीम का डोडा चुरा होना पाया गया।उक्त डोडा चुरा का वजन 10 किलो 780 ग्राम निकला जो कीमती करीबन 60000 हजार रूपये के जप्त किये गये।उक्त सराहनीय कार्य मे थाना प्रभारी थाना कालापीपल रवि भण्डारी,उप निरीक्षक तेजप्रकाश बोहरे,प्र.आर शिवराज पटेल,प्र. आर विवेक गोस्वामी,प्रआर विनोद पटेल आरक्षक वेदप्रकाश परमार,आरक्षक नयन यादव,आरक्षक करण वर्मा,आरक्षक प्रंशात भदौरिया, आरक्षक संजय जावरिया,आरक्षक सुमित पटेल की मुख्य भूमिका रही।

हिंदू युवा उत्सव समिति के तत्वधान में विराट कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ

देर रात तक श्रोताओं ने लिया कवि सम्मेलन का आनन्द

सोयतकला/ विष्णु जाटव/ दैनिक मालवा हेराल्ड। बुधवार की रात्रि सोयत नगर में हिंदू युवा उत्सव समिति के द्वारा हिंदू नव वर्ष गुड़ी पड़वा के अवसर पर अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन का आयोज़न सम्पन्न हुआ। जिसमें कवीयो ने देर रात तक अपनी रचनाओं से लोगों का मन मोह लिया। कवि सम्मेलन की शुरुआत उपस्थित कवियो द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर नेना नसीब की वंदना से शुरुआत हुई। रात्रि 9 बजे से शुरू हुए कवि सम्मेलन मध्य रात्रि 2 बजे तक चला। सम्मेलन में सुधीर कलवार हास्य कवि कोटा ,जितेंद्र भारती जीत हास्य कवि कन्नौद, गिरधर अद्भुत ओजस्वी कवि बूंदी ,पुरुषोत्तम शर्मा वीर रस कवि ,रूपनारायण संजय सब रस कवि, राहुल भिलाला ओजस्वी कवि, मीनू शर्मा श्रंगार गीत गजल ,साबिया असर गजल ,मुन्ना बैट्री हास्य सम्राट मंदसौर, मंच पर संचालन कर रहे कमल मनोहर जयपुर ने भी अपने काव्य पाठ ,हास्य,वीर और प्रेम रस ने श्रौताओ को मन मोह लिया हास्य रसों पर ठहाकों के परिपूर्ण देर रात तक बांधे रखा। क्षृगार रस की कवित्री नैना नसीब कोटा ने सबरस और मुक्तकों से श्रौताओं को मंत्र मुक्त कर दिया। कवि सम्मेलन में आसपास क्षेत्रों से काफी संख्या में महिला पुरुष तथा बच्चे शामिल हुए।

सार समाचार

प्राकृतिक खेती एवं मोटा अनाज (मिलेट) पर एक दिवसीय कार्यशाला संपन्न

आगर मालवा/दैनिक मालवा हेराल्ड। परिहार एग्रो हर्बल एंड एग्रीबिजनेस फार्म विनायका में आज गुरुवार को एक दिवसीय प्राकृतिक खेती एवं मोटा अनाज मिलेट पर करीब 100 किसानों ने प्रशिक्षण लिया कार्यक्रम की अध्यक्षता मोहन सिंह परिहार सरपंच ग्राम पंचायत रा पड़ी द्वारा की गई कार्यक्रम में वक्ता गण जिला उप संचालक कृषि श्री वर्मा कृषि विज्ञान केंद्र आगर के डॉक्टर शक्तावत एसएडीओ बड़ोद राजेंद्र सिंह भूरे कृषि विकास अधिकारी गोपाल गोयल जी शालीडायरी डेट की जिला संचालक चेतना मैडम अधिवक्ताओं ने किसानों को प्राकृतिक खेती एवं मोटा अनाज पर विस्तार से प्रशिक्षण दिया एवं एसएडीओ बड़ौद राजेंद्र सिंह भूरे ने विभागीय योजनाओं की जानकारी किसानों को दी। राष्ट्रीय जैविक प्रगतिशील किसान राधेश्याम परिहार ने किसानों को फूड प्रोसेसिंग एवं मिलेट में आने वाली सभी प्रकार की फसलों के बीज किसानों को इस वर्ष उपलब्ध कराने की बात कही एवं सभी मिलेट के बीज फार्म पर डेमो के रूप में किसानों को दिखाए गए एवं मिलेट में पाए जाने वाले पोषक तत्वों की जानकारी एवं उनके द्वारा तैयार फूड प्रोडक्ट के बारे में बताया गया कार्यक्रम का आभार कुलदीप पांचाल के द्वारा व्यक्त किया गया।

राजेंद्र सिंह राजपूत बने क्षत्रिय राजस्थान राजपूत महासभा जिला अध्यक्ष

सलसलाई/किशोर नाथ राजगुरु/ दैनिक मालवा हेराल्ड। सलसलाई नगर के सामाजिक युवा साथी राजन सिंह राजू बने श्री छतरी राजस्थान राजपूत महासभा के जिला अध्यक्ष संगठन के संस्थापक ठाकुर इमरत सिंह जी डोडिया सीहोर , निर्णायक समिति प्रमुख ठा राय सिंह जी केलवा ठि झागरिया, कु चंदर सिंह जी तंवर ठि आष्ठ , ठा अजब सिंह जी पंवार ठि अख्तयारपुर एंव मध्यप्रदेश प्रदेश अध्यक्ष कु राहुल सिंह जी हाडा ठि खजुरी सडक , उपाध्यक्ष कु बलराम सिंह जी तंवर ठि भीलखेडी सह सचिव ठा अमृत सिंह जी डोडियाकी सहमति एवं अनुशंसा कु राजेंद्र सिंह जी परमार (राजु बना) को शाजापुर जिला अध्यक्ष के दायित्व पर नियुक्त किया जाता हैश्री क्षत्रिय राजस्थान राजपूत महासभा मध्यप्रदेश आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती है आपको हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई । नयी दिशा ओर नयी उंचाई पर महासभा को ले जाये,ऐसा विश्वास महासभा आप पर रखती है जहां उनकी नियुक्ति पर उनके समाज जनों और मित्रों द्वारा उन्हें बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

पलक पांवड़े बिछाकर स्वागत किया अपने चहते पंडित मिश्रा का प्राचीन श्री बैजनाथ महादेव मंदिर में दर्शन बाद काफिला आगे बड़ा

बदनावर/मनीष शर्मा/दैनिक मालवा हेराल्ड। गुरुवार को सुबह से ही भक्तो ने अपने चहते पंडित प्रदीप मिश्रा के दर्शन के लिए श्री बैजनाथ महादेव मंदिर पर जुटना शुरू हो गए थे। प्रसिद्धि पाने के बाद पहली बार पर बदनावर नगर में पधारे पंडित मिश्रा का आगमन हूवा। जहां सैकड़ों की तादात में भक्तगण ने पंडित मिश्रा की अगवानी में मंदिर रास्ते पर फूलों की रंगोली बनाई । पंडित मिश्रा के आते ही पुष्पो की बौछार कर भव्य स्वागत किया। बाबा बैजनाथ के दर्शन कर पंडित मिश्रा गदगद हो गए। मंदिर प्रांगण में मंदिर के वरिष्ठ पुजारी महादेव पूरी ने शाल, सफा पहनाकर स्वागत किया। नगर के गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

परमात्मा ने हमें तीन रत्न प्रदान किए हैं जिसमें संमयक दर्शन सम्यक ज्ञान और संमयक चारित्र

बदनावर/दैनिक मालवा हेराल्ड। एक लंबे अंतराल के बाद हमें यह दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है हमें यह चिंतन करना चाहिए कि यह जन्म हमें क्यों प्राप्त हुआ है इस जन्म को हम कैसे सफल कर सके हम एक लक्ष्य बनाएं कि हमें क्या करना है और कैसे जो यह शरीर प्राप्त हुआ है इससे शाश्वत सुख को किस तरह प्राप्त करें शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिए अरिहंत परमात्मा ने हमें तीन रत्न प्रदान किए हैं जिसमें संमयक दर्शन सम्यक ज्ञान और संमयक चारित्र। उक्त प्रवचन आचार्य श्री नवरत्न सागर जी महाराज साहब के शिष्य मुनि श्री आदर्श रत्न सागर जी महाराज साहब ने धर्म सभा में कहे । आपने विस्तृत विवेचना करते हुए कहां की संमयक दर्शन प्राप्त करने के लिए हम अपने भीतर श्रद्धा पैदा करें कि परमात्मा ने जो मार्ग बताया है सही मार्ग है हर प्राणी मात्र से मैत्री बनाएं हमारे द्वारा किसी को दुख प्राप्त ना हो तब स्वाभाविक रूप से हमें प्राणी मात्र से प्रेम बन जाएगा, हर प्राणी के गुणों को हम आत्मसात करेंऔर उनके दोषो को अनदेखा करें ।इसी तरह संमयक ज्ञान होता है अर्थात वह ज्ञान जो हमारी आत्मा के लिए हितकारी है भौतिक सुख प्रदान करने वाला ज्ञान नहीं,वह ज्ञान जो हमारी आत्मा को परमात्मा बनाने में सहायता करें वह ज्ञान हम प्राप्त करें,इसके बाद सम्यक दर्शन अर्थात जिस ज्ञान पर हमारी श्रद्धा है जो ज्ञान हमने प्राप्त किया है उसको हम आचरण में लाएं क्योंकि मात्र ज्ञान प्राप्त करने से कुछ नहीं होता है जब तक हम प्राप्त ज्ञान को अपने जीवन में नहीं उतारेंगे तब तक कुछ नहीं होगा। हम भौतिक सुख के लिए भटक रहे हैं जो हमें शाश्वत सुख प्रदान नहीं करता यह सुख तो क्षणिक है सुख प्राप्त करने के लिए हम अपने भीतर जाए और जो भीतर गया वह तर गया इस उक्ति को हम ध्यान में रखें एवं धर्म के मार्ग पर आगे बढ़े । इसके पूर्व मुनि मंडल कोद से विहार कर badnawar पहुंचे जहां अरिहंत कॉलोनी में आपके प्रवचन हुए muni shree इनकार रत्न सागर जी महाराज साहब एवं मुनि श्री मलय रत्न सागर जी महाराज साहब ने अभी धर्म सभा को संबोधित किया संजय विनायक्या एवं श्रेया रूणवाल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया मुनि मंडल ने शाम को बड़नगर की ओर विहार किया।

सरकार कैंसर से मरीजों को बचाने के लिए क्या काम कर रही-सांसद गुप्ता

मंदसौर/दैनिक मालवा हेराल्ड। सांसद सुधीर गुप्ता ने कैंसर बिमारी को लेकर लोकसभा में प्रश्न किया। सांसद गुप्ता ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री से प्रश्न करते हुए कहा कि विगत तीन वर्षों में प्रत्येक वर्ष और वर्तमान वर्ष के दौरान देश में कैंसर बीमारी के कारण जान गंवाने वाले लोगों की कुल संख्या का ब्यौरा क्या है।

क्या सरकार की इस बात की जानकारी है कि कैंसर के कारण होने वाली अधिकांश मौत निम्न या मध्यम वर्ग की अर्थव्यवस्थाओं देशों से रिपोर्ट की जाती हैं।

प्रश्न के जवाब में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री डॉ. भारती प्रविण पवार ने बताया कि कैंसर के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए की गई पहलों में राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस और विश्व कैंसर दिवस मनाना और प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया का उपयोग शामिल है। एनपीसीडीसीएम राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत विश्व कसर दिवस के अवसर पर राज्योंध्संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा उनकी कार्यक्रम कार्यान्वयन योजनाओं (पीआईपी) के अनुसार कैंसर के लिए जागरूकता सृजन (आईसी) कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। वहीं उन्होने बताया कि भारतीय आयुविजन अनुसंधान परिषद राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम के अनुसार वर्ष 2020 में 7.70.230, 2021 में 7,89,202 एवं 2022 में 8,08,558 कैंसर के मामलों के कारण होने वाली मृत्यु हुई है। तीन सबसे आम प्रकार के कैंसर मुंह का कैंसर, स्तन कैंसर और सर्वाइकल कैंसर एनपीसीडीसीएस का एक अभिन्न अंग है। एनपीसीडीसीएस के अंतर्गत 708 जिला एनसीडी क्लीनिक, 301 जिला दिवस परिचर्या केंद्र और 5671 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एनसीडी क्लीनिक स्थापित किए गए हैं।

प्रजापति समाज द्वारा होली मिलन समारोह एवं मात्र शक्ति एवं वरिष्ट जनों का सम्मान किया गया

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। लश्करी प्रजापति समाज द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी समाज की महिलाओ द्वारा फूलपाती चल समारोह नीलगंगा धर्मशाला से निकाला गया, चल समारोह मे बड़ी संख्या मे समाज की महिला पुरुष और वरिष्ठ जन उपस्थित रहे।

चल समारोह के पश्चात् श्री यादें माता के चित्र पर मालार्यपण कर दीप प्रज्वलित कर समाज की धर्मशाला पर मात्र शक्ति श्रीमति कंचन बाई, श्रीमति मिश्री बाई, श्री मति निर्मला बाई, श्री मति रुक्मणि बाई, श्री मति बसंती बाई प्रजापति ,वरिष्ठसमाज सेवी श्री नेमीचंद जी, श्री बाबूलाल जी पानवाले, श्री मोतीलाल जी तनोड़िया, श्री शांतिलाल जी मारुति वाले, श्री ताराचंद जी प्रजापति का आकर्षक मूमेंटो, सॉल श्रीफल एवं पुष्पमाला से सम्मान किया गया।

सोशल मीडिया पर दोस्ती कर शादी का झांसा देकर किया अपहरण, तीन साल की सजा

मन्दसौर/दैनिक मालवा हेराल्ड। सोशल मीडिया पर दोस्ती कर नौकरी दिलाने और शादी करने का झांसा देकर किशोरी का अपहरण करने वाले युवक को कोर्ट ने 3 साल की सजा और पांच हजार का जुर्माना सुनाया है। अभियोजन मीडिया सेल प्रभारी दीपक जमरा ने बताया कि 29 सितंबर 2020 को सीतामऊ थाना क्षेत्र की किशोरी को अज्ञात व्यक्ति बहला-फुसलाकर ले जाने की शिकायत दर्ज हुई थी मामले में पुलिस ने 1 अक्टूबर को पीड़िता को हरियाणा से बरामद किया था। मामले में पीड़िता ने पुलिस को बताया था कि उसकी दोस्ती सोशल मीडिया के जरिए हरियाणा के रेवाड़ी जिले के धावल गांव के ललित पिता उमेद से हुई थी। सोशल मीडिया पर दोनो की दोस्ती हुई थी। आरोपी युवक ने पीड़िता को शादी करने और नौकरी दिलाने का झांसा देकर हरियाणा बुलाया था। किशोरी बिना बताए घर से हरियाणा चली गई थी। स्वजनों की शिकायत पर सीतामऊ पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज किया था। 1अक्टुबर 2020 को किशोरी को आरोपी युवक के कब्जे से बरामद कर लिया था। मामले में जांच के बाद चार्ज शीट कोर्ट में पेश कई गई। इस पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने आरोपी युवक को दोषी पाते हुए तीन साल की जैल और पांच हजार का जुर्माना लगाया है। प्रकरण में अभियोजन संचालन दीप्ती कनासे ने किया।

पशुपतिनाथ मेले की जमीन पहले दे दी किराए पर आपत्ति हुई तो ठेकेदार को सामान हटाने को कहा

मन्दसौर/दैनिक मालवा हेराल्ड। पशुपतिनाथ मंदिर समिति ने मेले के लिए आरक्षित जमीन एक ठेकेदार को किराये पर दे दी। इस पर कुछ लोगो ने आपत्ति की। मामला बढ़ता देख अब समिति ने ठेकेदार को जमीन से सामान हटाने को कहा है। जानकारी अनुसार मंदिर प्रबंधन ने दो साल के लिए लीज पर शिवना सीवर लाइन प्रोजेक्ट का ठेका लेने वाली कंपनी आरएमसी प्लांट के लिए पांच लाख रुपये सालाना किराये पर देने का तय कर दिया।

कंपनी ने अपना सामान भी रखना शुरू कर दिया था। इसको मंजूरी देने की फाइल जब कलेक्टर दिलीप कुमार यादव के पास पहुंची तो उन्होंने अभी इसकी अनुमति नहीं देते हुए और भी जगह देखने को कहा हैं। मंदिर समिति सचिव एसडीएम को भी इसकी कोई सूचना नहीं दी गई। फाइल की मंजूरी होने से पहले ही मौके पर ठेकेदार केजी गुप्ता इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी इंदौर ने खुदाई कर 20 फीट से भी ज्यादा लंबी दीवार बना दी और उनकी मशीनरी पहुंच गई। अब मंदिर समिति प्रबंधक भी यू टर्न लेते हुए कह रहे हैं कि कलेक्टर ने प्लांट के लिए भूमि को देने को अभी हां नहीं की है और अब मशीनरी उठाई जा रही है, उधर ठेकेदार कंपनी के मैनेजर का कहना है कि कंपनी के कार्यकर्ताओं द्वारा कहा गया था। इसलिए यहां प्लांट का कार्य शुरू किया है।

अगले वर्ष से मेडिकल के साथ इंजीनियर की पढ़ाई भी हिंदी में होगी-विधायक सिसौदिया

मंदसौर/दैनिक मालवा हेराल्ड। प्रदेश के साथ-साथ जिले में यूथ महापंचायत का जिला स्तरीय कार्यक्रम कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान मंदसौर विधायक यशपाल सिंह सिसौदिया ने कहा कि मध्यप्रदेश में मेडिकल की पढ़ाई हिंदी मीडियम से प्रारंभ होगी। लेकिन अब अगले वर्ष से इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिंदी में होगी। यह मध्यप्रदेश के लिए सबसे बड़ी सौगात है। पूरे देश में हिंदी में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाला देश का पहला राज्य होगा।

हमारे प्रदेश के युवा रोजगार देने वाले बन रहे हैं। वे लगातार शासन की योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। हमारे देश एवं प्रदेश के युवाओं ने ''देश हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखे'' इस बात को चरितार्थ किया है। हम सभी को बड़े ही संघर्षों के बाद परिपक्व प्रजातंत्र मिला है। सभी जनसेवक एवं लोक सेवक कर्तव्यों से बंधे हैं। आज का दिन बड़ा ही महत्वपूर्ण दिन है।

जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के राष्ट्रीय अतिरिक्त महासचिव बने झांझरी

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के 27वें राष्ट्रीय अधिवेशन के कांफ्रेंस चेयरमेन, उज्जैनिय मेन के पूर्व अध्यक्ष प्रदीप झांझरी को अंतराष्ट्रीय स्तर पर दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन का राष्ट्रीय अतिरिक्त महासचिव बनाया गया। उज्जैन रीजन अध्यक्ष स्नेहलता सोगानी ओर सचिव पंकज जैन ने बताया कि 26 मार्च को इंदौर के रविन्द्र नाट्य गृह में मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश विनायका, मनोनीत महासचिव विपुल बाँझल के साथ समस्त पदाधिकारियो की शपथ विधि समारोह के रूप में होगी। जिसमें देशभर से फेडरेशन के पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। अंतराष्ट्रीय स्तर पर दिग जैन सोशल ग्रुप की कुल 350 से अधिक सोशल ग्रुप पूरे भारत वर्ष में मानव सेवा, पशु सेवा और समाज उत्थान के कार्य मे सलग्न है जिनकी वर्ष भर समाजिक धार्मिक गतिविधियां चलती रहती है। इस अवसर पर राष्ट्रीय संरक्षक पुष्पा कासलीवाल, अध्यक्ष कमलेश कासलीवाल, दिनेश दोशी, दिलीप मेहता, देवेन्द्र कांसल, दिलीप सोगानी, जम्बू धवल, प्रदीप पंड्या, प्रतीक चौधरी आदि ने बधाई दी।

सहकारिता से श्रमिकों का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान संभव- सिसौदिया

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। सहकारिता के माध्यम से ही श्रमिकों का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान संभव है। यह उद्गार श्रमिक समिति द्वारा आयोजित नेतृत्व विकास कार्यक्रम के दौरान योगेंद्र सिंह सिसोदिया अध्यक्ष मध्य प्रदेश राज्य श्रमिक सहकारी संघ भोपाल ने व्यक्त किए। अवंतिका श्रमिक एवं निर्माण सहकारी संस्था मर्यादित उज्जैन द्वारा जिला सहकारी संघ के सहयोग से ग्राम हरसोदन में श्रमिक कामगार मजदूरों के लिए नेतृत्व विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विशिष्ट अतिथि रतन सिंह उपलाना, पूर्व बैंक संचालक, विशेष अतिथि देवी लाल धाकड़, पूर्व संचालक सेवा सहकारी संस्था विषय विशेषज्ञ चंद्रशेखर बैरागी, परियोजना अधिकारी भारतीय राष्ट्रीय संघ एवं अनवर पटेल प्रबंधक प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति मर्यादित हरसोधन। नेतृत्व विकास कार्यक्रम का आरंभ भारत माता की तस्वीर पर पुष्प माला अर्पित कर किया गया। तत्पश्चात अवंतिका श्रमिक सहकारी समिति के अध्यक्ष संजय मीणा ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन पुरुषोत्तम शर्मा संचालक समिति ने किया। योगेंद्र सिसोदिया ने श्रमिकों की कल्याण एवं उनसे जुड़ी समस्त योजनाओं की जानकारी दी। श्री बैरागी ने नेतृत्व के गुण विशेषता एवं नेतृत्व क्षमता किस प्रकार विकसित होती है साथ ही सामूहिक कार्य के माध्यम सेही सफलता प्राप्त कर सकते हैं श्रमिक उत्थान के लिए शासन के प्रयासों को भी बतलाया। अनवर पटेल ने ग्रामीण श्रमिक कामगार किस प्रकार रोजगार उपलब्ध हो सकता है एवं सेवा सहकारी समिति के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है। उकलानाजी ने ग्रामीण क्षेत्र में खासकर कृषि के लिए मजदूर कृषि विभाग द्वारा प्रशिक्षित कर उन्हें शासन की योजना का लाभ जलाकर रोजगार दिलाया जा सकता है पर प्रकाश डाला।

शराब के नशे में मारी थी तीन लोगों को बाइक से टक्कर, प्रकरण दर्ज

मंदसौर/पिपलियामंडी/दैनिक मालवा हेराल्ड। शराब के नशे में बाइक से टक्कर मारकर तीन लोगों को घायल करने वाले के खिलाफ पुलिस ने विवेचना के बाद गुरुवार को प्रकरण दर्ज किया। जानकारी के अनुसार गत् 28 फरवरी को कोटडीमाता व बाजखेड़ी के बीच बाइक (एमपी 14 एनसी 6212) के चालक शंकरीयाखेड़ी (शामगढ़) निवासी भेरुलाल पिता पृथ्वीराज बंजारा ने तेज व लापरवाहीपूर्वक बाइक चलाकर विशनिया निवासी अब्बास पिता रुस्तम मन्सूरी, अर्जुन पिता रमेश व अशोक पिता तुलसीराम सूर्यवंशी को टक्कर मार दी थी, जिन्हें अस्पताल भर्ती कराया था। मेडीकल रिपोर्ट आने के बाद नाहरगढ़ पुलिस ने बाइक चालक के खिलाफ धारा 279, 337 में मामला दर्ज किया।

गांधीजी की प्रतिमा के सामने कांग्रेसियों ने बजाए झांझ मंजीरे

कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर दर्ज हुए झूठे प्रकरणों के खिलाफ कांग्रेस ने किया प्रदर्शन

गाया रघुपति राघव राजा राम, भाजपा नेताओं को सद्बुध्दि दे भगवान

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर लगातार दर्ज किये जा रहे झूठे प्रकरणों के विरोध में शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रवि भदोरिया के नेतृत्व में शहर कांग्रेस कमेटी के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने क्षीरसागर स्थित गांधी प्रतिमा के सामने भाजपा नेताओं को सद्बुध्दि देने के लिए गांधीजी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर झांझ मंजीरे बजाते हुए रघुपति राघव राजा राम भजन गाया।

शहर कांग्रेस के अध्यक्ष रवि भदोरिया ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने बरसों शासन किया लेकिन कभी बदले की भावना से कार्य नहीं किया। जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है लगातार विपक्षी पार्टियों पर बदले की भावना से कार्य कर रही है। जिस प्रकार से ईडी एवं सीबीआई का दुरुपयोग भारतीय जनता पार्टी कर रही है कांग्रेस ने कभी नहीं किया। राहुल गांधीजी कांग्रेस पार्टी एवं देश के युवाओं के नेता हैं। उन्हें डराने की कोशिश ना की जाए वरना कांग्रेस सड़कों पर आकर आंदोलन करेगी। इस दौरान प्रमुख रूप से पूर्व सांसद सत्यनारायण पंवार, डॉ. बटुकशंकर जोशी, अनंतनारायण मीणा, चेतन यादव, विवेक यादव, अजीत सिंह ठाकुर, भरत पोरवाल, माया त्रिवेदी, मुकेश भाटी, कैलाश सोनी, अजय राठौर, सुनील जैन, पुरुषोत्तम कहार, वरुण शर्मा, अंजू जाटवा, शोभा श्रीवास्तव, अरुण वर्मा, ओम भारद्वाज, अभिषेक लाला, पार्षद छोटेलाल मंडलोई, परमानंद मालवीय, इमरान खान, जाहिद पहलवान, मुजीब सुपारी, सोनिया ठाकुर, दीपेश जैन, कमल कौशल, सुनील कछवाय, ओमप्रकाश रामी, मोंटू चंदेल, यशवंत चौहान सहित सैकड़ों कांग्रेसजन उपस्थित थे।

आयुष मंत्री को सौंपा ज्ञापन

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड।आयुष महाविद्यालयों में पदस्थ विभिन्न चिकित्सा शिक्षकों की पदोन्नति लंबे अंतराल से लंबित है। फरवरी-2015 के पश्चात विभाग में कोई भी पदोन्नति नहीं हो सकी है। इस कारण विभिन्न चिकित्सा शिक्षक बिना पदोन्नति के ही सेवानिवृत्ति के निकट है एवं पदोन्नति के अभाव में निचले पदों के रिक्त न होने से विभाग में कोई भी भर्तियां नहीं हो पा रही है, जिसके कारण विभिन्न महाविद्यालयों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मान्यता का संकट बना हुआ है। इसके अलावा अधिकांश लगभग 80 प्रतिशत चिकित्सा शिक्षक समयमान वेतनमान की अवधि को लंबे समय से पूर्ण कर चुके हैं, फिर भी उन्हें समयमान वेतनमान आज तक प्राप्त नहीं हो रहा है।

निकला झांकियों का कारवां, हुई भगवान झूलेलाल की महाआरती

भगवान झूलेलाल के प्रतिमा स्थल पर भव्य आकर्षक लाइटिंग कर पूना से आए विशेष फूलों से की साज सज्जा

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। चेटीचंड महापर्व पर समाजसेवी महेश सितलानी के नेतृत्व में समाज के आराध्य देव भगवान श्री झुलेलाल का जन्म उत्सव हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया। गुरूवार शाम को सिंधी कॉलोनी स्थित भगवान झूलेलाल की प्रतिमा पर महाआरती के साथ झांकियों का कारवां निकला साथ ही हजारों की संख्या में समाजजन झूमते नाचते हुए शामिल हुए।

अतिथि के रूप में मौजूद महापौर मुकेश टटवाल, कांग्रेस अध्यक्ष रवि भदौरिया, समाज के वरिष्ठ रूप पमनानी, दीपक बेलानी, विधायक प्रतिनिधि सुरेन्द्र यादव, पार्षद सुरेन्द्र मेहर, संतोष यादव, कैलाश प्रजापत, पूर्व महापौर मीना जोनवाल, अरूण रोचवानी, रिंकू बेलानी, धर्मेन्द्र लालवानी सहित समाज के वरिष्ठों ने भगवान झूलेलाल की महाआरती की। कार्यक्रम संयोजक सौरभ बेलानी, हिमांशु चांदवानी, गौरव चांदवानी के अनुसार सिंधी कॉलोनी मे भगवान झूलेलाल के प्रतिमा स्थल पर भव्य आकर्षक लाइटिंग एवं पूना से विशेष तरह के फूलों की साज सज्जा के साथ भगवान झूलेलाल की प्रतिमा का आकर्षक श्रंगार कर ढोल नगाड़ों के साथ महाआरती की गई। महाआरती के पश्चात चल समारोह भव्य पारिवारिक शोभा यात्रा प्रारंभ हुई जो सिंधी कॉलोनी झूलेलाल प्रतिमा स्थल से आरंभ होकर तीन बत्ती चौराहा, टावर चौक, देवास रोड एवं महाकाल सिंधी कॉलोनी होते हुए पुनः प्रतिमा स्थल पर पहुंची। शोभायात्रा में बड़ी संख्या में मातृशक्ति एवं समाजजन बेन्ड एवं डीजे पर भगवान झूलेलाल के भजनों पर मंत्रमुग्ध होकर नाचते गाते हुए समाज की अखंडता एवं एकता का परिचय देते हुए चले। शोभायात्रा मे समाजजन भगवा ध्वज पताकायें लहराते हुए भगवान झूलेलाल की झाकियो, विंटेज कारें, डीजे, घोड़े बग्गी एवं ढोलक, ई - रिक्षा व अपने अपने वाहनो पर संवार होकर निकले।

नवसंवत नववर्ष (गुड़ी पड़वा) पर रूद्रसागर में फहराई 81 फीट उंची धर्मध्वजा, संतो का किया सम्मान

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। विक्रम संवत् 2080 चैत्र प्रतिपदा नववर्ष गुड़ी पड़वा पर धर्म ध्वजारोहण एवं संत सम्मान समारोह श्री विक्रमादित्य टिला, सिंहासन बत्तीसी पर आयोजित किया गया। विशाल ध्वज चल समारोह गोपाल मंदिर से ध्वज पूजन कर प्रारंभ किया गया जिसमे सैकडो महिलाएं ध्वज एवं शंख ध्वनि के साथ नव वर्ष का आगाज करते हुए हजारों भक्त सम्मिलित हुए। संपूर्ण चल समारोह मार्ग पर नागरिकों द्वारा ध्वज एवं संतो का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। चल समारोह अखाड़ा पार्टी, ढोल, बैंड बाजो के साथ पटनी बाजार, चोबीस खंबा होकर रूद्रसागर पंहुचा जहां संत महात्मा, गुरु मां व 51 वैद पाठी ब्राह्मणों एवं मातृत्व शक्ति द्वारा शंख ध्वनि के साथ सबसे ऊंची 81 फीट विशाल धर्मध्वजा फहराई गई। डॉ कल्याणी चैतन्य ब्रह्मचारी अम्माजी द्वारा देशवासियों को नव वर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित कर नवयुवकों को नया वर्ष गुड़ी पड़वा से हर्षोल्लास के साथ मनाने का आव्हान किया। अतिथि के रूप में पंडित गिरीश गुरु शर्मा मौजूद रहे। आयोजक फूलचंद जरिया ने बताया कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी अखिल भारतीय धर्म सम्राट स्वामी श्री परपात्री कल्याण आश्रम खेड़ी घाट, बड़वाह एवं विक्रमादित्य नवसंवत् धर्म ध्वजा रोहण समिति, उज्जैन के तत्वावधान में 8वां विक्रम संवत् नववर्ष 2080 गुड़ी पड़वा को आयोजित किया गया।

डम्पर ने मारी पिकअप को टक्कर, प्रकरण दर्ज

मंदसौर/पिपलियामंडी/दैनिक मालवा हेराल्ड। पिकअप को टक्कर मारने वाले डम्पर चालक के खिलाफपुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। पिकअप (एमपी 14 जीसी 1325) के चालक सगोरर (सीतामउ) निवासी जगदीश पिता कालूसिंह डांगी ने गुरुवार को मल्हारगढ़ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि पिकअप में संतरे भरकर मण्डावरी से जयपुर जा रहा था, इसी दौरान बरखेड़ापंथ में नाकोड़ा ढ़ाबे के सामने डम्पर (आरजे 09 जीए 8210) के चालक ने तेज व लापरवाहीपूर्वक चलाकर पिकअप को टक्कार मार दी। जिससे पिकअप क्षतिग्रस्त हो गई। पुलिस ने डंपर चालक के खिलाफप्रकरण दर्ज किया।

जेवायसीसी के फाईनल मुकाबले में एसएस वारियर रही विजेता

15 दिनों से चल रहे रात्रिकालीन क्रिकेट टूर्नामेंट का हुआ समापन

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड।पिछले 15 दिनों से चल रहे जेवायसीसी के रात्रिकालीन टूर्नामेंट में हुए फाईनल मुकाबले में एसएस वारियर की टीम विजेता रही। उज्जैन चैंपियन और एसएस वारियर के बीच फाइनल मैच खेला गया जिसमें फाईनल ट्राफी पर एसएस वारियर ने कब्जा जमाया। जेवायसीसी के कमेटी सदस्य धीरेंद्र जैन ने बताया फाइनल मैच के मुख्य अथिति सांसद अनिल फिरोजिया और उत्तर विधायक पारस जैन थे। साथ ही क्षेत्रीय पार्षद सुशील श्रीवास और पार्षद रजत मेहता की भी विशेष उपस्थिति रही। जेवायसीसी के संरक्षक विनोद बरबोटा, दिनेश जैन सुपर फार्मा, अमित कावड़िया ने अथितियों के साथ सभी फ्रेंचाईज का सम्मान किया और पुरस्कार के स्वरूप मैन ऑफ द सीरीज प्रतीक जैन (बस), मैन टूर्नामेंट बैट्समैन आयुष मारू, मैन बॉलर टूर्नामेंट डॉ. सिद्धार्थ नायक को दिया गया।

उज्जैन विकास प्राधिकरण उज्जैन
(जाहिर सूचना)

प्राधिकरण की **क्षिप्रा योजना** के अंतर्गत आवासीय उपयोग के भूखण्ड/**क्रमांक डी-8/30 श्रेणी एलआईजी** को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन के संबंध में।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उक्त सम्पत्ति उज्जैन विकास प्राधिकरण के रिकार्ड में **श्री रूपसिंह डावर पिता स्व. दीतुसिंह डावर एवं श्रीमती संगीता डावर पति श्री रूपसिंह डावर निवासी - एफ.ए. पोलिटेक्निक कॉलेज केम्पस उज्जैन (म.प्र.)** के नाम पर दर्ज है तथा प्राधिकरण कार्यालय में आवेदक ने दिनांक 11.02.2023 को आवेदन के साथ शपथ पत्र मय फोटो इत्यादि प्रस्तुत कर उक्त सम्पत्ति को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार (फ्रीहोल्ड) में संपरिवर्तन करने हेतु निवेदन किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर प्राधिकारी अभिलेखों में लीज की उक्त सम्पत्ति को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार (फ्रीहोल्ड) किये जाने में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो इस विज्ञप्ति प्रकाशन होने की दिनांक से पन्द्रह दिन (15 दिवस) की अवधि में अपनी लिखित आपत्ति कार्यालय उज्जैन विकास प्राधिकरण, उज्जैन भरतपुरी प्रशासनिक प्रक्षेत्र, उज्जैन में प्रस्तुत करें, अन्यथा मियाद समाप्ति के पश्चात् उक्त सम्पत्ति को औपचारिकतायें पूर्ण होने पर अर्थात समस्त दस्तावेज तथा बकाया राशियाँ जमा होने पर आवेदन तथा दस्तावेज के आधार पर उक्त सम्पत्ति भू-स्वामी अधिकार (फ्रीहोल्ड) कर दी जावेगी जिसमें किसी की कोई आपत्ति / उज्र मान्य नहीं होगी।

सहायक सम्पदा अधिकारी
उज्जैन विकास प्राधिकरण उज्जैन

नाबालिग पीड़िता के साथ खोटा काम करने वाले अभियुक्त को सुसनेर न्यायालय ने आजीवन कारावास व 35 हजार रुपये के जुर्मानें से किया दण्डित

सुसनेर-दैनिक मालवा हेराल्ड। नाबालिग पीड़िता के साथ खोटा काम करने वाले अभियुक्त को सुसनेर अपर सत्र न्यायालय पंकज कुमार वर्मा सुसनेर ने आजीवन कारावास व 35 हजार रुपये के जुर्मानें से दण्डित किया।

आपको बता दे कि मीडिया प्रभारी एवं एडीपीओ पवन सौलंकी, सुसनेर ने 23 मार्च गुरुवार को प्रेस नोट जारी कर बताया कि फरियादीया(पीडिता) ने थाना सुसनेर में अपने परिजन के साथ आकर रिपोर्ट किया कि दिनांक 31/3/22 की सुबह करीबन 10:30 बजें की बात है मेरी नवासी कपडों की दुकान में उर्दू का सिफारा पढ रही थी मैनें पीडिता से कहा कि तुम यही दुकान पर बैठना मैं बर्तन साफ करके आती हूँ और मैं घर के अंदर बर्तन साफ करने चली गई इसके बाद करीब 20 मिनट बाद पीडिता रोती हुई मेरे पास आयी मैनें देखा कि पीडिता ने उपर टॉप पहने था नीचे कोई भी कपडा नही था और उसके पेशाब की जगह अत्यधिक खून निकल रहा था तो मैनें उससे पूछा कि तुझे कैसे लगी है तो पीडिता बोली कि एक लडका आया था उसने काले रंग की टीशर्ट पहन रखी थी उसने मेरा पैजामा निकाल दिया और वह अपने पैंट की चैन खोल कर मेरे उपर लेट गया और बोला कि चिल्लाना नही चिल्लायी तो जान से मार दुंगा मुझे पेशाब की जगह खून निकला और दर्द हो रहा था उसके बाद वो मेरे उपर से उठकर भाग गया तो मैनें तत्काल बाहर जाकर देखा तो एक लडका काले रंग की टीशर्ट व नीले रंग की जींस पहने था मुझे देखकर वह बस स्टेण्ड तरफ भागा मैनें उसे सामने से देखा है सामने आने पर मैं उसे पहचान लूंगी फिर मैनें घटना की जानकारी जमाई व बेटी को बताई व उनको साथ लेकर थाना रिपोर्ट को आयी उक्त प्रकरण में अनुसंधान पूर्ण कर धारा 376,376(3),376(एबी),450,454,506,307 भादवि एवं लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम की धारा 3/4, 5(एम)/6 ,9(एम)/10 में अभियोग पत्र माननीय न्यायालय में पेश किया।

उक्त प्रकरण को राज्य शासन द्वारा जघन्य एवं सनसनीखेज प्रकरण की सूची में शामिल किया गया था। प्रकरण में विवेचना निरी. विजय सागरिया, उनि. सुनीता परिहार के द्वारा की गई। न्यायालय ने एडीपीओं पवन सौलंकी के तर्कों से सहमत होते हुए अभियुक्त को निम्नानुसार दण्ड से दण्डित किया।

क्र.	धारा	दण्ड
1.	5(आई)/6 पोक्सों एक्ट	आजीवन कारावास व 15000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 06 माह का सश्रम कारावास
2.	5(एम)/6 पोक्सों एक्टआजीवन कारावास व 15000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 06 माह का सश्रम कारावास	
3.	307 भादवि	10 साल का सश्रम कारावास ,3000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 02 माह का सश्रम कारावास
4.	450 भादवि	05 साल का सश्रम कारावास ,2000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 01 माह का सश्रम कारावास

उक्त सभी सजायें एक साथ भुगतायी जायें।

प्रकरण में महत्वपूर्ण सहयोग कोर्ट मोर्हरिर आरक्षक 230 आशीष सोनी एवं थाना मुंशी सुसनेर आरक्षक 231रामेश्वर यादव , सहायक ग्रेड 03 कृष्णकांत अग्रवाल के द्वारा किया गया।

सम्पादकीय

सत्ता पक्ष और विपक्ष छोड़ें अपनी जिद तभी बनेगी बात

यह संभवत: पहली बार है, जब सत्तापक्ष के हंगामे के कारण भी संसद नहीं चल पा रही है।यदि पक्ष-विपक्ष के हंगामे के चलते संसद का यह सत्र बिना किसी कामकाज के खत्म हो जाता है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण ही होगा। संसद की कार्यवाही में प्रति मिनट लाखों रुपये खर्च होते हैं लेकिन बात केवल धन की बर्बादी की ही नहीं।

सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच टकराव जिस तरह बढ़ता चला जा रहा है, उससे संसद के बजट सत्र के दूसरे चरण के बिना किसी विशेष कामकाज के खत्म होने की आशंका बढ़ गई है। यद्यपि दोनों पक्षों के बीच सहयोग-समन्वय कायम करने के प्रयत्न किए गए हैं, लेकिन स्थिति जस की तस है। जहां सत्तापक्ष को राहुल गांधी की माफी से कम कुछ मंजूर नहीं है, वहीं विपक्ष अदाणी मामले में संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी का गठन किए जाने की अपनी मांग पर अड़ा हुआ है। सत्तापक्ष राहुल गांधी के लंदन में दिए गए बयान पर क्षमा याचना के बाद ही संसद चलने की संभावना जता रहा है तो विपक्ष कह रहा है कि अदाणी मामले में बीच के किसी रास्ते की गुंजाइश ही नहीं है।दोनों ही पक्ष अपनीङ्कअपनी मांग को लेकर इतना आगे बढ़ गए हैं कि अब उनके पीछे लौटने की कोई सूरत नहीं दिखाई देती। अब संसद तभी चल सकती है, जब दोनों पक्ष या तो एक-दूसरे की मांग मानें या फिर अपनी-अपनी मांग छोड़ें। चूंकि ऐसा होता नहीं दिखता, इसलिए संसद चलने के आसार नहीं। अब तो ऐसा लगता है कि दोनों पक्षों की इसमें दिलचस्पी ही नहीं रह गई है कि संसद चले और वित्त विधेयक पर बहस होने के साथ प्रस्तावित विधेयकों को पारित करने की प्रक्रिया आगे बढ़े।

यदि पक्ष-विपक्ष के हंगामे के चलते संसद का यह सत्र बिना किसी कामकाज के खत्म हो जाता है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण ही होगा। संसद की कार्यवाही में प्रति मिनट लाखों रुपये खर्च होते हैं, लेकिन बात केवल धन की बर्बादी की ही नहीं, आवश्यक विधेयक अटके रहने से राष्ट्र को होने वाली क्षति की भी है। वैसे तो इस क्षति की चिंता दोनों पक्षों को करनी चाहिए, लेकिन सबसे अधिक सत्तापक्ष को करनी चाहिए, क्योंकि संसद चलाने का दायित्व उसका ही होता है।

यह संभवत: पहली बार है, जब सत्तापक्ष के हंगामे के कारण भी संसद नहीं चल पा रही है। सत्तापक्ष को इसकी चिंता करनी ही चाहिए कि देश की जनता को यह संदेश जा रहा है कि उसकी रुचि संसद चलाने में नहीं। सबसे पहली प्राथमिकता राष्ट्रीय हितों को देने के उसके संकल्प की पूर्ति तभी होगी, जब वह संसद चलाने को लेकर प्रतिबद्ध दिखेगा।

जैसे सत्तापक्ष को राहुल गांधी की माफी को नाक का सवाल नहीं बनाना चाहिए, वैसे ही विपक्ष को भी अदाणी मामले की जांच जेपीसी से कराने की जिद नहीं पकड़नी चाहिए, क्योंकि इस मामले की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट ने एक छह सदस्यीय समिति गठित कर दी है। यह समिति उन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजने में समर्थ है, जो विपक्ष उठा रहा है। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि संयुक्त संसदीय समितियां किसी ठोस निष्कर्ष पर पहुंचने के बजाय दलगत राजनीति का अखाड़ा भर बनकर रह जाती हैं।

मणिपुर (नाभि) चक्र - श्री लक्ष्मी नारायण की शक्ति व धर्म की स्थापना का केंद्र -श्री माताजी

(तृतीय नवरात्रि मां चंद्रघंटा व मणिपुर चक्र की आराधना का दिवस)

सनातन संस्कृति में शक्ति की आराधना को विशेष महत्व दिया गया है। परन्तु शक्ति की आराधना के लिए सर्वप्रथम शक्ति का ज्ञान होना आवश्यक है। सबसे बड़ा सनातन ज्ञान यह है कि मानव सहित संपूर्ण ब्रह्मांड ब्रह्म शक्ति से निर्मित है और अंत में उसी में विलीन हो जाना है। यही ब्रह्म शक्ति मनुष्य में कुंडलिनी शक्ति के रूप में स्थित होती है जिसे अनेक सूक्ष्म चक्रों द्वारा सुरक्षित किया जाता है। और बिना इन चक्रों का मेकेनिज़्म जाने हम इस चक्रव्यूह का भेदन किए हम शक्ति की जागृति नहीं कर सकते। नवरात्रि इन्हीं चक्रों की शक्तियों को जाग्रत व कार्यान्वित कर कुंडलिनी शक्ति के उत्थान का अवसर होता है। नवरात्रि के प्रत्येक दिन हम शक्ति के विशेष रूप की आराधना करते हैं और ये विशेष चक्र से संबंधित होती है।

मां दुर्गा की तीसरी शक्ति का नाम चंद्रघण्टा है। नवरात्रि उपासना में तीसरे दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन व आराधना की जाती है। इनके मस्तक में घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र है। इसी कारण इन देवी का नाम चंद्रघण्टा पड़ा। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। इनका वाहन सिंह है। इनका ध्यान मणिपुर चक्र पर किया जाता है जिससे सांसारिक कष्टों से मुक्ति मिलती है।

मणिपुर चक्र जिसे नाभि चक्र भी कहा जाता है, श्री लक्ष्मी-नारायण का स्थान होता है। यह हमें धर्म परायण बनाते हैं।

सहज योग संस्थापिका श्री माताजी निर्मला देवी जी ने इस चक्र की विशेषताओं की व्याख्या इस प्रकार की है कि,

लक्ष्मीजी के चरण कमल पर हैं और अपने दो हाथों में उन्होंने कमल पकड़े हुए हैं । कमल सौन्दर्य का प्रतीक हैं और उनका गुलाबी रंग प्रेम का प्रतीक । ये प्रतीक हैं कि जिस व्यक्ति के पास लक्ष्मी हो , धन हो , उसे कमल की तरह से उदार होना चाहिए । कमल छोटे से भँवरे को भी अपने अन्दर सोने का स्थान देता है । अपनी पंखुड़ियों से ढककर उसे सुख पहुँचाता है और उसकी रक्षा करता है

नाभि चक्र में तीन भाग होते हैं- बाएँ, दाएँ और केंद्र। बाईं ओर गृह लक्ष्मी (पत्नी) है, दाईं ओर श्री राज लक्ष्मी या गज लक्ष्मी है, और केंद्र में श्री लक्ष्मी हैं, जिनकी उत्क्रांती श्री महालक्ष्मी के रूप में होती है दिन-प्रतिदिन के जीवन में, जब हम श्री लक्ष्मी के गुणों से युक्त होते हैं, तो हम पाते हैं कि हमें जीवन में अनायास ही प्रकृति की सहायता प्राप्त होने लगती है। हमारे पास अपनी उदारता का आनंद लेने के लिए पर्याप्त समृद्धि होती है। नाभि चक्र का एक अन्य पहलू हमारे जीवन में धर्म या नैतिक आचरण का है। यहां श्री विष्णु हमारे धर्म व आध्यात्मिक विकास की रक्षा और पोषण करते हैं।

अपने मणिपुर चक्र पर महालक्ष्मी तत्व की जागृति हेतु कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर सहजयोग ध्यान धारणा एक अत्यंत ही सहज मार्ग है?। इस नवरात्रि स्वयं को सहजयोग का अतुलनीय अनुभव प्राप्त करने का अवसर आवश्य प्रदान करें।

कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने हेतु saha-jayoga.org.in और टोल फ्री नम्बर 18002700800 पर सम्पर्क करें।

नवरात्रि के चौथे दिन की जाती है मां कुष्मांडा की पूजा, जानें पूजन विधि, मंत्र और भोग

नवरात्रि के चौथे दिन मां कुष्मांडा की पूजा की जाती है. अपनी मंद, हल्की हंसी के द्वारा मां कुष्ठमांडा ने अपने उदर से ब्रह्मांड को उत्पन्न किया था.

नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ रूपों की अलग-अलग तरह से पूजा की जाती है.

नवरात्रि के चौथे दिन मां कुष्मांडा की पूजा की जाती है.

कुष्मांडा देवी को अष्टभुजा भी कहा जाता है. माता कुष्मांडा की आठ भुजाएं हैं.

नवरात्रि के चौथे दिन मां कुष्मांडा की पूजा की जाती है. अपनी मंद, हल्की हंसी के द्वारा मां कुष्ठमांडा ने अपने उदर से ब्रह्मांड को उत्पन्न किया था. माना जाता है जो भक्त मां के इस रूप की आराधना करते हैं, उनपर कभी किसी प्रकार का कष्ट नहीं आता. पौराणिक मान्यताओं के अनुसार मां कुष्मांडा की पूजा करने से आयु, यश, बल और स्वास्थ्य में वृद्धि होती है. कुष्मांडा देवी को अष्टभुजा भी कहा जाता है. इनकी आठ भुजाएं हैं. अष्टभुजा देवी अपने हाथों में धनुष, बाण, कमल-पुष्प, कमंडल, जप माला, चक्र, गदा और अमृत से भरपूर कलश रखती हैं. नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ रूपों की अलग-अलग तरह से पूजा की जाती है, और माता के हर रूप को अलग-अलग तरह के पकवानों का भोग लगाया जाता है. माता कूष्मांडा को हलवे का भोग लगाया जाता है.

नवरात्रि स्पेशल कद्दू का हलवा:

नवरात्रि के चौथे दिन मां कुष्मांडा की पूजा की जाती है. नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ रूपों की अलग-अलग तरह से पूजा की जाती है, और माता के हर रूप को अलग-अलग तरह के पकवानों का भोग लगाया जाता है. माता कू?मांडा को हलवे का भोग लगाया जाता है. आप माता को कद्दू के हलवे का भोग लगा सकते हैं. कद्दू के हलवे को नवरात्रि व्रत में भी खाया जा सकता है. इसको बनाना बहुत ही आसान है इस हलवे को बनाने के लिए कद्दू, घी, बादाम, चीनी, दालचीनी स्टिक, किशमिश और नारियल की जरूरत होती है. पूरी रेसिपी के लिए यहां क्लिक करें.

आप माता को कद्दू के हलवे का भोग लगा सकते हैं.

मां कूष्मांडा पूजा विधि:

नवरात्रि के चौथे दिन सुबह स्नान आदि से निवृत्त हो जाएं. इसके बाद मंदिर को अच्छे से साफ करें. फिर मां कूष्मांडा का स्मरण करके उनको धूप, गंध, अक्षत, लाल पुष्प, सफेद कुम्हड़ा, फल, सूखे मेवे और सौभाग्य का सामान अर्पित करें. अब मां कूष्मांडा को हलवा और दही का भोग लगाएं. फिर उसे प्रसाद स्वरूप ग्रहण कर सकते हैं. पूजा के अंत में मां कूष्मांडा की आरती करें.

मां कूष्माण्डा मंत्र:

या देवी सर्वभूतेषु मां कूष्मांडा रूपेण संस्थिता.
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:

मां दुर्गा को सबसे प्रिय हैं ये 4 सरल मंत्र, चारों दिशाओं से मिलेगी सफलता

नवरात्रि में मां दुर्गा की पूजा विशेष फलदायी है। नवरात्रि ही एक ऐसा पर्व है जिसमें माता दुर्गा, महाकाली, महालक्ष्मी और सरस्वती की साधना कर जीवन को सार्थक किया जा सकता है।

अगर आप जीवन में भय एवं बाधाओं से परेशान है, तो यह मंत्र आपके लिए ही हैं।

इन 4 मंत्र के उच्चारण से जीवन भय एवं बाधारहित होकर समस्त सुखों को प्राप्त? करता है।

मां दुर्गा के स्वरूपों का स्मरण करते हुए निम्न मंत्रों का जप नवरा?त्रि के अलावा प्रतिदिन किया जाए तो अधिक से अधिक सफलता प्राप्त होती है। अत- प्रत्येक मनुष्य को इन प्रभावी मंत्रों का जप अवश्य करना चाहिए।

आपके लिए प्रस्तुत है मां दुर्गा के प्रिय मंत्र

1.सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।

2. जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

3.या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।
या देवी सर्वभूतेषु शांतिरूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:।।

4.नवार्ण मंत्र ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै% का जाप अधिक से अधिक अवश्य करें।

24 मार्च 2023, शुक्रवार : इन 4 राशियों के लिए अच्छा रहेगा आज का दिन, पढ़ें अपना राशिफल

शुक्रवार का दैनिक राशिफल। आज किस राशि को मिलेगा मेहनत का पूरा फल। नवीन आभूषणों का किसे मिलेगा उपहार। मित्रों से मुलाकात होने से किसे मिलेगा मान-सम्मान। जानिए यहां नौकरी, करियर, शिक्षा, व्यापार, निवेश, स्वास्थ्य, प्रेम, करियर, धन आदि के बारे में भविष्यफल-

मेष राशि

आज का भविष्य = मेहनत का फल मिलेगा। सामाजिक कार्य करने में रुचि रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। कारोबार मनोनुकूल लाभ देगा। किसी प्रभावशाली व्यक्ति से परिचय बढ़ेगा। शारीरिक कष्ट संभव है। अज्ञात भय सताएगा। चिंता तथा तनाव रहेंगे। किसी मनोरंजक यात्रा की योजना बनेगी। बुरे लोगों से दूर रहें।

उपाय- आज श्रीसूक्त का पाठ करें।
शुभ अंक-4
शुभ रंग-लाल

वृषभ राशि

आज का भविष्य - दूर से सुखद सूचना मिल सकती है। घर में मेहमानों का आगमन होगा। व्यय होगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। बड़ा काम करने का मन बनेगा। परिवार का सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। बुद्धि का प्रयोग करें। लाभ बढ़ेगा। मित्रों के साथ अच्छा समय बीतेगा।

पं. सतीश नागर
श्री अन्नपूर्णा अनुष्ठान केन्द्र
मो. 9753585323

उपाय - आज विष्णुसहस्त्रनाम का जाप करें।
शुभ अंक-5
शुभ रंग-हरा

मिथुन राशि

आज का भविष्य - नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति पर व्यय होगा। यात्रा मनोरंजक रहेगी। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। घर-बाहर प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। नए मित्र बनेंगे। नया उपक्रम प्रारंभ करने की योजना बन सकती है। व्यवसाय लाभदायक रहेगा। शुभ समय।

उपाय-जातक आज घर से टूटी फूटी मूर्तियां निकाल दें।
शुभ अंक-2
शुभ रंग-लाल

कर्क राशि

आज का भविष्य - पारिवारिक चिंता बनी रहेगी। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। आवश्यक वस्तु गुम हो सकती है। विवाद को बढ़ावा न दें। किसी व्यक्ति के उकसाने में न आएं। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय भावना में बहकर न करें। बुद्धि का प्रयोग लाभ में वृद्धि करेगा। आय बनी रहेगी। थकान महसूस होगी।

उपाय-जातक आज श्रीयंत्र की पूजा करें।
शुभ अंक-8
शुभ रंग-हरा

सिंह राशि

आज का भविष्य - परिवार तथा मित्रों के साथ कोई मनोरंजक यात्रा का आयोजन हो सकता है। रुका हुआ पैसा मिलने का योग है। मित्रों के सहयोग से कार्य पूर्ण होंगे। नया कार्य प्रारंभ करने की योजना बनेगी। नौकरी में उच्चाधिकारी की प्रशंसा प्राप्त होगी। समय अनुकूल है। आलस्य त्यागकर प्रयास करें।

उपाय-आज जातक मां चंद्रघंटा की पूजा करें।
शुभ अंक-5
शुभ रंग-सफेद

कन्या राशि

आज का भविष्य - कार्यस्थल पर परिवर्तन संभव है। योजना फलीभूत होगी। कारोबार में वृद्धि पर विचार हो सकता है। नौकरी में अधिकारीगण प्रसन्न रहेंगे। मातहतों का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी। व्यापार में मनोनुकूल लाभ होगा। उत्साह व प्रसन्नता रहेगी। स्वास्थ?य उत्तम रहेगा। शुभ समय।

उपाय-जातकआज वैभव लक्ष्मी की पूजा करें
शुभ अंक-5
शुभ रंग-आसमानी

तुला राशि

आज का भविष्य - किसी धार्मिक स्थल की यात्रा की आयोजन हो सकती है। सत्संग का लाभ मिलेगा। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। घर-बाहर सुख-शांति रहेगी। किसी प्रभावशाली व्यक्ति का मार्गदर्शन सहायता प्राप्त होगी। धन प्राप्ति में बाधाएं दूर होंगी। ऐश्वर्य के साधनों पर बड़ा व्यय हो सकता है।

उपाय-जातक आज गरीबों को बर्तन का दान करें।

वृश्चिक राशि

आज का भविष्य - चोट व दुर्घटना से हानि संभव है। लापरवाही न करें। किसी व्यक्ति से व्यर्थ विवाद हो सकता है। मानसिक क्लेश होगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। चिंता तथा तनाव रहेंगे। आय में कमी हो सकती है। व्यापार ठीक चलेगा। लोगों से अधिक अपेक्षा न करें।

उपाय-जातक आज अपने से छोटों को उपहार दें।
शुभ अंक-6
शुभ रंग-लाल

धनु राशि

आज का भविष्य - जल्दबाजी से काम बिगड़ेंगे तथा समस्या बढ़ सकती है। विरोध होगा। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। बाहर जाने की योजना बनेगी। किसी वरिष्ठ व्यक्ति का सहयोग कार्य में आसानी देगा। घर-बाहर सुख-शांति बने रहेंगे। नौकरी में चैन रहेगा। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा।

उपाय-जातक आज लाल फूल से चंद्रघंटा देवी का पूजन करें।
शुभ अंक-7
शुभ रंग-हरा

मकर राशि

आज का भविष्य - भूमि, भवन, दुकान, शोरूम व फैक्टरी इत्यादि की खरीद-फरोख्त हो सकती है। बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। भाग्योन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। विवाद को बढ़ावा न दें। कुसंगति से बचें। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। धन प्राप्ति सुगम होगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी।

उपाय-जातक गणेश अथर्वस्त्रोत का पाठ करें।
शुभ अंक-4
शुभ रंग-गहरा लाल

कुंभ राशि

आज का भविष्य - कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। पार्टी व पिकनिक का कार्यक्रम बन सकता है। कोई मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद प्राप्त होगा। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में प्रसन्नता रहेगी। जल्दबाजी से हानि संभव है। शरीर कष्ट से बचें।

उपाय-आज जातक आज ब्राहमणों को भोजन करवायें।
शुभ अंक-5
शुभ रंग-सफेद

मीन राशि

आज का भविष्य - दूसरे से अधिक अपेक्षा करेंगे। जल्दबाजी से काम में बाधा उत्पन्न होगी। दौड़धूप अधिक रहेगी। बुरी सूचना मिल सकती है, धैर्य रखें। बनते कामों में देरी होगी। चिंता तथा तनाव रहेंगे। मित्रों के साथ समय अच्छा व्यतीत होगा। नौकरी में कार्यभार रहेगा। आय में निश्चितता रहेगी।

उपाय-आज शमी पौधा लगाएं और दान दें।
शुभ अंक-2
शुभ रंग-लाल

सदैव प्रसन्न रहिये।
जो प्राप्त है, पर्याप्त है।।

शहीदे आजम भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के बलिदान को अनंत काल तक याद करेगा कृतज्ञ राष्ट्र

अपनी जन्मभूमि और देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव प्रसाद को अनंत काल तक कृतज्ञ देश याद करता रहेगाद्य उनके बलिदान को देश का युवा वर्ग आज भी अनुकरणीय मानकर उन्हें अपना आदर्श मानता हैद्य महान शहीद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव प्रसाद को अंग्रेजी सल्तनत ने 23 मार्च1930 को फांसी की सजा देकर यह सोचा था कि उन्हें खत्म कर दिया गया है पर उन्हें शायद नहीं मालूम था कि भारत के करोड़ों युवा और जनमानस ने उन्हें अपने दिल में बसा कर स्वतंत्रता संग्राम के यज्ञ की वेदी पर दोगुने जोश से अपना बलिदान देने सामने आ गए थे। शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव प्रसाद जैसे अनेक युवा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के मन में देश के प्रति अगाध श्रद्धा ,भक्ति अंदर तक समाई हुई थी और देश के लिए अपने प्राण निछावर करने से वे पीछे भी नहीं हटे। ऐसे में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की फेहरिस्त में इन शहीदों का नाम पता है प्रथम पंक्ति में आता है।जिसने देश के युवाओं में जोश भर कर अपना सर्वस्व त्यागने की भावनाओं को बलवती बना दिया था। 27 सितंबर 1907 को पंजाब के जिला लायलपुर के गांव बंगा में शहीद भगत सिंह का जन्म हुआ था। शहीद भगत सिंह अपने युवा काल में ही देश के युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत बन चुके थे। भगत सिंह के पिता सरदार किशन सिंह, चाचा सरदार अजीत सिंह , स्वर्ण सिंह अंग्रेजो के खिलाफ लड़ाई के कारण जेल में बंद थे। उनकी दादी ने उनका नाम भगत सिंह रखा था। 1919 में अमृतसर के जलियांवाला बाग हत्याकांड में हजारों निर्दोष भारतीय मारे गए थे, इस नरसंहार की निंदा पूरे देश में की गई थी। इस नरसंहार का समाचार सुनकर भगत सिंह लाहौर से अमृतसर पहुंचे और अमृतसर की मिट्टी को एक बोतल में बंद कर अपने साथ रख लिया ताकि उन्हें याद रह कि देश के इस अपमान का बदला उन्हें अत्याचारी अंग्रेजी सेना से लेना है। 1920 में जब महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन की घोषणा की तब भगत सिंह ने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और देश के संता संग्राम में कूद गए। लाला लाजपत राय ने लाहौर में जब में कॉलेज की स्थापना की तो भगत सिंह उस में दाखिल हो गए, इसी कॉलेज में यह यशपाल, सुखदेव, तीर्थ राम ,झंडा सिंह जैसे क्रांतिकारियों से संपर्क में आए। उन्होंने अपनी आत्मकथा 'डोर टू डेथ'

' 'आइडियल ऑफ सोशलिज्म' 'स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार'तथा 'मैं नास्तिक क्यों हूं' नामक प्रसिद्ध कृतियों की रचना भी की थी।साइमन कमीशन के विरोध में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में एक बड़ा जुलूस निकाला गया,तब वहां के सहायक अधीक्षक सांडर्स ने भीड़ पर लाठीचार्ज करवा दिया और लाठीचार्ज में लाला लाजपत राय बहुत ज्यादा के घायल होने से 17 नवंबर 2 1928 में उनकी मृत्यु हो गई। भगत सिंह ने लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिए अपने साथियों राजगुरु, सुखदेव तथा चंद्र शेखर आजाद के साथ मिलकर सांडर्स को मारने की एक योजना बनाई और योजना के तहत सब ने मिलकर सांडर्स की हत्या कर दी। इस घटना ने शहीद भगत सिंह को पूरे देश में युवा क्रांति के नायक के रूप में मशहूर कर दिया।इस इस संपूर्ण गतिविधि में शहीद भगत सिंह के सहायक बने बटुकेश्वर दत्त को सेशन जज ने भारतीय दंड संहिता 307 तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धाराओं के अंतर्गत आजीवन कैद की सजा सुनाई। इसके बाद भी अंग्रेजी हुकूमत भगत सिंह को लगातार फसाने की कोशिश करती रही। अदालत की कार्रवाई लंबी चलती रही और 7 अक्टूबर 1930 को दिए गए निर्णय में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को फांसी की सजा सुनिश्चित की गई। इस तरह की खबर सुनते ही ही पूरे देश में क्रांति की अनोखी लहर पैदा हुए और इस क्रांति की लहर से अंग्रेज सरकार डर गई। शहीद भगत सिंह और राजगुरु तथा सुखदेव प्रसाद को फांसी की सजा 24 मार्च को नियत की गई थी पर अंग्रेजों ने डरकर इससे पहले ही 23 मार्च को सायंकाल 7-33 बजे उन्हें फांसी दे दी गई। फांसी देने के बाद अंधेरे में ही उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया और इस फांसी के बाद शहीद भगत सिंह राजगुरु सुखदेव अमर वीर स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में शहीद भगत सिंह राजगुरु और सुखदेव प्रसाद के रूप में कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा याद किए जाते रहे हैं। शहीदे आजम भगत सिंह राजगुरु और सुखदेव प्रसाद जैसे शहीद कभी मरते नहीं, वे सदैव अत्याचार के खिलाफ आवाज के रूप में देश के युवाओं के मन में अनंत काल तक जिंदा रहते हैं, एवं युवाओं को प्रेरणा देते रहेंगे। शहीद भगत सिंह द्वारा दिया गया नारा इंकलाब जिंदाबाद सदैव युवाओं के दिल में बसा रहेगा।

संजीव ठाकुर

यह कृतज्ञ राष्ट्र शहीदों को नमन, श्रद्धांजलि अर्पित करता है।
जय हिंद जय भारत।
संजीव ठाकुर, चिंतक, लेखक, संयोजक, रायपुर छत्तीसगढ़

गीतांजलि काव्य प्रसार मंच की राष्ट्रीय कार्यसमिति घोषित

नई दिल्ली/जीएनएस। 23 मार्च।नीरज अरोड़ा जी द्वारा स्थापित गीतांजलि काव्य प्रसार मंच के प्रथम स्थापना दिवस पर मंच की अध्यक्षा एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा गीत ने काव्य मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी निम्न प्रकार घोषित की है।

संरक्षक -डॉ. सूक्ष्म लता महाजन, व डॉ.ओमप्रकाश प्रजापति,उपाध्यक्ष - डॉ पुष्प लता पुष्प व राष्ट्रीय महासचिव की जिम्मेदारी डॉ.पुष्पा जोशी ,डॉ. नीरजा मेहता को दी गयी है। राष्ट्रीय सलाहकार-डॉ? नीरजा मेहता कमलिनी, नेहा शर्मा नेह , को बनाया है।राष्ट्रीय प्रिंट मीडिया प्रमुख का दायित्व डॉ? शंभू पंवार ,राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रमुख -डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति ,एवं राष्ट्रीय संयोजक अनुपम गौतम, तथा कामना मिश्रा दीपा को बनाया गया है।

भारत राष्ट्र प्रेम संस्कृति का ख़जाना है

घर घर में जाकर भारतीय राष्ट्र प्रेम संस्कृति
दिल से अपनाने का मंत्र दिलाना है
यह कभी भी कम ना हो पाए संकल्प लेना है
भारत राष्ट्र प्रेम संस्कृति का ख़जाना है
आओ साथ मिलकर राष्ट्र प्रेम
का जनजागरण कराएं
हमारी परम्पाओं सभ्यताओं
कलाकृतियों में आस्था दर्शाए
बच्चों युवाओं में भारतीय राष्ट्र प्रेम
संस्कृति के प्रति प्रोत्साहन करवाएं
हमेशा याद दिलवाएं हम अपनी
विरासत की जड़ों को भूल न जाएं
डटकर लड़ना होगा हम पाश्चात्य संस्कृति से
ऐसा संकल्प करवाएं
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएं
पारंपरिक कला शैलियों को कायम रखने
हम ऐसा मिलकर रास्ता अपनाएं
बेहतर जिंदगी की तलाश में
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएं
हम देख रहे हैं कैसे शहरीकरण स्वदेशी
लोककला शैलियों को नुकसान पहुंचा रहे हैं
बड़े बुजुर्गों की बातों को छोड़
पाश्चात्य संस्कृति अपना रहे हैं

लेखक- किशन सनमुख़दास भावनानी

कलेक्टर श्री गुप्ता ने सायलो केंद्र एवं विभिन्न गेहूं उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण किया

देवास/दैनिक मालवा हेराल्ड। कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने गुरुवार को सायलो केंद्र तथा विभिन्न उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण किया। कलेक्टर श्री गुप्ता ने सिया देवास के अडानी लॉजेस्टिक सायलो केंद्र तथा जिले के विभिन्न वेयर हाउसों में बनाए गए गेहूं उपार्जन केंद्रों निरीक्षण किया। उन्होंने सुकल्या क्षिप्रा वेयर हाउस, दयाल वेयर हाउस कुमारिया उप केंद्र क्षिप्रा, मातृशक्ति वेयर हाउस राजोदा, वेद वेयर हाउस राजोदा, सांई वेयर हाउस एवं मीरा वेयर हाउस, जनक वेयर हाउस सिरोल्या, तेजपारा वेयर बिरगोद कलमा टोंकखुर्द, जयदेव वेयर हाउस कलमा, देवास वेयर हाउस जामगोद, बीआर लॉजेस्टिक वेयर हाउस खोनपीरपीपल्या नेवरी फाटा सहित अन्य गेहूं उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण किया तथा आवश्यक दिशा निर्देश अधिकारियों एवं संबंधितों को दिए। इस दौरान एडीएम श्री महेंद्र सिंह कवचे, सहायक कलेक्टर श्री टी.प्रतीक राव, देवास एसडीएम श्री प्रदीप सोनी, सोनकच्छ एसडीएम श्री संदीप शिवा, जिला आपूर्ति अधिकारी श्रीमती शालू वर्मा सहित अन्य संबंधित उपस्थित थे।

किसानों को परेशानी न आए इसका रखे ध्यान

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री गुप्ता ने गेहूं उपार्जन केंद्र पर किसानों को परेशानी न आए, इसका विशेष ध्यान रखें। उन्होंने निर्देश दिए कि जिन वेयर हाउस के आने-जाने के मार्ग ठीक नहीं हैं, उन्हें तुरंत समतल कराएं जिससे कि किसानों को परेशानी न आए। उन्होंने पर्याप्त मात्रा में बारदान का स्टॉक रखने, साइन बोर्ड, बोरे सिलाई के लिए अतिरिक्त मशीन, वजन मशीन अन्य तैयारियों के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि केंद्रों पर आने वाले प्रत्येक ट्रॉली पर रेडियम वाले नंबर (स्टीकर) लगाये जाएं। उन्होंने सभी को निर्देश दिए कि गेहूं उपार्जन के संबंध में जो भी शेष कार्य बचे हैं, उन्हें आज भी पूरा कर लें।

उपार्जन केंद्रों पर पानी, छाया की उचित व्यवस्था करें

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री गुप्ता ने गेहूं उपार्जन केंद्र पर किसानों के लिए पेयजल, छाया, शौचालय की व्यवस्था के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि उपार्जन केंद्रों पर जरूरत अनुसार हम्माल रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जैसे ही गेहूं की तुलाई हो इसके भंडारण की भी प्रक्रिया प्रारंभ कर दें, जिससे अन्य परेशानियां न आने पाए।

जिले में 25 मार्च से प्रारंभ होगा गेहूं उपार्जन का कार्य

निरीक्षण के दौरान बताया गया कि 25 मार्च से जिले में गेहूं, चना एवं सरसों का उपार्जन कार्य प्रारंभ हो रहा है। इसके लिए जिले में 136 उपार्जन केंद्र बनाए गए हैं तथा जिले में 2 लाख 50 हजार मीट्रिक टन गेहूं खरीदी का लक्ष्य रखा गया है। देवास के निकट ग्राम सिया में अडानी लॉजेस्टिक सायलो केंद्र है, जिसकी क्षमता 50 हजार मीट्रिक टन हैं। साथ ही यह भी बताया गया कि जिले के उपार्जन केंद्रों पर 500 से 1000 किसान आएंगे। जिनसे गेहूं खरीदा जाएगा। सायलो केंद्र पर दो स्व सहायता समूह की महिलाएं भी कार्य करेगी। जिले में 11 स्व सहायता समूह की टीमें उपार्जन केंद्रों पर कार्य करेगी।

पांच ब्लॉकों के 300 आनंदको ने आनंद अल्पविराम कार्यक्रम का लिया लाभ

खरगोन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मप्र आनंद विभाग के निर्देशानुसार जिले में कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा के मार्गदर्शन में पांच जनपद पंचायत स्तर पर गुरूवार को एक दिवसीय अल्पविराम कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रत्येक जनपद पंचायत स्तर पर महिला एवं बाल विकास विभाग, पंचायत विभाग, स्वास्थ्य विभाग तथा आनंद क्लब सदस्य, अशासकीय कुल 60-60 सहित कुल 300 आनंदको ने सहभागिता की। जिला नोडल अधिकारी ईतिशा जैन ने बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य व्यक्ति अपने दैनिक जीवन को तनाव मुक्त होकर खुशहाल रहेकर बेहतर कार्य कर सके। राज्य स्तर के मास्टर ट्रेनर व जिले के जिला समन्वयक केबी मंसारे ने बताया कि कार्यशाला के माध्यम से आनंद अल्पविराम गतिविधियों को गांव पंचायत स्तर तक पहुँचाने के लिए प्रत्येक ब्लॉक लेवल पर तीन तीन स्वयंसेवी वॉलिटियर तैयार किए जायेंगे जिन्हे प्रशिक्षण के लिए भोपाल भेजा जायेगा।

अभिभाषक संघ की ने फिर शुरू की हडताल 25 मार्च तक काम बंद रखेंगे अभिभाषक

25 चिंहित प्रकरणों के निराकरण योजना को लेकर विरोध

देवास/दैनिक मालवा हेराल्ड। 25-25 प्रकरणों में आ रही परेशानी को लेकर मप्र स्टेट बार के आव्हान पर देवास अभिभाषक संघ ने 23 से 25 मार्च तक न्यायालयीन कार्य से विरत रहने का फैसला लिया। संघ जिलाध्यक्ष रामप्रसाद सूर्यवंशी ने बताया कि मप्र राज्य अधिवक्ता संघ की मांगों का समर्थन करते हुए जिला अभिभाषक संघ ने तीन दिवसीय हड़ताल की शुरू कर दी है। तीन दिन के कार्यों से विरत रहने के बाद एक बैठक आयोजित होगी, जिसमें आगामी निर्णय की जानकारी दी जाएगी। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा जिला न्यायालयों में 25 चिन्हित प्रकरणों के समयबद्ध निराकरण की योजना लागू की थी। जिसका हर स्तर पर अधिवक्ता संघों एवं मध्यप्रदेश राज्य अधिवक्ता परिषद द्वारा विरोध दर्ज कराया है। साथ ही अधिवक्ताओं सहित पक्षकारों को लेकर आ रही कठिनाईयों के बारे में बताने के साथ ही योजना को वापस लेकर पुराने सिस्टम को लागू करने का अनुरोध किया गया था, किंतु इस और कोई सकारात्मक कार्यवाही नहीं की गई। पूर्व में भी अभिभाषक संघ करीब 17 दिनों तक अपनी मांगों को लेकर न्यायालय से विरत रह चुका है। यह लड़ाई मध्यप्रदेश के जिले व तहसील में कार्य कर रहे अभिभाषकों की है। देवास बार इस परेशानी के हल होने तक लड़ाई लड़ती रहेगी। हड़ताल के दौरान उपाध्यक्ष चंद्रशेखर वाजपेयी, कोषाध्यक्ष राजेश जायसवाल, पुस्तकालय सचिव लोकेन्द्र शुक्ला, सहसचिव निलेश वर्मा सहित सैकड़ों अधिवक्ता उपस्थित थे। उक्त जानकारी संघ सचिव चंद्रपाल सिंह सोलंकी ने दी।

गुरुकुल में पुरुस्कार वितरण व दीक्षांत समारोह सम्पन्न

भौंरासा/दैनिक मालवा हेराल्ड। स्थानीय भँवरनाथ गुरुकुल में वार्षिक खेलकूद व सांस्कृतिक समारोह 2023 के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेना में हवलदार शुभम ठाकुर एवं विशिष्ठ अतिथि डॉ. पंकज शर्मा रहे। शुभम ठाकुर ने 9वी 10वी के बच्चों से संवाद करते हुए अगली कक्षा में जाते ही NCC से जुड़ने और अग्निवीर में कैसे प्रवेश पाएं इसकी जानकारी दी। विद्यालय के प्रधानाध्यापक मनीष कुमावत ने प्रतिवेदन में बताया कि 2005 में गुरुकुल की यात्रा एक किराए के मकान में 70 बच्चो से प्रारंभ हुई थी, अपने शैशवकाल में ही गुरुकुल नगर के श्रेष्ठ विद्यालय के मुकाम पर पहुंच गया था और आज भी अपने स्थान पर टिका हुआ है। आज गुरुकुल का अपना स्वयं का 5000 वर्ग फ़ीट का विशाल भवन है और एक एकड़ का मैदान है। वार्षिक खेल कूद में तकरीबन 30 प्रकार की शारीरिक बौद्धिक प्रतियोगिताओं का विभिन्न आयु वर्ग में आयोजन किया गया। जिसमें 380 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। जिसके अंतर्गत 163 विद्यार्थियों को पुरुस्कार प्राप्त हुए। इसके अलावा विद्यालय के कक्षा

10वी, 8वी, 5वी में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभावान छात्रों सहित सर्वाधिक उपस्थिति वाले छात्रों को भी सम्मानित किया गया। विद्यालय के पूर्व शिक्षक तुलसिसम बामनिया जी का चयन वर्ग 1 उच्च श्रेणी शिक्षक के पद पर होने पर प्रशस्ति पत्र शॉल श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। आगे उन्होंने बताया कि विद्यालय की पूर्व छात्रा स्वर्गीय कुमारी ज्योति विक्रम सिंह कुमावत के परिवार की ओर विद्यालय को एक स्मार्ट टीवी भेंट की गई। अतिथियों का स्वागत समिति के अध्यक्ष व सोनकच्छ मंडल के महामंत्री श्री संजय यादव , और उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल कुमावत ने किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षिका अनिता पांचाल ने किया। आभार समिति सचिव राजेन्द्र यादव आचार्य ने माना। इस अवसर पर समिति सदस्य सीमा कुमावत, रश्मि यादव, अनुराधा यादव, कविता कुमावत की उपस्तिथि में कक्षा 10 के छात्रों को कक्षा नवी के छात्रों द्वरा एक फ़ाइल फोल्डर पेन व मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। कक्षा 10 वी के छात्रों ने विद्याल में बिताए अपने सुखद अनुभवों को साझा किया और विद्यालय को अपनी स्मृति स्वरूप एक शोकेस उपहार में दिया। उक्त कार्यक्रम की पलकों और छात्रों ने प्रशंशा की।

कक्षा 12वीं के तीन विषयों की परीक्षा तारीखों में किया परिवर्तन

खरगोन/दैनिक मालवा हेराल्ड। माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया है कि हायर सेकेण्डरी कक्षा 12वीं के परीक्षा कार्यक्रम व संचालन की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए अपरिहार्य कारणों से 24 मार्च को आयोजित होने वाली तीन विषयों की परीक्षा तारीखों में परिवर्तन किया है। ये सभी पेपर 24 मार्च शुक्रवार को होने थे। अब ये क्रमशः 25 मार्च, 3 अप्रैल और 5 अप्रैल को होंगे। परिवर्तन पश्चात अब कक्षा 12वीं के ड्राइंग एण्ड डिजाइनिंग विषय का पेपर 25 मार्च को आयोजित होगा। वहीं समाज शास्त्र विषय का पेपर 3 अप्रैल और मनोविज्ञान विषय का पेपर 5 अप्रैल का होगा। हायर सेकेण्डरी परीक्षा के शेष प्रश्न पत्र पूर्व में निर्धारित परीक्षा कार्यक्रम अनुसार ही होंगे। विद्यार्थी संशोधित परीक्षा कार्यक्रम मण्डल की वेबसाइट www.mpbse.nic.in पर भी देखे जा सकते हैं। शेष समस्त परीक्षाएं पूर्व में जारी परीक्षा कार्यक्रम अनुसार निर्धारित समय पर ही आयोजित होगी।

श्रीरामजुलुस मार्ग का अधिकारियों ने किया अवलोकन

खरगोन/दैनिक मालवा हेराल्ड। रामनवमी के अवसर पर शहर में निकलने वाले श्रीराम जुलूस की तमाम व्यवस्थाओं को लेकर गुरुवार को एएसपी श्री मनीष खत्री और एसडीएम श्री ओएन सिंह ने मार्ग का भ्रमण कर व्यवस्थाएं सुनिश्चित की।

संगीतमय, भावात्मक प्रसंग के साथ कैलादेवी में होगी श्रीमद भागवत महापुराण एवं श्री नर्मदा पुराण कथा

देवास/दैनिक मालवा हेराल्ड। माँ कैला मैया के प्रति अपार श्रद्धा और आस्था रखने वाले मन्नुलाल गर्ग और उनके परिवार में देवास में सिद्धपीठ स्थापित किया है। अध्यात्म को आत्मसात कर संतों के सानिध्य को प्राप्त किया है यही कारण है कि पारिवारिक शोक से विचलित न होकर आई हुई विडम्बना को भी माँ की इच्छा समझकर उसे स्वीकार किया और नवरात्रि में माँ की साधना की परम्परा को निरंतर जारी रखा है। माँ कैला मैया के प्रति निष्ठा और आस्था ही शोक को परे कर विश्वास को प्रबल करती है। यह विचार चैत्रीय नवरात्रि के अवसर पर कैलादेवी मंदिर उत्सव समिति द्वारा आयोजित नवरात्रि महोत्सव के तत्वावधान में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भागवताचार्य बृजरत्न वंदना श्री ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा। पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए आपने कहा कि अध्यात्म ही एक ऐसी शक्ति है जो विश्व में शांति कायम कर सकती है। हमारा सनातन ही हमारी शक्ति है।

कथा संयोजक रायसिंह सेंधव ने प्रेसवार्ता में कहा कि वर्ष 22 गर्ग परिवार के लिए बड़ा ही दुख एवं शोकमय रहा है। अपार धार्मिक भावना रखने वाली हमारे मन्नुलाल गर्ग की धर्मपत्नी, श्रवण कुमार जैसे पुत्र दीपक गर्ग की माताजी सुशीला देवी गर्ग का देवलोक गमन होना। साथ ही कैलादेवी मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष परिवार के बड़े दामाद बृजमोहन अग्रवाल का आकस्मिक निधन होना, गर्ग परिवार के साथ हम सबके लिए शोक का विषय रहा है। उसके बावजूद भी गर्ग परिवार द्वारा मंदिर की धार्मिक अनुष्ठान परम्परा को यथावत रखना उनकी आस्था और निष्ठा का प्रतीक है। 23 मार्च से 29 मार्च तक गोकुल गार्डन में प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से 6 बजे तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बृज रत्न वंदना (मथुरा) द्वारा संगीत एवं दृश्यमय श्रीमद भागवत कथा का सुंदर वर्णन होने जा रहा है। साथ ही 30 मार्च को श्री नर्मदा पुराण का आयोजन होगा। कथा पांडाल में श्रोताओं के लिए पृथक पृथक व्यवस्था की गई है। साथ ही मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों एवं भक्तों के लिए भी दर्शन की विशेष व्यवस्था की गई है। प्रेस वार्ता में मुख्य आयोजक मन्नुलाल गर्ग, अध्यक्ष दुर्गेश अग्रवाल, दीपक गर्ग, देवकृष्ण व्यास, रमण शर्मा, चेतन उपाध्याय सहित समिति के पदाधिकारी उपस्थित थे।

आयुष विभाग ने 255 महिला रोगियों को निःशुल्क उपचार किया

खरगोन/दैनिक मालवा हेराल्ड। आयुष विभाग ने आयुषी स्वस्थ नारी सशक्त नारी के उद्देश्य व राष्ट्रीय आयुष मिशन अंतर्गत महिलाओं के लिए गुरूवार को नवग्रह मंदिर परिसर में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उदघाटन भगवान धन्वंतरि का पूजन अर्चन कर नपा अध्यक्ष श्रीमती छाया जोशी, जिला

पंचायत उपाध्यक्ष श्री बापू सिंह परिहार, श्री पूर्णा ठाकुर ,श्री पवन कुशवाह द्वारा किया गया। आयुष अधिकारी डॉ. वासुदेव आसलकर ने बताया कि महिला स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में कुल 255 रोगियों का निशुल्क उपचार किया गया। इनमें आयुर्वेद के 197 और होम्योपैथी से 58 सहित अन्य रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर पेरा मेडिकल स्टॉफ ने निःशुल्क औषधि वितरीत की। शिविर में रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण डॉ गोपीचंद सोलंकी, डॉ मुकेश सेते, डॉ कैलाश शाक्ले, डॉ अर्जुन परिहार, डॉ रणजीत सिंह अजनार, डॉ राहुल गिन्नारे, महिला चिकित्सक डॉ मनीषा आरसे, डॉ अर्चना चौहान, डॉ सुलोचना पंवार, डॉ रजनी मंडलोई ने किया। शिविर में आयुर्वेद की दिनचर्या और औषधियों के प्रयोग बताए गए। साथ ही शिविर में रोगियों को योग की जानकारी दी गई।

विश्व स्तरीय उत्पाद हमारी पहचान–कपूर

मैसी फर्ग्यूसन टैफे कम्पनी के मेगा सेल्स केम्प में बड़ी संख्या में पहुचे किसान

पचोर/हेमन्त कुमार शर्मा/ दैनिक मालवा हेराल्ड। पचौर मैसी फर्ग्यूसन टैफे कम्पनी द्वारा गुरुवार को मेगा सेल्स केम्प का कम्पनी के सेल्स एन्ड मार्केटिंग प्रसिडेंट भरतेन्दु कपूर के आतिथ्य में आयोजित हुवा। जिसमे 21 से अधिक ग्राहकों को नए ट्रेक्टर की चाबी सोप कर स्वागत किया गया। श्री कपूर ने सभी ग्राहकों से बातचीत की ओर उनसे टैफे ट्रेक्टर लेने के बारे में जाना। इस मौके पर किसानों से बातचीत में कहा मैसी फर्ग्यूसन टैफे कम्पनी विगत 63 वर्षों से ट्रेक्टर उत्पादन के क्षेत्र में है। हम आज विश्व स्तरीय ओर भरोसेमंद उत्पाद दे रहे है। हम आज 103 देशों में ट्रेक्टर का निर्यात करते है। हम एक ही मानक में ट्रेक्टर बना रहे है।

कम्पनी आज विश्व के तीन प्रमुख निर्माता कंपनी में है। हम हमारा प्रयास है कि किसान की उपेक्षा के अनुरूप बहतेर उत्पाद दे । देश भर में एक निश्चित दूरी पर सर्विस सेंटर की सुविधा हम दे रहे है। वही सबकी मांग और परिस्थितियों के अनुरूप हम उत्पादों में लगातार परिवर्तन भी कर रहे है । इस मौके पर किसानों ने भी अपने प्रश्न पूछे जिनका उतर श्री कपूर ने दिया। इससे पहले पचौर पहुचने पर श्री कपूर का स्वागत वितरकों ओर टीम ने किया । स्वागत भाषण राहुल गुप्ता ने दिया। इस मोके पर रोहित गुप्ता रीजनल मैनेजर राधेश्याम रघुवंशी मार्केटिंग हेड मध्यप्रदेश के साथ वितरक बद्रीलाल गुप्ता, सचिन जेन सुसनेर , रोहित दांगी ब्यवारा सहित बड़ी सँख्या में किसान उपस्थित रहे।कार्यक्रम में अजय शर्मा को एम पी डी एल विजेता होने पर श्री कपूर द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रदेश में लांच हुई युवा नीति लर्न और अर्न योजना का हुआ शुभारम्भ

मोबाइल के माध्यम से घर की माता बहनों के सहयोगी बनें युवा-कलेक्टर श्री वर्मा

खरगोन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने गुरुवार को शहीद दिवस के अवसर पर प्रदेश में लर्न और अर्न योजना का शुभारंभ करते हुए युवा महापंचायत को भोपाल के मोतीलाल नेहरू मैदान में संबोधित किया। इस कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रदेश की युवा नीति का विमोचन और प्रदेश में युवा पोर्टल का भी शुभारम्भ लिया। भोपाल में आयोजित हुई युवा महापंचायत में युवाओं को राज्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। खरगोन महाविद्यालय में युवा छात्र छात्राओं से खचाखच भरे हॉल में मुख्यमंत्री श्री चौहान द्वारा की गई घोषणाओं का तालियों की गड़गड़ाहट और भारत माता की जय के नारों से गुंजा। इस दौरान जनभागीदारी के अध्यक्ष श्री दीपक कानूनगो, सदस्यों में श्री मुकेश बिडारे, हिमांशु ठाकुर, श्रीमती शीतल राठौर, श्याम गुप्ता, माया खोड़े और मीना कोचले सहित महाविद्यालय के प्राचार्य श्री आरएस देवड़ा व स्टॉप तथा मप्र पाठ्य पुस्तक निगम के पूर्व उपाध्यक्ष श्री भागीरथ कुमरावत उपस्थित रहे।

लर्निंग पढ़ाई को आसान बनाता है

इस कार्यक्रम के दौरान कलेक्टर श्री शिवराज सिंह वर्मा ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि रीड करने से ज्यादा लर्न करना होगा। लर्निंग प्रक्रिया ही पढ़ाई को आसान बनाती है। उन्होंने युवाओं को खुद की वैल्यू बढ़ाने के लिए माइकल जॉर्डन की प्रेरक कहानी भी सुनाई। इए दौरान कलेक्टर श्री वर्मा ने युवाओं से आव्हान करते हुए कहा कि मोबाइल के माध्यम से अपने घर की माता बहनों की ई-केवायसी कर मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना का लाभ दिलाने में सहयोगी बन सकते हैं।

बांस को रोजगार का साधन बनाने के लिए किसानों को कार्यशाला में किया जागरूक

देवास/दैनिक मालवा हेराल्ड। बांस को रोजगार का साधन बनाकर कमाई करने हेतु किसानों के लिए कार्यशाला का आयोजन कृषि विभाग के सहयोग से आर्टिसन एग्रोटेक प्राइवेट लिमिटेड द्वारा ग्राम खटाम्बा में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य अतिथि कृषि विभाग के उप संचालक आरपी कनेरिया, कृषि विज्ञान केन्द्र के ए.के. बड़ाया, आत्मा के उप संचालक नीलम चौहान, जन अभियान परिषद ग्राम विकास प्रस्फुटन

समिति अध्यक्ष व मप्र शासन से सम्मानित ग्राम छोटी चूरलाय के युवा कृषक धर्मेन्द्र सिंह राजपूत, विकासखण्ड अधिकारी आर.के. विश्वकर्मा, सहायक संचालक कम्पनी प्रेसिडेंट एवं सीईओ देवपम मुखर्जी, हेड रॉ मटेरियल सीनियर मैनेजर दीपक खरे, शुभम बिसेन, जगदीश कुमार, बीटीएम देवास रोहित यादव, सहायक संचालक पाटिल जी आदि ने विधिवत रूप से किया। किसानों को संबोधित करते हुए कार्यशाला में बताया कि इमारती लकड़ी का एक बेहतर विकल्प है। व्यापक अंतर्राष्ट्रीय बाजार और लगातार इसकी मांग बढ़ रही है। कृषि के आय में अनिश्चितता को देखते हुए आर्टिसन ने खेती को सीधे उद्योग से जोडने का प्रयास किया। बांस कई तरह के रोजगार सृजित करने में सहायक है। इसके रोपण में एक बार ही खर्च होगा। आर्टिसन अपने साझेदार किसानों की बास की फसल आगामी 40 वर्षों तक खरीदने के लिए अनुबंध करती है। इससे किसानों को प्रति एकड़ न्यूनतम 60 से 80 हजार रूपए से अधिकतम 1.50-2.00 लाख रूपए तक आय ली जा सकती है। युवा कृषक राजपूत बांस के लिए गांव-गांव जाकर किसानों को इसकी खेती के लिए जागरूक करेंगे।

संघठन से बडी कोई शक्ति नहीं होती हैं- गर्ग

सभी क़े हर सुख दु:ख मँ साथ हूँ. करोड़िया ››धूमधाम एवं उत्साह से मनाया गुड़ी पड़वा महोत्सव

पचोर/हेमन्त कुमार शर्मा/दैनिक मालवा हेराल्ड। अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन नगर पचोर द्वारा नववर्ष वैश्य दिवस गुड़ी पड़वा उत्सव बड़े हीं धूमधाम एवं उत्साह से मनाया गया। कार्यक्रम मँ अतिथि क़े रूप मँ कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद गर्ग नगर परिषद अध्यक्ष विकास करोड़िया द्वारका प्रसाद गांधी श्रीराम गोयल नगर अध्यक्ष अशोक गुप्ता भगत आर सी जैन विष्णु विजयवर्गीय गोलू भंडारी युवा जिलाध्यक्ष अरुण मित्तल जिला महामंत्री मनीष अग्रवाल कविश गोयल अग्रवाल महिला महासभा जिलाध्यक्ष श्रीमती सविता गोयल नगर अध्यक्ष श्रीमती सुषमा गोयल मंजू गुप्ता रानी गुप्ता अशोक काकानी कमलेश विजयवर्गीय मंचासिन थे। सर्वप्रथम सभी अतिथियों क़े द्वारा माता महालक्ष्मी जी क़े चित्र पर पूजन अर्चना की तत्पश्चात सभी मंचासिन अतिथियों का शाल श्रीफल दुपट्टा एवं पगड़ी पहनकर स्वागत व सम्मान किया गया

तत्पश्चात सर्वप्रथम नगर अध्यक्ष अशोक गुप्ता एवं महिला नगर अध्यक्ष श्रीमती सुषमा गोयल नें स्वागत भाषण दिया तत्पश्चात सभी अतिथियो नें जिसमे श्रीराम गोयल द्वारका गांधी श्रीमती सविता गोयल श्री मति मंजू गुप्ता नें अपनें उदभोधन मैं वैश्य एकता और भाईचारे क़े साथ रहने पर बल दिया अंत में नगर परिषद अध्यक्ष विकास करोड़िया नें अपनें उदभोधन में कहाँ की मैं वैश्य बंधुओ क़े हर सुख दुःख मैं साथ हूँ मुझसे जितना भी हों सकेगा वों मैं वैश्य समाज क़े करने का पूरा प्रयास करूँगा कार्यक्रम क़े अंत मैं प्रदेश अध्यक्ष हनुमान प्रसाद गर्ग नें कहाँ की संघठन से बड़ी कोई ताकत नहीं होती हें अगर आपके पास अनाप सनाप पैसा हें वों भी संघठन से बढकर नहीं हें मिलकर साथ रहो एक दूसरे का जितना बनपडे हमें उतना सहयोग करना चाहीयें जों काम पैसे से नहीं हों सकता वों काम संघठित होने से आसानी से हों जाता हें। अंत मैं सभी मोजूद वैश्य बंधुओ नें मातृशक्ति एवं युवा साथियों नें सामूहिक रूप से माँ महालक्ष्मी जी की महाआरती की उक्त विशाल आयोजन मैं सभी घटको क़े अनेक वैश्य बंधु मातृशक्ति एवं युवा साथी मौजूद थे कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री मनीष अग्रवाल नें किया एवं आभार तहसील अध्यक्ष श्रीनाथ माहेश्वरी नें माना। तत्पश्चात सभी वैश्य बंधुओ नें एक साथ सामूहिक भोजन किया!

आयुष शर्मा ने शर्टलेस सीन शूट करने के पीछे की मेहनत का खुलासा किया

जीएनएस।हाल ही में अपनी आगामी फिल्म AS04 के अजरबैजान शूट शेड्यूल को पूरा करने की घोषणा कर चुके, आयुष शर्मा ने शर्टलेस सीन शूट करने के लिए परफेक्ट बॉडी शॉट फिजिक में महारत हासिल करने के लिए अपने आखिरी मिनट के ग्राइंड का एक थ्रोबैक वीडियो साझा किया।

आयुष ने हाल ही में अज़रबैजान में एक्शन से भरपूर अपने शेड्यूल के समाप्ति की घोषणा की, जिसमें उनके वॉशबोर्ड एब्स और टोन्ड मसल्स को दिखाते हुए एक बॉडी शॉट भी शामिल था। अभिनेता ने एब्स और मसल्स को अधिक प्रमुखता से परिभाषित करने के लिए मुख्य शॉट से पहले आवश्यक ग्राइंड पेश करते हुए एक वीडियो साझा किया।

अपनी पहली फिल्म के दुबले-पतले गाय-नेक्स्ट-डोर लुक से एंटीम- द फाइनल ट्रुथ के लिए वॉशबोर्ड एब्स के साथ बीफ अप, टोन्ड बॉडी तक जबर्दस्त परिवर्तन के बाद से, आयुष शर्मा ने सबसे फिट अभिनेताओं के बीच अपना स्थान हासिल कर लिया है। अपनी बॉडी से सभी को और भी आश्चर्यचकित करते हुए, आयुष शर्मा ने नियमित रूप से अपने प्रशंसकों और फॉलोअर्स को अपनी आगामी फिल्म AS04 के लिए तैयार होने वाले कठोर वर्कआउट रूटीन की झलकियां दिखाईं।

AS04 के साथ डेब्यूटेंट सुश्री मिश्रा को लॉन्च करते हुए, आयुष शर्मा ने फिल्म के लिए अनुभवी दक्षिण भारतीय अभिनेता जगपति बाबू को भी लिया।

श्रीसत्यसाई आर्ट्स के बैनर तले केके राधामोहन द्वारा निर्मित, अभी तक अनटाइटल्ड एक्शन एंटरटेनर AS04 में आयुष शर्मा मुख्य भूमिका में हैं, जिसमें सह-अभिनीत डेब्यूटेंट सुश्री मिश्रा हैं। कात्यायन शिवपुरी द्वारा निर्देशित यह फिल्म 2023 में रिलीज होने के लिए तैयार है।

"जब तक 'भाबीजी घर पर हैं' रहेगा, तब तक मैं इस शो क हिस्सा रहूंगा"- यह कहना है 'भाबीजी घर पर हैं' के मनमोहन तिवारी उर्फ रोहिताश्व गौड़ का

जीएनएस।एण्डटीवी के कल्ट- कॉमेडी शो 'भाबीजी घर पर हैं' ने हाल ही में आठ साल पूरे किये हैं और इसके 2000 एपिसोड्स प्रसारित हो चुके हैं। इस खास मौके पर हमने शो में मनमोहन तिवारी का किरदार निभा रहे रोहिताश्व गौड़ से बात की और उनके इस असाधारण सफर के बारे में पूछा। प्रस्तुत है उनसे हुई बातचीत के प्रमुख अंश:

1.शो के 8 साल और 2000 एपिसोड्स एक साथ पूरे होने पर कैसा लग रहा है?

यह हम सभी के लिये एक बेहद खास पल है, क्योंकि यह एक डबल सेलिब्रेशन है। टेलीविजन इंडस्ट्री बहुत प्रतिस्पर्धी है, जहां ऐसे शोज कम ही हैं, जो अपनी सफलता को बरकरार रख पाते हैं और 'भाबीजी घर पर हैं' ने इस मामले में महारत हासिल की है। मैं चैनल और हमारे प्रोड्यूसर्स संजय कोहली एवं बिनेफर कोहली का आभारी हूं, जिन्होंने मुझ पर भरोसा किया और मुझे यह मौका दिया। आठ साल गुजर चुके हैं और हमारा रिश्ता अभी भी मजबूत हो रहा है। मेरे कॅरियर को बनाने और मुझे ढेरों भरोसेमंद प्रशंसक दिलाने में इस शो की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

2 .मनमोहन तिवारी के अपने किरदार के नाम से पहचाने जाने पर आपको कैसा लगता है?

तिवारी के रूप में मेरा सफर कमाल का रहा है। यह किरदार घर-घर में लोकप्रिय हो गया है। इस किरदार ने इतनी खूबसूरती से जुड़ाव बनाया है कि लोग अक्सर मुझे रोहिताश्व के बजाय तिवारी जी कहकर बुलाते हैं। कई बार तो लोग मुझसे यह भी पूछ बैठते हैं कि 'आपकी कच्छे बनियान की दुकान कैसी चल रही है?''(हंसते हैं)। यह हमारे शो और इसके किरदारों की कामयाबी को दर्शाता है। मेरा मानना है कि सिर्फ तिवारी ही नहीं, बल्कि इस शो के हर किरदार ने दर्शकों के दिलों में एक खास जगह बनाई है। कई मौकों पर हमारे प्रशंसकों ने बताया है कि इस शो को देखकर कैसे उनका जीवन खुशियों से भर गया है। हमें कई मरीजों के भी खत मिलते रहे हैं, जिनमें उन्होंने बताया कि यह शो देखकर उन्हें अपना दर्द भूलने में मदद मिली और इसके हास्य की वजह से ही वह अपने मुश्किल दिनों को आसानी से गुजार पाये। मैं इसके लिये खुद को खुशकिस्मत मानता हूं और दर्शकों का आभारी हूं।

3.टेलीविजन पर आपको इस तरह का दिलफेंक किरदार निभाते हुए देखकर आपके परिवार की क्या प्रतिक्रिया होती है?

सच कहूं, तो भारतीय टेलीविजन पर ऐसा दिलफेंक किरदार निभाने को लेकर मैं असमंजस में था। शुरूआत में मैं दर्शकों की प्रतिक्रिया को लेकर चिंतित था। लेकिन मेरी पत्नी रेखा ने मुझे यह रोल करने के लिये मनाया और आज हम इस जगह पर हैं। हम आठ सालों के बाद दो बड़ी उपलब्धियों का जश्न मना रहे हैं। मेरे परिवार वालों को टेलीविजन पर मुझे देखकर उतना ही मजा आता है, जितना हमारे शो के प्रशंसकों को आता है। मेरी पत्नी मेरे काम एवं भूमिकाओं को समझती है और उसने हमेशा ही मेरा साथ दिया है। उसने मुझे हमेशा प्रेरित किया है। मेरे पूरे कॅरियर में मेरे बच्चे मेरे सबसे बड़े समर्थक और आलोचक रहे हैं। उनकी सलाह और परामर्श से मुझे बेहतर परफॉर्म करने में मदद मिलती है।

4.आपका अब तक का सबसे पसंदीदा एपिसोड कौन सा है?

इस शो की हर कहानी अनूठी एवं हास्यप्रद है, इसलिये इनमें से किसी एक को चुनना बेहद मुश्किल है। हालांकि, एक कहानी जो मुझे याद आ रही है, वह है मदन मोहन तिवारी के किरदार वाली, जोकि मनमोहन तिवारी का छोटा हिप्पी भाई है। वह मनमोहन तिवारी के किरदार से बिल्कुल उलट था। मदन मोहन तिवारी की कैजुअल क्लॉदिंग, लंबे उलझे बाल और एक अनूठे अंदाज में उसका अजीबो-गरीब इंग्लिश बोलना बेहद मनोरंजक था। मनमोहन तिवारी की गैरमौजूदगी में वह अंगूरी के साथ फ्लर्ट करके विभूति को जलाता रहता था। मुझे दर्शकों से काफी पॉजिटिव फीडबैक मिले थे। विचित्र और मजेदार किरदारों में ढलना और अपने दर्शकों का मनोरंजन करना हमेशा ही मजेदार होता है।

5.रोहिताश्व गौड़ और मनमोहन तिवारी के बीच कोई एक समानता?

मनमोहन तिवारी की तरह, मैं भी एक मध्यम-वर्गीय आदमी हूं, जो अपने परिवार से प्यार करता है और उन्हें ढेर सारी खुशियां एवं प्यार देने के लिये किसी भी हद तक जा सकता है।

6.हाल ही में आपने कहा था कि 'भाबीजी घर पर हैं' के बाद आप टेलीविजन पर काम नहीं करेंगे। इसकी क्या वजह है?

मैं थिएटर से ताल्लुक रखता हूं और मैंने कई फिल्मों में काम किया है। 'भाबीजी घर पर हैं' ने मुझे बहुत पहचान दिलाई है। मुझे नहीं लगता कि किसी और टेलीविजन शो ने मुझे इतनी लोकप्रियता और बतौर कलाकार इतना संतोष दिया है। मैं जहां भी जाता हूं, लोग मुझे मनमोहन तिवारी के रूप में पहचानते हैं और इतने आइकॉनिक किरदार को निभाकर मुझे बहुत खुशी और गर्व है। जब तक 'भाबीजी घर पर हैं' रहेगा, तब तक मैं इस शो का हिस्सा रहूंगा। यह शो हमेशा ही मेरी पहली प्राथमिकता रहेगी।

रोहिताश्व गौड़ को मनमोहन तिवारी के रूप में देखिये, 'भाबीजी घर पर हैं' में, हर सोमवार से शुक्रवार, रात 10-30 बजे, सिर्फ एण्डटीवी पर!

कामिनी नही, मैं जन्मदात्री भी हूं

मैं मां हूं बहन हूं बेटी हूं, प्रेयसी और पत्नी भी हूं!
सिर्फ कामिनी न समझ,तेरी जन्म दात्री भी हूं!
मुझसे हर रिश्ते मुकम्मल, तू देह से आगे निकल
मुझमें ममता के दर्शन!
कोख में पूरे 9 महीने, स्वरक्त की बूंदों से करती हूं तेरा पोषण,
पर युगों-युगों से तू सिर्फ, करता रहा मेरा शोषण
मेरे बिना तेरा अस्तित्व नहीं, इस बात का थोड़ा चिंतन कर, देह से आगे निकल, मुझमें ममता का दर्शन कर!
ईश्वर की मैं सर्वश्रेष्ठ रचना, मेरे भीतर जीवन का सृजन हुआ,
पर हर वक्त तूने हैवानों सा, मुझमें,मेरा विध्वंस किया,
नादान समझ इंसान तो बन, मेरे अस्तित्व का वर्णन कर,
देह से आगे निकल, मुझ में ममता के दर्शन कर!
मुझसे तेरे हर रिश्ते हैं, इस बात से तू इंकार न कर
वेद पुराण, गायत्री हूं,पर तेरी जन्म दात्री हूं।

-रत्ना मजूमदार

गज़ल

अब नेताओं से यही सवाल उठाया जाए
जहॉं अंधेरा दिखे वहॉं उजाला लाया जाए
लाते हो देश में आप अनेक यौजना? भी
पहले उससे ग़रीबों का घर महकाया जाए
गुण्डे, बदमाश, लफंगे अब बचे नहीं यहॉं पर
मिले सज़ा उसे ऐसा क़ानून बनाया जाए
सच की करें सुरक्षा आप सब मिलकर यारों अब
मगर झूठों को तो फॉंसी पर लटकाया जाए
व्यवस्था में दिखे जहॉं भी सॉंप-सपेरे यहॉं
उनका समूचा ही ज़हर यारों निकाला जाए
जिनमें है प्रतिभा मगर वे बढ़े नहीं आगे
उनको अब ऐसे ही अवसर दिलाया जाए
रमेश का हक़ छिनकर हुए है वे मालामाल
वो हक़ वापस ही उनसे छीनकर दिलाया जाए

-रमेश मनोहरा

पानी

रे बाबा कैसी जिंदगानी है,
पानी की भी अजब कहानी है,
पानी से ही धोना नहाना,
पानी से ही पीना खाना,
नहीं करती कभी ओछी हरकत,
पानी निःस्वार्थ देती है कुदरत,
पर कुछ जातियों में
जबरदस्त शक्तियां देखी जाती है
जो अन्न को, जल को,
यहां तक भगवान को भी
अपवित्र कर देते हैं,
कइयों की भावनाएं आहत कर
उनमें मातम भर देते हैं,
इनके आगे कोई नहीं ठहरता,
पता नहीं कौन है इनमें शक्ति
भरता,
सुअर, कुत्ते, बैल जैसे जानवर भी
किसी घाट, जलाशय को
अपवित्र नहीं कर सकते,
पर वाह रे अमानवीय नियम
कुछ मानव पानी में
अपना पांव नहीं धर सकते,
मगर धन्य है वो महामानव,
जिसने मनुवादियों के सामने
पानी छूने से लेकर पीने तक का
अधिकार दिलाया,
लोगों को पानी पिलाया,
रोते रहें वे जो रहते हैं हरदम रोते,
लेकिन इतना जरूर जान लें
पानी और खून कभी अपवित्र
नहीं होते।

-राजेन्द्र लाहिरी

प्यार और नफरत

प्यार.................................,

प्यार भी क्या गजब का होता हैं ना,
बहुत खास सा एहसास होता हैं ना ,
दिल कें बहुत पास होता हैं ना ,
सपनें बहुत सा दिखाता हैं ना,
उसे खोने का डर सताता है ना,
पढ़ाई कों छोड़वा देता है ना,
नौकरी सें ज्यादा उससे बात करने की चाहत पैदा करता हैं ना,
दिनभर बस अपने प्यार की याद आती है ना,
प्यार घर में दस बात सुनवाता हैं ना,
फिर भी बात करने का दिल करता है ना,
सच्चा प्यार बहुत कम कों होता हैं ना,
और जिसे होता हैं ना,
वों इस दुनिया का सबसे खुशकिस्मत होता हैं ना,
और

नफरत..............................,

नरफत प्यार सें ज्यादा गजब का होता हैं ना,
बहुत दर्द देता हैं ना,
फिर हिम्मत दे जाता है ना,
किसी कों खोने का डर नहीं सताता है ना,
दिल कें जों पास था कभी वों दुर होता है ना,
सपनें सब टुट जातें हैं ना,
पढ़ाई में फिर दिल लगता हैं ना,
दिनभर बस सफलता पाने की चाह होती है ना,
किसी सें बात करने का दिल नहीं करता है ना ,
नफरत प्यार सें ज्यादा अच्छा होता हैं।।

- मुस्कान केशरी

प्राण की एक ग़ज़ल

कहीं हमारी कहीं तुम्हारी,
विरोधियों ने कमी बता दी।
हक़ीक़तों का बयान आना,
शुरू हुआ तो ज़ुबाँ दबा दी ।।

दलील देने लगा खलीफा,
कि पंख तेरे नये नये हैं,
भरी ज़रा सी उड़ान भर तो,
ज़मीन पर ही हवा खिला दी ।।

भला बता दो किसे मिला है,
सुकून दौरे जहाँ में आके,
सदा सताता रहा जमाना,
कभी घुटन तो कभी सजा दी ।।

हजार मुँह हैं हजार बातें,
हजार दुखड़े खड़े पड़े हैं ,
जहाँ जहाँ भी गया वहाँ जो,
मिला उसी ने कथा सुना दी ।।

कहा हटो सब खलास राशन,
अमीर का तब गरूर टूटा,
फक़ीर भूखा चला गया पर ,
सलामती की दिली दुआ दी ।।

न देह होगी न रूह होगी ,
न प्राण प्यारे कहीं मिलेंगे ,
कई पढ़ेंगे हमारी ग़ज़लें,
कई कहेंगे हवा उड़ा दी।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया"प्राण"इन्दौर

राम तेरा नाम ही तारणहार है

रामसेतु बनाने के लिए,
मै गिलहरी बन जाऊँ।
राम तेरा इंतजार करते-करते,
मै सबरी बन जाऊँ।

नल नील नही हूँ मै ,
मेरे हाथ के पत्थर तो नही तेरेंगे।
तेरा नाम लिख देंगे अगर दिल पर,
फ़िर कभी न हम भव सागर मे डूबेंगे।
मै खड़ी खड़ी राह तकूँगी,
राम तुम्हारा कयामत तक।
मै अहिल्या पत्थर की शिला,
स्वाद चखूंगी राम तुम्हारे चरणामृत का।
मै केवट छोटी सी नाँव से,
कैसे अपना बेडा पार लगाऊंगा।
राम तुम मेरी नैया मे बैठोगे तो,
मै भव सागर से तर जाऊँगा।
राम तेरा नाम ही तारणहार है।

जिसकी ज़ुबाँ पर आ गया समझो उसका बेडा पार है।
कब तक यूँहीं ही अकेले तूफानों से लड़ते रहेंगे,
अब सौप दी राम तेरे हाथों मे अपनी जीवन पतवार है।

-गिरीश गुप्ता

मानुल चुडासमा ने सोनी सब के शो 'अलीबाबा- एक अंदाज़ अनदेखाः चैप्टशर 2' में अपने रोल के लिये तलवारबाज़ी सीखने के बारे में बताया

जीएनएस।सोनी सब का शो 'अलीबाबा- एक अंदाज़ अनदेखा- चैप्टेर 2' एक पारिवारिक मनोरंजक शो है, जिसमें रखवाले अली (अभिषेक निगम) के कई एडवेंचर दिखाए जाते हैं। इस शो को दर्शक काफी पसंद करते हैं और यह अपने दिलचस्पक किरदारों और दमदार कहानी के कारण प्रशंसकों का चहेता है। मरजीना (मानुल चुडासमा) को एक खतरनाक जानवर से बचाने के बाद अली अपने घर परवाज़ की ओर बढ़ता है। रास्तेह में वे एक शादी देखते हैं, जो वैसी नहीं है, जैसी दिख रही है।

'अलीबाबा- एक अंदाज़ अनदेखा' में इस हफ्ते एक शादी के रुकने और दूल्हे की जिन्दिगी खतरे में पड़ने के बाद अली और मरजीना दूल्हे- को बिना सिर वाली औरत से बचाने की योजना बनाते हैं। वे बिना सिर वाली औरत को लुभाने के लिये एक 'नकली शादी' का फैसला करते हैं। हालांकि अली और मरजीना को जल्दीव ही पता चल जाता है कि हालात उनकी उम्मी द से ज्याददा खराब हैं। और बिना सिर वाली औरत अली को शादी की जगह से खींच लेती है। क्या मरजीना अब अपनी तलवार उठाकर लड़ाई लड़ेगी?

क्यान मरजीना सचमुच एक योद्धा बनेगी?

मरजीना की भूमिका निभा रहीं मनुल चूडासमा ने कहा, ÷जब बिना सिर वाली औरत अली को दूर ले जाती है, तब मरजीना उसे बचाने के लिये लड़ेगी। यह मेरे लिये एक रोमांचक वक्तज है, क्योंकि मैं पहली बार एक एक्शीन सीक्वेंस करूंगी और तलवार उठाऊंगी। मुझे कभी लड़ने या किसी को बचाने का मौका नहीं मिला है। मरजीना का आगे बढ़कर अली के लिये लड़ना मुझे सशक्तग करने वाला पल है, क्योंमकि इसमें

मरजीना के भीतर की ताकत और हिम्मढत दिखती है। तलवारबाज़ी सीखने का अनुभव मेरे लिये मजेदार था और मुझे उम्मींद है कि दर्शक एक योद्धा के इस नये अवतार में मरजीना को देखना पसंद करेंगे।÷

देखिये 'अलीबाबा एक अंदाज़ अनदेखा- चैप्टकर 2', हर सोमवार से शुक्रवार शाम 7 बजे सिर्फ सोनी सब पर

(क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है)

हर देशवासी के दिल में है 'शहीदों के राजकुमार' भगत सिंह

भगत सिंह ने अदालत में कहा था,क्रांति जरूरी नहीं कि खूनी संघर्ष शामिल हो, न ही इसमें व्यक्ति गत प्रतिशोध के लिए कोई जगह है। यह बम और पिस्तौल का पंथ नहीं है। क्रांति से हमारा तात्पर्य चीजों की वर्तमान व्यवस्था से है, जो स्पष्ट अन्याय पर आधारित है, इसे बदलना होगा।'भगत ने मार्क्सवाद और समाज के वर्ग दृष्टिकोण को पूरी तरह से स्वीकार किया- 'किसानों को न केवल विदेशी जुए से बल्कि जमींदारों और पूंजीपतियों के जुए से भी खुद को मुक्त करना होगा।' उन्होंने यह भी कहा, 'भारत में संघर्ष तब तक जारी रहेगा, जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए आम लोगों के श्रम का शोषण करते रहेंगे।

-प्रियंका सौरभ

भगत सिंह, एक प्रतिष्ठित क्रांतिकारी, विचारक, तामसिक पाठक और उस समय के पढ़े-लिखे राजनीतिक नेताओं में से एक, एक बुद्धिजीवी थे। अंग्रेजों के खिलाफ हिंसक रूप से लड़ने के बावजूद, उन्होंने पढ़ने और लिखने के अपने जुनून को लगातार जारी रखा। उन्होंने देशभक्ति के अपने पंथ के पक्ष में तर्कों से खुद को लैस करने के लिए अध्ययन किया और विपक्ष द्वारा पेश किए गए तर्कों का सामना करने के लिए खुद को सक्षम बनाया। वह युवाओं द्वारा पूजनीय थे, ब्रिटिश राज से घृणा करते थे और महात्मा गांधी के अलावा किसी और के विरोध में नहीं थे, अन्य क्रांतिकारियों की तरह उन्होंने मातृभूमि की आजादी का सपना देखा था। सरकार के खिलाफ हिंसा में वे जितना शामिल थे, उन्होंने अपने विवेक का इस्तेमाल किया और अहिंसा और उपवास को ब्रिटिश सत्ता के वर्चस्व को तोड़ने के लिए एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया।

उन्होंने हमेशा मानवीय गरिमा और सांप्रदायिक विभाजन से परे अधिकारों की वकालत की। क्रांतिकारी विचारधारा, क्रांतिकारी संघर्ष के रूपों और क्रांति के लक्ष्यों के संदर्भ में भगत सिंह और उनके साथियों द्वारा एक वास्तविक सफलता हासिल की गई थी। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन मेनिफेस्टो (1925) ने घोषणा की कि यह उन सभी प्रणालियों को समाप्त करने के लिए खड़ा किया जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को संभव बनाती हैं। इसकी संस्थापक परिषद ने सामाजिक क्रांतिकारी और साम्यवादी सिद्धांतों का प्रचार करने का निर्णय लिया था। एचआरए ने श्रमिक और किसान संगठनों को शुरू करने और एक संगठित और सशस्त्र क्रांति के लिए काम करने का भी फैसला किया था। क्रांति के निर्माण में विचारों की भूमिका पर जोर देते हुए भगत सिंह ने घोषणा की कि क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है। व्यापक पठन और गहन सोच के इस माहौल ने एचएसआरए नेतृत्व के रैंकों में प्रवेश किया।

भगत सिंह ने मार्क्सवाद की ओर रुख किया था और उन्हें विश्वास हो गया था कि लोकप्रिय व्यापक आधार वाले जन आंदोलनों से ही एक सफल क्रांति हो सकती है। इसीलिए भगत सिंह ने 1926 में क्रांतिकारियों की खुली शाखा के रूप में पंजाब नौजवान भारत सभा की स्थापना में मदद की। सभा को युवाओं, किसानों और श्रमिकों के बीच खुला राजनीतिक कार्य करना था। भगत सिंह और सुखदेव ने छात्रों के बीच खुले, कानूनी काम के लिए लाहौर छात्र संघ का भी आयोजन किया। धैर्यवान बौद्धिक और राजनीतिक कार्य ने बहुत धीमी गति से और राजनीति की कांग्रेस शैली के समान होने की अपील की, जिसे क्रांतिकारियों ने पार करना चाहा। नई विचारधारा का प्रभावी अधिग्रहण एक लंबी और ऐतिहासिक प्रक्रिया है जबकि सोच के तरीके में त्वरित बदलाव समय की मांग थी। इन युवा बुद्धिजीवियों को क्लासिक दुविधा का सामना करना पड़ा कि कैसे लोगों को लामबंद किया जाए और उन्हें भर्ती किया जाए। यहां, उन्होंने विलेख द्वारा प्रचार का विकल्प चुनने का फैसला किया, यानी व्यक्तिगत वीर कार्रवाई के माध्यम से और क्रांतिकारी प्रचार के लिए एक मंच के रूप में अदालतों का उपयोग करके।

क्रांति अब उग्रवाद और हिंसा के बराबर नहीं थी। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय मुक्ति होना था- साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना था लेकिन इससे परे ÷मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण÷ को समाप्त करने के लिए एक नया समाजवादी आदेश प्राप्त करना था। जैसा कि भगत सिंह ने अदालत में कहा था, ÷क्रांति जरूरी नहीं कि खूनी संघर्ष शामिल हो, न ही इसमें व्यक्तिगत प्रतिशोध के लिए कोई जगह है। यह बम और पिस्तौल का पंथ नहीं है। क्रांति से हमारा तात्पर्य चीजों की वर्तमान व्यवस्था से है, जो स्पष्ट अन्याय पर आधारित है, इसे बदलना होगा।÷भगत ने मार्क्सवाद और समाज के वर्ग दृष्टिकोण को पूरी तरह से स्वीकार किया- ÷किसानों को न केवल विदेशी जुए से बल्कि जमींदारों और पूंजीपतियों के जुए से भी खुद को मुक्त करना होगा।

उन्होंने यह भी कहा, भारत में संघर्ष तब तक जारी रहेगा, जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए आम लोगों के श्रम का शोषण करते रहेंगे। यह बहुत कम मायने रखता है कि ये शोषक ब्रिटिश पूंजीपति हैं, ब्रिटिश और भारतीय पूंजीपति गठबंधन में हैं, या विशुद्ध रूप से भारतीय हैं। उन्होंने समाजवाद को वैज्ञानिक रूप से पूंजीवाद और वर्ग वर्चस्व के उन्मूलन के रूप में परिभाषित किया। भगत पूरी तरह से और सचेत रूप से धर्मनिरपेक्ष थे - पंजाब नौजवान भारत सभा के लिए भगत द्वारा तैयार किए गए छह नियमों में से दो यह थे कि इसके सदस्यों का सांप्रदायिक निकायों से कोई लेना-देना नहीं होगा और वे धर्म को मानते हुए लोगों के बीच सहिष्णुता की सामान्य भावना का प्रचार करेंगे। व्यक्तिगत विश्वास का विषय। भगत सिंह ने लोगों को धर्म और अंधविश्वास के मानसिक बंधनों से मुक्त करने के महत्व को भी देखा- ÷एक क्रांतिकारी होने के लिए, अत्यधिक नैतिक शक्ति की आवश्यकता होती है, लेकिन आलोचना और स्वतंत्र सोच की भी आवश्यकता होती है÷

भगत सिंह और उनके साथियों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक स्थायी योगदान दिया। उनकी गहरी देशभक्ति, साहस और दृढ़ संकल्प और बलिदान की भावना ने भारतीय लोगों को आंदोलित कर दिया। उन्होंने देश में राष्ट्रवादी चेतना फैलाने में मदद की। कम उम्र में ही उन्होंने व्यक्तिगत लक्ष्यों को पूरा करने के लिए बाध्य होने के बजाय जीवन के बड़े लक्ष्यों को महसूस किया। उन्होंने क्रांति 'आतंकवाद' आंदोलन को समाजवादी आंदोलन में बदल दिया। वह राजनीति के दो क्षेत्रों में एक महान नवप्रवर्तक थे। सांप्रदायिकता के गंभीर मुद्दों और खतरों को उठाया।

संजीवनी।

क्यों गुलाबों की तरह महकते नहीं।

क्यों गुलाबों की तरह महकते नहीं।
क्यूं तुम बहारों के साथ चहकते नहीं। ।

दफ्न हो रही है तमन्ना ए मोहब्बत,
क्यू फूलों की शोहबत में रहते नहीं।

मर जायेगा आशिक़ तनहा होकर,
क्यूँ उसके खतो का जवाब देते नहीं।

फीकी पड़ गई है आशनाई ऐ मोहब्बत,
तस्सवुर में न जाने क्यूँ खुशबु बिखेरते नहीं।

तमन्नाओं की मंजिल तो तू है मेरी,
क्यों तसव्वुर में अपने लेते नहीं।

मोहब्बत में उलझन पैदा करेगा जमाना,
मेरे साथ क्यों रिश्ते तोड़ जाते नहीं।

आये हो, दो पल सुकूँ के गुजार लो,
फिर मिलने का वादा आप करते नहीं।

-संजीव ठाकुर

मुश्किल वक्त का सफ़र

आज़ भीड़-भाड़ भरी जिंदगी में,
कुछ हासिल करना आसान नहीं है,
यह वक्त का कमाल है,
सबका रखता ख्याल है।
कभी बुलंदी तो कभी फर्श पर पहुंचने की नौबत आती है,
इसी उधेड़बुन में शखिसियत पहचानी जाती है।
दोस्तों को परखने और समझने का वक्त मिलता है,
मुश्किल वक्त का सफ़र कैसा रहेगा,
वह समझता है।
सच्चाई नजदीक से देखने को मिलता है,
रूबरू होने पर असलियत समझता है।
वैसे खुशियां बांटने के लिए,
लोगों की कमी नहीं रहती है।
वक्त की नज़र टेढ़ी होने पर,
अपने भी पराए हो जातें हैं,
पहचानने से इंकार कर जातें हैं।
यह एक मुश्किल वक्त की सच्चाई है,
मुश्किल वक्त में हालात बेहद तकलीफ़ हो जाने पर,
किसी को किसी की याद नहीं आती है,
यही जिंदगी की सबसे बड़ी सच्चाई है।

-डॉ .अशोक, पटना, बिहार

पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से लाल।

भगत सिंह, सुखदेव क्यों, खो बैठे पहचान।
पूछ रही माँ भारती, तुम से हिंदुस्तान।।
भगत सिंह, आजाद ने, फूंका था शंख नाद।
आज़ादी जिनसे मिले, रखो हमेशा याद।।
बोलो सौरभ क्यों नहीं, हो भारत लाचार।
भगत सिंह कोई नहीं, बनने को तैयार।।
भगत सिंह, आज़ाद से, हो जन्मे जब वीर।
रक्षा करते देश की, डिगे न उनका धीर।।
मरते दम तक हम करे, एक यही फरियाद।
भगत सिंह भूले नहीं, याद रहे आज़ाद।।
मिट गया जो देश पर, करी जवानी वार।
देशभक्त उस भगत को, नमन करे संसार।।
भारत माता के हुआ, मन में आज मलाल।
पैदा क्यों होते नहीं, भगत सिंह से लाल।।
तड़प उठे धरती, गगन, रोए सारे देव।
जब फांसी पर थे चढ़े, भगत सिंह,
सुखदेव।।
भगत सिंह, आजाद हो, या हो वीर अनाम।
करें समर्पित हम उन्हे, सौरभ प्रथम प्रणाम।।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

माँ की जय-जयकार करें

चलो चलें माँ के आँचल में
ममता का दीदार करें
कदमों में हम शीश झुकाकर
माँ की जय-जयकार करें..।।
माँ कल्याणी दुःख हर लेंगी
ममता के आशीषों से
सबका जीवन सुखमय होगा
माँ का अब गुणगान करें..।।
नौ दिन माँ के नवों रूप का
उत्सव पर्व मनाएंगे
सबकी हो पूरी अभिलाषा
अर्पण पुष्पों का हार करें..।।
करूँ हमेशा तेरी सेवा
माँ तेरा आशीष रहे
नहीं कभी हो मन ये विचलित
माँ ऐसा उपकार करें..।।
चलो चलें माँ के आँचल में
ममता का दीदार करें
कदमों में हम शीश झुकाकर
माँ की जय-जयकार करें..।।
माँ की जय-जयकार करें..।।

- विजय कनौजिया

लोग कहेंगे!

लोग कहेंगे तुमको,
जब संघर्ष में रहोगे।
तब भी कहाँ रहेंगे चुप,
जब सफल तुम बनोगे।
जमाना कभी न छोड़ेगा तुमको,
चाहे कुछ भी तुम करोगे।
लोग कहेंगे तुमको,
जब संघर्ष में रहोगे।

टांग खींचने में हरपल,
संघर्ष में न दिखेंगे,
तुम्हारी सफलता में खुद का
श्रेय वो लिखेंगे।
समझोगे तुम भी
जब दुनिया को पढ़ोगे।
लोग कहेंगे तुमको,
जब संघर्ष में रहोगे।

कभी ग़ौर करके देखो,
सीरत और सूरत।
बदले हुए मिलेंगे,
सब माटी के ये मूरत।
समझोगे तुम भी,
ग़र अलग अलग पढ़ोगे।
लोग कहेंगे तुमको,
जब संघर्ष में रहोगे।

इसलिए बढ़ो तुम,
कदम न अब रोको।
व्यर्थ अपनी शक्ति,
न उस ओर झोको।
कहने वाले कहेंगे,
वो कहते ही रहेंगे।
हम बढ़ते रहे हैं,
बढ़ते ही रहेंगे।

बढ़ने के ये शब्द,
मन में हरदम तुम रखोगे।
अभी ये वादा खुद से करोगे।
छोड़ कर ये सब बातें ,
आगे ही बढ़ोगे।
सफलता के शिखर पर ,
एकदिन तुम चढ़ोगे।

- आशीर्वाद कुमार मिश्र

नारी सृष्टि का आधार

नारी शक्ति का आधार
नारी ईश्वर का उपहार।
दया क्षमा त्याग की प्रतिमा
नारी सृष्टि का आधार।
धरती सी धारण शक्ती है
उपासना नारी भक्ति है।
नारी ही नारायणी सबला
नारी ही आदिशक्ती है।
कुंडलिनी शक्ति है नारी
नारी मुक्ति का आधार।
करके अंशदान निज तनका
जीवन बाग उगाती है।
स्वयं रुधिर से सींच-सींच
अपना दूध पिलाती है।
नारी जग की भाग्य विधाता
नारी ही जीवन आधार।
तप साधना नारी जीवन
कंटक अग्नि पर विश्राम।
नारी ना होती सृष्टि में
कैसे जन्मते योगेश्वर राम।
प्राण सुधा है प्रेम सुधा है
नारी है स्वर्ग का द्वार।
सर्व गुणों का अद्भुत संगम
नारी सृष्टि का है उद्गम।
नारी जग कि अमृतधारा
नारी है इस जग में अनुपम।
नारी जीवन एक यज्ञ है
नारी शिक्षा और संस्कार।

-परमानन्द राठौर गुराड़िया वर्मा

गज़ल

प्रजातंत्र का हुआ है कैसा हाल यारों
जो आता उतारे है इसकी खाल यारों
सुख गया है नदी का समूचा ही पानी
फिर भी फेंक रहे यहाँ अपना जाल यारों
प्रयास जितने भी किये और उलझती गई
ऐसे में हुई हर समस्या विकराल यारों
नसीब से मिल गई आज कुर्सी उसे यहाँ
जिससे हुआ है देखो मालामाल यारों
शोषण के गिद्ध सदैव ही नोंचते है उसे
इसलिए 'होरी' आज तक है बदहाल यारों
'रमेश' तो हरदम रहा सूखे में ही यहाँ
हालात तो आज भी है ख़स्ताहाल यारों

-रमेश मनोहरा

शक्ति के विभिन्न रूप

सौभाग्य संतति की देवी,
रूप सुन्दरी मंगलागौरी,
शिव की शिवा पार्वती देवी,
जगत को नारित्व से परिचित कराने,
नारी के विभिन्न रूप में तुम आई।
पुत्री से है आँगन की शोभा,
जग को यह बतलाने आई तुम।
देवों को शोक मुक्त करने,
हिमालय के घर जन्मी तुम।
इसलिए शैलपुत्री कहलाई तुम।
शिव की शिवा बनने को,
तपस्विनी बन वन - वन विचरी तुम,
कठोर तप करके,
अपनी काया को कंचन बनाई तुम।
इसलिए ब्रह्मचारिणी कहलाई तुम।
तप से तुम्हारे,
सिंहासन शिव का डोल गया।
पा शिव से सानिध्य,
चंद्र सी रूप लावण्य को पाई तुम,
इसलिए चंद्रघंटा कहलाई तुम।
जग को दाम्पत्य का महत्व बताने,
दाम्पत्य जीवन में बंधी तुम।
नर और नारी हैं एक दूजे से परिपूर्ण,
जग को यह बतलाई तुम।
इसलिए कुष्मांडा कहलाई तुम।
जगतजननी,जगतमाता,जगतकल्याणार्थ हेतु ,
जननी स्कंद की बनी तुम।
ताड़कासुर से जग को तारने ,
स्कंद को जन्मी तुम ।
इसलिए स्कंदमाता कहलाई तुम।
ऋषि कात्यायन की प्रार्थना से ,
धरती पर आई तुम ।
भक्ति की लाज रखने के लिए,
मानस रूप में जन्मी तुम।
इसलिए कात्यायनी कहलाई तुम।
सभी के काल को हरने वाली ,
उग्र रूप को धरने वाली,
दुष्टों का दलन करने वाली,
काल से जग की रक्षा करने वाली,
कालरात्रि कहलाई तुम।
काल हरण के कारण,
श्याम वर्ण को पाई तुम।
पुनः कठिन तप करके ,
गौर वर्ण को पाई तुम ।
इसलिए महागौरी कहलाई तुम।
अष्टसिद्धियो की धातृ तुम,
हो सभी गुणों की खानी तुम,
भक्तवत्सल, जगतपालनी तुम,
भक्तों को आशीषों से निहाल कर देती तुम,
इसलिए सिद्धिधात्री कहलाई तुम।
कभी दुर्गा, कभी काली,कभी अन्नपूर्णा,
कभी शाकम्भरी, कभी वैष्णो कहलाई तुम।
नारी है हर रूप में ,घर में तुम्हारे,
नारी के इन स्वरूपों को पहचानों तुम।

डर-हार या जीत

कौन कहता है कि डर के आगे जीत है?
उन्हें सही तरीके से नहीं मिली सीख है,
अरे भई उन्हें बताओ,
कोई ढंग से सिखाओ,
डर के आगे सिर्फ गुलामी है,
सिर झुकाने की प्रवृत्ति और
रात दिन की सलामी है,
डर के कारण जंगल का राजा
सर्कस का शेर बन जाता है,
चाबुक की मार संग जो मिला वहीं खाता है,
डर के साथ जुल्म आता है,
शोषक शोषितों का हिस्सा खाता है,
जिसने ओढ़ लिया गुलामी मानसिक,
नहीं रह पाता स्थिति उनकी वास्तविक,
डर व गुलामीपन के दो प्रमुख हथियार है,
धर्म और भगवान रूपी घातक औजार है,
भारत में एक और हथियार है,
जो जन्म लेते हो जाता तैयार है,
जो ताउम्र रहता सक्रिय हैं,
परमाणु अस्त्र को कर सकता निष्क्रिय है,
जिसे प्यार से जाति कहते हैं,
मरते दम तक जिसका खोल
स्वेच्छा से ओढ़े रहते हैं,
जाति के अंदर भी बड़ा जाल है,
जो बहुजनों के लिए जंजाल है,
तो स्वीकारो डर के आगे हार है,
जो लड़ने को तैयार है,
तर्क से ही सामने आ सकता होनहार है,
तो साथियों डर से लड़ो,
लड़ने,तर्क करने के लिए खूब बढ़ो,
फिर अपनों को जगाओ,
मानसिक गुलामी भगाओ।

-राजेन्द्र लाहिरी छ. ग.

लेख- राशि दो उपाधि सम्मान पत्र लो

साहित्य के दौर में जितने लेखक कवि न होंगे उनसे कई अधिक संस्थाएं होगी जो साहित्य के नाम पर रोजाना ढेरों प्रमाण पत्र बांट रही है।हर उत्सव को भुनाते हुए वे लालीपाप प्रमाणपत्र के नाम पर धल्लड़े से बांटने का काम कर रही है।पहले तो व्हाट्सअप ग्रुप पर

आपको जोड़ने का नेक काम करेगी।फिर विषय पर आपको कविता लेख लिखने के लिए आंमत्रित करेगी।क?ई नवातीत और छपास के जिज्ञासु लेखक कवि इनके चक्कर में आकर घनचक्कर बन जाते हैं।हां अवधि रचना भेजने की नियत करते हैं एक सप्ताह ,दो सप्ताह फिर साथ में धीरे से आपको नियत शुल्क मोबाइल फोन पे ,गुगल से करने को कहते हैं शुल्क 100,150,200,या जो भी वे रखें। साहित्य के हमारे शिरोमणि तत्काल राशि भेजना शुरू कर देते हैं।दन दनादन राशि इन साहित्य संस्थाओं के खाते में आना शुरु हो जाती है।

अगर 100लोग 100 रूपये भेजते हैं तो संस्था को 10000रूपये मुफ्त के ही मिल जाते हैं हर सप्ताह , पाक्षिक ये संस्थाएं रचना मंगाकर सम्मान देने के नाम से लूटमार कर रही है घर बैठे धन एकत्र कर रही है फिर राशि भेजने की अवधि भी धीरे से यह कहकर बढ़ाई जाती है कुछ छूटे साहित्यकारों ने जुड़ने के? लिए निवेदन किया है उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए अवधि बढ़ाई जाती है। ।अवधि बढ़ी तो राशि भी बढ़ेगी ही ।हां एक वैधानिक चेतावनी इनकी यह रहती है भूल से भी आप कविता या लेख के साथ कोई चित्र फोटो नहीं भेज सकते अगर ऐसा किया तो आपको ग्रुप से बिना एडमिन के बेदखल कर दिया जायेगा।

मैंने भी एक बार दांव आजमाया कविता भेज दी साथ ही दूसरे दिए नम्बर पर राशि भी।भूल से फोटो भी चला गया।तुरंत फरमान आया आपको पृथक किया जाता है। मैंने कहा मुझे आपके नियम पता नहीं है।आप वापस राशि भेज दें।वे धमकी सुनकर लाचार से निरूतर हो गये। रचना रखने को सहमत हो गये।

फिर ग्रुप में ही सुनहरी लाईनें आना शुरू हो जाती है कल सुबह फला फला श्री नाम से आपको साहित्य की उपाधियों से सम्मानित किया जा रहा है । आप सौभाग्य शाली है आपको बिना रजिस्ट्रेशन संस्था से बिना साहित्य सेवा किए सम्मानित होने का परम सौभाग्य जो प्राप्त हो रहा है।

दूसरे दिन सहभागिता रखने वाले व्हाट्सअप पर एक जैसे प्रमाण पत्र पाकर गौरवान्वित हो उठते हैं।जितने भी सहभागी है उनके नाम बदलकर ये कम्प्यूटर राइस प्रमाण पत्र सहर्ष सशुल्क बांटे जाते हैं।आप किसी सायबर कैफे आनलाईन शाप से या आपके पास प्रिंटर्स रंगीन है तो रंगीन प्रमाणपत्र पाने का सुख प्राप्त कर सकते हैं।

इन लुभावने प्रमाण पत्रों पर न संस्था का नाम है न शहर का नाम न रजिस्ट्रेशन नम्बर।

ऐसा नहीं की हर संस्था ऐसी है अच्छी संस्थाएं अपने नाम से नये लोगों को सम्मानित होने का काम भी सही दिशा में कर रही है परन्तु इस तरह धल्लड़े से राशि लेकर प्रमाणपत्र पत्र देने का काम नहीं कर ही है ।ये अच्छी बात है।

कई बार मुझे नगर महानगर से संस्थाओं के काल आते हैं आप अपनी साहित्यिक? उपलब्धि भेजिए आपको फला फला अवार्ड से नवाजा जाएगा।मेरे यह पूछने पर कि कितना शुल्क रहेगा ।तब आप राशि सुन कर चौंक जाते हैं ।किसी बड़े होटल में आयोजन होगा आपको इतनी राशि देनी ही होगी।

मैंने कहा भाई मुझे तो राष्ट्रपति पुरस्कार मिल चुका है आपका सम्मान क्या इससे भी ऊंचा है । उधर से ज़बाब आता है आपको पचास प्रतिशत छूट हम दे देंगे।सावधान रहिए ।आप लेखक कवि साहित्यकार हैं तो ऐसी संस्थाओं से दूर रहिए। आपकी कलम में सरस्वती का वास हैआपकी रचना विधा उच्च कोटि की है तो आपको निश्चिंत ही सफलताएं मिलेंगी आप श्रेष्ठ संस्थाओं से सम्मानित होने का गौरव हासिल करेंगे। इन व्यवसायिक संस्थाओं से कोसों दूर रहिए।

-लाल बहादुर श्रीवास्तव

'नेवर बैक डाउन : रिवोल्ट' के हिंदी टेलीविजन प्रीमियर में देखिए अंडरग्राउंड अपराध की रोमांचक दुनिया की दिलचस्प दास्तान, 23 मार्च को एंड पिक्चर्स पर

जीएनएस।जरा सोचिए कि आप एक ऐसी स्थिति में फंस गए हैं, जहां से बाहर निकलने का सिर्फ एक ही तरीका है कि आप अपनी आजादी के लिए लड़ें।

एंड पिक्चर्स पर 23 मार्च को रात 10 बजे 'नेवर बैक डाउन - रिवोल्ट' के हिंदी टेलीविजन प्रीमियर के साथ मार्शल आर्ट्स क्राइम ड्रामा का रोमांच महसूस करने के लिए तैयार हो जाइए, जिसमें नीतू चंद्रा श्रीवास्तव ने अहम भूमिका निभाई है। केली मैडिसन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में ओलिविया पॉपिका, माइकल बिस्पिंग और ब्रूक जॉनस्टन भी लीड रोल्स में हैं। इतने दमदार और टैलेंटेड एक्टर्स के साथ यह फिल्म यकीनन आपके रोंगटे खड़े कर देगी।यह फिल्म एक भाई-बहन की कहानी है, जो चेचन्या से बाहर निकलकर लंदन आते हैं। जहां भाई किसी दिन एक एमएमए चैंपियन बनना चाहता है, वहीं उसकी बहन छोटे-मोटे काम करके घर का ख्याल रखती है। जब उस लड़की को एक अंडरग्राउंड फाइट में शामिल होने के लिए रोम बुलाया जाता है, तब उसे पता चलता है कि चीजें इतनी आसान नहीं है, जैसी कि उसे बताई जाती हैं। जहां वो अपहरण और सेक्स ट्रैफिकिंग की काली दुनिया के जाल में फंस जाती है, वहीं इससे बाहर निकलने के लिए उसके सामने एक ही रास्ता है कि वो अपनी आज़ादी के लिए लड़े।एनर्जी की पावर हाउस और मार्शल आर्ट्स स्पेशलिस्ट नीतू चंद्रा श्रीवास्तव ने इसमें जया का रोल निभाया है। अपने जबर्दस्त टैलेंट और दमदार एक्शन स्टंट्स के साथ उन्होंने अपने रोल को बखूबी निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।इस फिल्म के बारे में बात करते हुए नीतू चंद्रा श्रीवास्तव ने कहा, मैं एक प्रशिक्षित मार्शल आर्ट्स स्टार हूं और मुझे एक मुकम्मल एक्शन फिल्म करने का इंतजार था। ऐसे में 'नेवर बैक डाउन-रिवोल्ट' मेरे लिए एक रोमांचक प्रोजेक्ट साबित हुआ। अपनी पहली हॉलीवुड फिल्म में काम करना मेरे लिए एक सपना सच होने जैसा है।एक एक्टर होने के

अलावा नीतू ताइक्वांडो में ब्लैक बेल्ट फोर्थ डैन भी है और तीन चैंपियनशिप्स में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। इस एक्टर ने अपनी हॉलीवुड डेब्यू फिल्म में जबर्दस्त फाइट सीक्वेंस किए हैं और यह सारे सीक्वेंस उन्होंने बिना किसी बॉडी डबल का इस्तेमाल किए खुद ही परफॉर्म किए हैं।नीतू बताती हैं, मैंने अलग-अलग मार्शल आर्ट्स फॉर्म में ट्रेनिंग ली है और इसलिए मैं इस रोल को लेकर कॉन्फिडेंट थी। अपने किरदार में ढलने के लिए मैंने अपना बेस्ट दिया है। यह रोल मेरे लिए सपना सच होने जैसा था और मैंने इसमें हर बारीकी को बखूबी निभाने के लिए कड़ी मेहनत की है। अब एंड पिक्चर्स पर इस फिल्म का हिंदी टेलीविजन प्रीमियर होने जा रहा है, तो मुझे इस बात की खुशी है कि यह ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुंचेगी और लोग इस फिल्म को एंजॉय करेंगे।तो आप भी अंडरग्राउंड की एलाइट दुनिया और धमाकेदार एक्शन परफॉर्मेंस से रूबरू होने के लिए तैयार हो जाइए, 23 मार्च को रात 10 बजे, सिर्फ एंड पिक्चर्स पर।

कलाकारों ने थिएटर से लेकर टेलीविजन तक के अपने सफर के बारे में बताया

जीएनएस। वर्ल्ड थिएटर डे हर साल 27 मार्च को मनाया जाता है। इस मौके पर एण्डटीवी के शोज के कलाकारों ने थिएटर के लिये अपने प्यार और थिएटर से टेलीविजन तक के अपने सफर के बारे में बात की। इन कलाकारों में शामिल हैं अथर्व ('एक महानायक- डॉ. बी. आर. आम्बेडकर' के भीमराव), नेहा जोशी ('दूसरी माँ' की यशोदा), कामना पाठक ('हप्पू की उलटन पलटन' की राजेश) और आसिफ शेख ('भाबीजी घर पर हैं' के विभूति नारायण मिश्रा)। 'एक महानायक- डॉ. बी. आर. आम्बेडकर' में भीमराव की भूमिका निभा रहे अथर्व ने कहा, '' मेरे अभिनय कौशल को निखारने थिएटर का बहुत बड़ा योगदान है। थिएटर से मिली सीख ने एण्डटीवी के 'एक महानायक- डॉ. बी. आर. आम्बेडकर' में भीमराव की भूमिका निभाने जैसा जिन्दगी में एक बार मिलने वाला मौका पाने में मेरी मदद की है। मैं साढ़े तीन साल का था, जब मैंने पहली बार मंच पर प्रस्तुति दी थी। मंच पर होने का अनुभव बेहतरीन था और उसने मेरे एक्टिंग कॅरियर की नींव रखी। इससे मेरा मौखिक संवाद बेहतर हुआ, मुझे कई लोगों के सामने बोलने का आत्मविश्वास मिला, मैंने अपने भीतर की घबराहट नहीं दिखाते हुए परफॉर्म करना सीखा और एक्टिंग के लिये मेरे जुनून को आगे बढ़ाने का भरोसा भी मुझे थिएटर से ही मिला।''

'दूसरी माँ' की यशोदा, यानि नेहा जोशी ने कहा, ''मेरे माता-पिता थिएटर कलाकार हैं। बचपन के दिनों से ही, मैंने न सिर्फ उन्हें मंच पर परफॉर्म करते देखा, बल्कि एक्टिंग के बारे में उनसे बहुत कुछ सीखा भी। मैंने मराठी स्टेज ड्रामा 'क्षण एक पुरे' के साथ अपना कॅरियर शुरू किया था और बाद में मुझे एक टेलीविजन शो और फिर फिल्में मिलीं। थिएटर ने अच्छा एक्टर बनने के लिये मुझे बहुत कुछ सिखाया। मैं अब भी थिएटर वर्कशॉप्स करती हूँ, क्योंकि मेरा मानना है कि अगर आप एक्टर के तौर पर बढ़ना चाहते हो, तो आपको थिएटर से जुड़े रहना चाहिये। यह अभिनय कौशल को सीखने और उन्हें एक्स्प्लोर करने का सबसे बढ़िया माध्यम है।'' 'हप्पू की उलटन पलटन' की राजेश, यानि कामना पाठक ने कहा, ''मैंने स्टेज पर पहली बार तब परफॉर्म किया था, जब मैं पाँच साल की थी। थिएटर से मैंने जो सबक सीखे हैं, वह हमेशा मेरे साथ रहेंगे। थिएटर में रीटेक नहीं होते हैं। चाहे आप छोटी गलतियाँ करें, तब भी आपको घबराहट से उभरकर शो जारी रखना होता है। मेरी राय में, थिएटर में महारथ हासिल करना मुश्किल होता है। इसमें दर्शकों के साथ सीधे जुड़ाव बनता है और तुरंत प्रतिक्रिया मिलती है। और इस तरह एक्टर के रूप में आपमें आत्मविश्वास आता है।'' 'भाबीजी घर पर हैं' के विभूति नारायण मिश्रा, यानि आसिफ शेख ने कहा, ''थिएटर हमेशा से मेरा पहला प्यार रहा है। एक्टिंग के लिये मेरे जुनून को जगाने में इसका बड़ा योगदान रहा है और इस तरह मुझे एक मजबूत आधार भी मिला। थिएटर के अपने शुरूआती दिनों में, मैंने कई नाटकों में काम किया और बड़ी-बड़ी हस्तियों से सीखा। मैं बॉलीवुड और टेलीविजन में व्यस्त हो गया, लेकिन मैंने थिएटर को नहीं छोड़ा। कुछ महीने पहले मुझे अपने सबसे पुराने नाटकों में से एक, 'हम दीवाने हम परवाने' में काम करने का मौका मिला था। मैंने सात साल बाद थिएटर में परफॉर्म करने के लिये वापसी की थी। मुझे सपोर्ट करने के लिये मेरा परिवार वहाँ था और मुझे खुशी हुई कि मेरे बच्चे दर्शकों के बीच बैठकर मुझे देख रहे थे। वह मेरे लिये वाकई गर्व का पल था।''

देखिये 'दूसरी माँ' रात 8:00 बजे, 'एक महानायक- डॉ. बी. आर. आम्बेडकर' रात 8:30 बजे, 'हप्पू की उलटन पलटन' रात 10:00 बजे और 'भाबीजी घर पर हैं' रात 10:30 बजे, हर सोमवार से शुक्रवार सिर्फ एण्डटीवी पर!

परीक्षा की कठिन घड़ी के तीन सालों में प्रदेश ने सभी दिशाओं में नए मापदण्ड स्थापित किए -मुख्यमंत्री चौहान

प्रदेश में विकास और जन-कल्याण का चल रहा है महायज्ञ ››किसान-कल्याण, युवाओं, बहन-बेटियों के कल्याण के साथ››अधो-संरचना,ऊर्जा, सिंचाई, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई प्रगति

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि हमारी सरकार के तीन साल परीक्षा की कठिन घड़ी के साल थे। पहले और दूसरे साल में हमने कोविड के महा संकट का सामना किया। कोविड के संकट से प्रदेश को निकालने के लिए सारी व्यवस्थाएँ करने का दायित्व था। इस दायित्व को पूरा किया और हमने मध्यप्रदेश के विकास की गति को भी रूकने नहीं दिया। साथ ही हमने केवल मध्य प्रदेश के भाई-बहनों की सेवा ही नहीं की अपितु जो मजदूर पैदल आ रहे थे, उन्हें भी हर संभव सुविधा उपलब्ध कराई। मध्य प्रदेश देश का पहला राज्य था, जिसने तय किया कि कोई भी मजदूर प्रदेश में पैदल नहीं चलेगा। अपने प्रदेश की सीमा पर हम उन्हें बस में बैठाते और दूसरे राज्य की सीमा तक छोड़ कर आते। साथ ही मजदूरों के चाय, नाश्ते, भोजन, दवाई और जूते-चप्पल की व्यवस्था जन-सहयोग से की गई। प्रदेश में बनी क्राइसिस मैनेजमेंट कमेटी देश में मिसाल बनी। प्रशासन, जनता और सरकार ने जन-प्रतिनिधियों के साथ मिल कर कोविड की चुनौती का मुकाबला किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान अपनी सरकार के तीन वर्ष पूर्ण होने के संबंध में गत दिवस मीडिया प्रतिनिधियों से श्यामला हिल्स स्थित उद्यान में पौध-रोपण के बाद चर्चा कर रहे थे।

किसानों के खातों में डाली गई 2 लाख 25 करोड़ से ज्यादा की राशि

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि संकट के इस दौर में भी राज्य सरकार ने किसानों के फसल बीमा प्रीमियम की 200 करोड़ रूपए की राशि जमा की। पिछले 3 साल में 2 लाख 25 करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि अलग-अलग योजनाओं में किसानों के खातों में डालने में हम सफल रहे। किसान-कल्याण के लिए सक्रिय रहने के साथ हमने आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश का सपना देखा और इसके लिए अधो-संरचना, सड़कों का जाल फैलाने तथा हाईवेज के अंतर्गत अटल एक्सप्रेस-वे, नर्मदा एक्सप्रेस-वे की योजना बनी। इसी क्रम में विंध्य एक्सप्रेस-वे की योजना भी शामिल है। प्रदेश में 4 लाख किलोमीटर सड़कें बन कर तैयार हैं।

आकाश मार्ग के उपयोग के लिए 14 जगह रोप-वे की योजना तैयार

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि राज्य सरकार ने मध्यप्रदेश में सिंचाई की अनेक परियोजनाओं का शुभारंभ किया। प्रदेश में 45 लाख हेक्टेयर सिंचाई की व्यवस्था करने के बाद अब हमारे कदम 65 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई व्यवस्था स्थापित करने की ओर अग्रसर हैं। बिजली के उत्पादन को बढ़ा कर हमने 28 हजार मेगावाट की उपलब्धता कर दी है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी हम तेजी से काम कर रहे हैं। अधो-संरचना और मेट्रो का काम भी तेजी से चल रहा है। केवल सड़कों का नहीं परिवहन के लिए आकाश मार्ग का उपयोग करने के लिए 14 जगह रोप-वे निर्माण की योजना बन कर तैयार है। उज्जैन में कार्य आरंभ होने वाला है। इसी बीच श्री महाकाल लोक बन कर तैयार हुआ।

प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं का बिछ रहा है जाल

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि हमने शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में भी क्रांति करने का फैसला किया। सीएम राइज स्कूल के रूप में गरीब और मध्यम वर्ग के बच्चों को उत्कृष्ट विद्यालय देने का हमारा अभियान चला। इनके भवनों का निर्माण तेजी से चल रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता ठीक करने के लिए नई शिक्षा नीति लागू की गई। साथ ही उच्च शिक्षा की गुणवत्ता ठीक करने की दिशा में भी प्रयास किए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मध्यप्रदेश की धरती पर मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में कराने का ऐतिहासिक फैसला लिया गया। शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में एक के बाद एक मेडिकल कॉलेज आरंभ हो रहे हैं। उप स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का जाल बिछ रहा है। मेडिकल कॉलेजों के साथ स्वास्थ्य संस्थाओं का उन्नयन स्वास्थ्य की दिशा में एक नई क्रांति कर रहा है। आयुष्मान कार्ड बनाने में हम देश में प्रथम स्थान पर पहुँच चुके हैं।

शहरी-ग्रामीण विकास और पर्यटन के क्षेत्र में अर्जित की उपलब्धियाँ

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि शिक्षा हो या स्वास्थ्य या सुशासन, हर क्षेत्र में मध्यप्रदेश आगे बढ़ा है। शहरी विकास, ग्रामीण विकास और पर्यटन के क्षेत्र में भी हमने उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। टाइगर, लेपर्ड, वल्चर और घड़ियाल स्टेट होने का गौरव तो हमें पहले से ही प्राप्त था। मध्यप्रदेश अब चीता स्टेट भी बन गया है। मध्यप्रदेश में पर्यटन को नई ऊँचाइयाँ प्राप्त हुई हैं।

अर्थ-व्यवस्था और रोजगार में रिकार्ड स्थापित

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि अर्थ-व्यवस्था और रोजगार की दृष्टि से देखे तो हमने नए रिकॉर्ड स्थापित किए हैं। लगभग 1 लाख 24 हजार शासकीय नौकरियाँ निकली हैं, जिनमें भर्ती का अभियान लगातार चल रहा है। मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना में 1लाख युवाओं को हर साल स्व-रोजगार के लिए धन उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसकी गारंटी और ब्याज सब्सिडी भी सरकार दे रही है। हर महीने रोजगार दिवस मनाए जा रहे हैं। लगभग ढाई लाख लोगों को बैंकों से जोड़ कर रोजगार के अवसर सृजित किए जा रहे हैं। एक नई योजना भी आरंभ की गई है, जिसमें 1 लाख युवाओं को ÷लर्न एंड अर्न÷ में काम करना सीखने और राशि प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराने के लिए बजट में एक हजार करोड़ रूपये का प्रावधान कर अभियान चलाया गया है।

3 लाख 14 हजार करोड़ का है प्रदेश का बजट

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में बहन-बेटियों की दृष्टि से भी क्रांति हुई है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना जैसी क्रांतिकारी योजनाएँ बनी, लाड़ली लक्ष्मी बेटियों के लिए भी अलग अलग कई व्यवस्थाएँ की गई। सभी क्षेत्रों में विकास के साथ किसान, युवा, माताओं और बहनों के कल्याण के लिए कार्य हुए हैं। गरीब-कल्याण में 91 लाख नए नाम अनेक हितग्राही मूलक योजनाओं में जुड़े हैं। प्रदेश में विकास और जन-कल्याण का महायज्ञ चल रहा है। हमारा बजट अब बढ़ कर 3 लाख 14 हजार करोड रूपए हो चुका है। पर कैपिटा इनकम जो कभी 11 हजार रूपए होती थी, अब बढ़ कर 1 लाख 40 हजार रूपए के आसपास पहुँच गई है। जीएसडीपी का आकार लगातार बढ़ रहा है, जो कभी 71 करोड़ था आज बढ़ कर 13 लाख करोड़ को पार कर गया है। इन तीन कठिन सालों में मध्यप्रदेश में हम सभी दिशाओं में प्रगति और विकास करने में सफल रहे हैं।

शिवमहापुराण कथा में सेवा के लिए कार्यालय में सम्पर्क कर सकते है

पहले आओ पहले स्थान पाओं, कथा मे पास की व्यवस्था नही रहेगी

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। विश्वविख्यात सुप्रसिद्ध कथावाचक पं. प्रदीप मिश्रा (सीहोर वाले) के श्रीमुख से शिवमहापुराण का पुनित आयोजन दिनांक 4 अप्रैल 2023 से दिनांक 10 अप्रैल 2023 तक बड़नगर रोड़, उज्जैन पर किया जा रहा है। शिवमहापुराण कथा में सेवा कार्य के लिए बड़नगर रोड़ स्थित विद्युलेश सेवा समिति के कार्यालय में सम्पर्क कर सकते है। कथा श्रवण के लिये पहले आओं पहले स्थान पाओं, किसी भी प्रकार के पास की व्यवस्था नही रहेगी। साथ ही किसी के कहने पर भी दान, दक्षिण भेंट ना करे कार्यालय में ही संपर्क कर दान दक्षिणा भेंट कर रसीद प्राप्त करें। प्रथम सेवक महापौर श्री मुकेश टटवाल एवं विद्युलेश सेवा समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश शर्मा द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि 4 अप्रैल से आयोजित होने वाली शिव महापुराण कथा की व्यवस्थाओं एवं सहयोग के लिए बड़नगर रोड पर विद्युलेश सेवा समिति उज्जैन का कार्यालय प्रारंभ किया गया है जहां कथा में जो इच्छुक व्यक्ति अपनी सेवा देना चाहता है वह यहां पंजीयन करा सकता है पंजीयन करवा कर समिति तय करेगी कि किसे कौन सी समिति में रखना है इसके पश्चात वह अपनी सेवा समिति में दे सकता है साथ ही यह भी जानकारी देते हुए बताया कि शिव महापुराण कथा के लिए किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग नहीं लिया जा रहा है यदि कोई भी कथा के नाम से सहयोग राशि मांगता है तो वह पूर्ण रूप से निराधार एवं असत्य है इसलिए किसी के भी कहने या बहकावे में आकर बिना किसी तथ्यात्मक जानकारी के किसी भी अप्रिय व्यक्ति को दान या नगद राशि ना दें।

खेल विभाग के स्वीमिंग पूल में डूबने से युवक की मौत

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। खेल एवं युवक कल्याण विभाग के महानंदा नगर एरिना स्थित स्वीमिंग पूल में गुरूवार दोपहर चंद्रपाल सोलंकी 24 वर्ष निवासी महानंदा नगर की डूबने से मौत हो गई।युवक को तत्काल ही बाहर निकाल कर जिला अस्पताल ले जाने पर इंमरजेंसी में डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया।पुलिस ने मर्ग कायम कर युवक का पोस्ट मार्टम करवा कर शव परिजनों के सिपूर्द किया है। पुलिस जांच कर रही है।

माधवनगर थाना प्रभारी मनीष लोधा के अनुसार युवक दोपहर में स्वीमिंग पूल में तैराकी करने गया था, इसी दौरान वह डूबा। स्वीमिंग पूल के कर्मचारी एवं अन्य उसे लेकर जिला अस्पताल पहुंचे थे। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू की है। स्वीमिंग पूल में लगे सीसी टीवी कैमरा के फूटेज से देखा जाएगा कि कैसे युवक डूबा , इसमें लापरवाही सामने आने पर संबंधित के विरूद्ध प्रकरण दर्ज किया जाएगा। खेल एवं युवक कल्याण विभाग के स्वीमिंग पूल का संचालन संभागीय तैराकी संघ कर रहा है। विभाग ने वर्ष 2021 में 3 वर्ष के लिए संघ को स्वीमिंग पूल लीज पर दिया है। तैराकी संघ के अध्यक्ष राकेश तिवारी के अनुसार युवक चंद्रपाल नियमित सदस्य है।वह मात्र 4-5 फीट की गहराई के पानी में ही डूब गया। स्वीमिंग पूल की गहराई अधिकतम साढे पांच फीट ही है।युवक तैरना भी जानता था। युवक को डूबते देख तत्काल ही उसे बाहर निकाल कर जिला अस्पताल ले जाया गया था। हादसा कैसे हुआ समझ नहीं आ रहा है।स्वीमिंग पूल में सीसीटीवी कैमरा भी लगे हुए हैं।पूल में 6 लोगों का स्टाफ हर समय उपलब्ध रहता है।इसमें 2लाईफ गार्ड एक कोच रहते हैं। स्वीमिंग पूल का संचालन 365 दिन किया जाता है। स्वीमिंग पूल 3 वर्ष की लीज पर विभाग ने संघ को दिया है।

मध्यप्रदेश में वल्चर रिजर्वेशन एंड री-इंट्रोडक्शन विषय पर हुआ राष्ट्रीय सम्मेलन

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान एवं बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के सहयोग से नरोन्हा प्रशासनिक अकादमी में गत दिवस ÷मध्यप्रदेश में वल्चर कंजर्वेशन एंड री-इंट्रोडक्शन÷ विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसमें बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी के साथ वन, पशुधन और औषधि नियंत्रण विभाग एवं संरक्षित क्षेत्रों के क्षेत्र संचालक, वन्य-प्राणी चिकित्सक, गिद्धों के संरक्षण पर कार्य करने वाले राष्ट्र स्तरीय अशासकीय सदस्यों के प्रतिनिधि, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ, आर.एस.पी.वी., अरुलागम, भारतीय वन्य-प्राणी संस्थान देहरादून, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक, गिद्ध के संरक्षण में कार्य कर रहे प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री दिल शेरखान, डॉ. के.के. झा और बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के जूलॉजी विषय में एमएससी कर रहे छात्र एवं शोधार्थियों सहित 85 व्यक्ति शामिल हुए।

सम्मेलन के दौरान विभिन्न वैज्ञानिकों ने गिद्धों की कम हो रही संख्या के कारण पर प्रकाश डालते हुए प्रमुख रूप से डायक्लोफिनाक दवाओं के प्रयोग को रोकने की आवश्यकता पर जोर दिया। साथ ही गिद्ध संरक्षण के लिये सभी स्टेकहोल्डर्स को जागरूक करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। अभियान के रूप में सभी शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं को मिल कर कार्य करने पर जोर दिया गया। श्री जे.एस. चौहान, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्य प्राणी) ने अपने उदबोधन में मध्यप्रदेश के विभिन्न संरक्षित क्षेत्रों के आसपास वल्चर सेफ जोन की पहचान कर वहाँ जन-जागरूकता अभियान चलाए जाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने डाइक्लोफिनाक दवाओं के स्थान पर अल्टरनेटिव ड्रग्स को कम कीमत पर कैसे उपलब्ध कराने के लिये कार्य करने पर जोर दिया। सम्मेलन में ÷मध्यप्रदेश के गिद्धों के हॉटस्पॉट क्षेत्रों में वल्चर सेफ डिस्ट्रिक्ट की स्थापना करने के लिए भोपाल रेजोल्यूशन÷ पारित किया गया। सम्मेलन का समापन सभी प्रतिभागियों द्वारा डाइक्लोफिनाक जैसी दवाओं का भविष्य में उपयोग न करने की शपथ लेकर किया किया।

नगर निगम ने किया विभिन्न गेरो का स्वागत

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। गुड़ी पड़वा पर शहर में विभिन्न समजा, संगठनों द्वारा गेर ध्वज चल समारोह निकाले गए जिसका स्वागत नगर निगम की ओर से गोपाल मंदिर स्थित पुराने नगर निगम भवन के बाहर मंच लगा कर किया गया। गुड़ी पड़वा पर सिंहपुरी, भागसीपुरा एवं महाराष्ट्रीय समाज द्वारा परम्परागत गेर निकाली गई गेर का स्वागत नगर निगम की ओर से एमआईसी सदस्य श्री रजत मेहता, पार्षद श्री प्रकाश शर्मा, पंकज चौधरी द्वारा गेर में शामिल ध्वज का पूजन कर, विरिष्ठजन का पुष्पमाला पहना कर सम्मान करते हुए पुष्पवर्षा करते हुए स्वागत किया गया।

शुभम चौऋषिया ने एम. कॉम. (सीबीसीएस) में दो स्वर्ण पदक प्राप्त किए

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के 27वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीय उच्च शिक्षा मंत्री, मध्यप्रदेश शासन डॉ. मोहन यादव, माननीय सदस्य नीति आयोग एवं कुलाधिपति जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली डॉ. विजय कुमार सारस्वत, माननीय संसद सदस्य श्री अनिल फिरोजिया, उज्जैन उत्तर के लोकप्रिय विधायक श्री पारस चन्द्र जैन, माननीय वरिष्ठ शिक्षाविद, मुम्बई डॉ. मिलिंद मराठे, विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय और कुलसचिव प्रो. प्रशांत पुराणिक के हाथों वर्ष 2022 की स्नातकोत्तर परीक्षा एम. कॉम. (सीबीसीएस) की प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त कर शुभम चौऋषिया ने दो स्वर्ण पदक एवं उपाधि प्राप्त की। शुभम ने एम. कॉम. (सीबीसीएस) परीक्षा वाणिज्य अध्ययनशाला (कॉमर्स डिपार्टमेंट), विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से उत्तीर्ण की है। स्मरण रहें कि, शुभम चौऋषिया ने एमबीए (सीबीसीएस) की डिग्री भी प्रावीण्य सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की थी साथ ही बी. कॉम. (ऑनर्स) स्नातक परीक्षा भी प्रावीण्य सूची में सप्तम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की थी। उल्लेखनीय है कि, शुभम चौऋषिया वरिष्ठ पत्रकार श्री राधेश्याम चौऋषिया के सुपुत्र हैं।

शुभम ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, सभी गुरुजनों एवं भगवान जी को दिया हैं। शुभम चौऋषिया की इस उपलब्धि पर डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. एस. के. मिश्रा, डॉ. डी.डी. बेदिया, डॉ. सचिन राय, डॉ. दीपक गुप्ता, डॉ. धर्मेंद्र मेहता, डॉ. नयनतारा डामोर, डॉ. शैलेंद्र कुमार भारल, डॉ. आशीष मेहता, डॉ. नागेश पाराशर, डॉ. रुचिका खंडेलवाल, डॉ. अनुभा गुप्ता, डॉ. नेहा माथुर, डॉ. परिमिता सिंह, डॉ. टीना यादव, देवेश्वरी सिंह भाटी, चेतन ढूंडाले, हर्षल जैन, अनुज जैन, सपना चौहान, शुभा सुहाने, डॉ. सुशील कुमार शर्मा, संजय ललित, अरुण राठौर, रानी राधेश्याम चौऋषिया, विकास चौऋषिया, सिद्धीविनायक चौऋषिया, विशाल चौऋषिया, वीरेंद्र चौऋषिया, विजय चौऋषिया, अमित चौऋषिया, विजय अग्रवाल, श्रीमती माधुरी वझे, बीएल बाथरे, सचिन गोयल, अनिल तिवारी, राहुल मिश्रा, अपूर्व देवड़ा, हेमन्त भोपाले, इंदर सिंह चौधरी परिजनों व इष्ट मित्रों आदि ने उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए हर्ष व्यक्त किया एवं बधाई दी हैं।

गुडी पड़वा पर देंगे नगर गौरव सम्मान, मुख्यमंत्री ने की घोषणा

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। आगामी वर्ष प्रतिपदा 2081 गुड़ी पड़वा नगर गौरव दिवस पर उज्जैन शहर का गौरव बढ़ाने के उपलक्ष्य में नगर गौरव सम्मान दिया जाएगा इसके लिए सवा लाख रूपय राशि की घोषणा मा. मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने माँ क्षिप्रा के तट पर आयोजित नगर गौरव दिवस के मुख्य समारोह में महापौर श्री मुकेश टटवाल के अनुरोध पर की गई। महापौर श्री टटवाल ने बताया कि अगले वर्ष से गुड़ी पड़वा नगर गौरव दिवस पर उज्जैन शहर के ऐसे व्यक्ति को सम्मानित किया जाएगा जिसने उज्जैन शहर को गौरवांवित किया है। उन्हे नगर पालिक निगम उज्जैन द्वारा सम्मानित किया जाएगा। इसके लिए मा. मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा राशि रूपये सवा लाख की घोषणा की गई है। पुरुस्कार का क्या स्वरूप होगा इसके लिए समिति बनाई जाऐगी। इस पुरुस्कार से उज्जैन शहर का गौरव बढाने में जनता की भागीदारी का बढ़ावा मिलेगा।

उज्जैन को स्वच्छता में नंबर वन बनाने का संकल्प दिलाया- नगर गौरव दिवस के मुख्य समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहां कि उज्जैन को स्वच्छत एवं साफ बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दें।

उन्होंने उपस्थित नागरिकों को संकल्प दिलाया कि वे इस वर्ष उज्जैन शहर को स्वच्छता में नंबर वन बनायेंगे।

सार समाचार

चोरी हुए आभूषण खरीदने वाले युवक को भी पुलिस ने आरोपी बनाया

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। सांवरिया ज्वेलर्स से चोरी हुए आभूषण खरीदने वाले युवक को भी पुलिस ने आरोपी बनाया है। चोरों ने पूछताछ में युवक का नाम बताया था। गुरुवार को रिमांड खत्म होने पर तीनों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से जेल भेजा गया है। जीवाजीगंज टीआई गगन बादल ने बताया कि उर्दूपुरा में सांवरिया ज्वेलर्स में हुई लाखों की चोरी में गांधीनगर के रहने वाले धीरज उर्फ धर्मेश और साजिद चिमनगंज मंडी को गिरफ्तार किया गया था। दोनों की निशानदेही पर 12 किलो चांदी और 20 ग्राम सोने के आभूषण बरामद होने पर न्यायालय में पेश कर 2 दिनों की रिमांड पर लिया गया था। पूछताछ में दोनों ने अवंतिपुरा में रहने वाले अंकित कुमावत को कम दाम में आभूषण बेचना कबूल किये थे। अंकित को हिरासत में लेकर उसकी निशानदेही पर पौने दो लाख के आभूषण बरामद किये गये है। मामले में उसे भी चोरी के आभूषण खरीदने का आरोपी बना गया। चोरी करने वालों का गुरुवार को रिमांड खत्म होने पर अंकित को भी उनके साथ न्यायालय में पेश किया गया। जहां से जेल भेजा गया है। विदित हो कि चोरी की वारदात सामने आने के बाद पुलिस ने सतीश दग्दी की शिकायत पर प्रकरण दर्ज किया था। उस दौरान 50 लाख के आभूषण चोरी होने की बात सामने आई थी, लेकिन आरोपियों के गिरफ्त में आने के बाद 14 से 14 लाख के आभूषण ही बरामद हुए है।

रेलवे पटरियों से गुरुवार को एक वृद्ध का शव बरामद किया

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। रेलवे पटरियों से गुरुवार को एक वृद्ध का शव बरामद किया है। जिसकी पहचान इंदौर निवासी के रुप में हुई है। परिजन जानकारी लगने पर उज्जैन पहुंचे थे। मामला हादसा होना सामने आया है। महाकाल थाना पुलिस ने बताया कि दोपहर में चिंतामण ब्रिज के नीचे रेलवे पटरियों पर लाश पड़ी होने की सूचना मिली थी। एसआई गोपालसिंह राठौर मौके पर पहुंचे। मृतक का सिर ट्रेन की चपेट में आना सामने आया है। उसकी शिनाख्त के लिये मृतक की तलाशी ली गई तो दस्तावेज बरामद हुए। जिसके आधार पर उसकी पहचान राजेन्द्र पिता बलभीम वारे (58) कालेन्द्री इंदौर के रुप में हुई। मामले की सूचना परिजनों को दी गई। शाम को परिजन पहुंचे तो सामने आया कि सुबह इंदौर से उज्जैन में रहने वाले रिश्तेदारों से मिलने का जाने का कहकर निकले थे। संभवतः हादसा ट्रेन के गेट पर बैठ सफर करने के दौरान हुआ है। एसआई गोपालसिंह राठौर के अनुसार मामले की जांच की जा रही है। पता लगाया जा रहा है कि वृद्ध कौन से ट्रेन से आ रहा था। फिलहाल पोस्टमार्टम के बाद शव अंतिम संस्कार के लिये परिजनों को सौंपा गया है।

कार का कांच फोड़कर बदमाश ने रुपयों से भरा बेग उड़ा दिया

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। गुरुवार शाम कार का कांच फोड़कर बदमाश ने रुपयों से भरा बेग उड़ा दिया। वारदात कॉलेज प्राचार्या के साथ होना सामने आया है। सूचना मिलने पर पुलिस पहुंची थी, बदमाश की तलाश शुरु की गई है। ऋषिनगर में रहने वाली डॉ. कीर्ति निर्मला कॉलेज की प्राचार्या है। शाम को वह कॉलेज संबंधी सामग्री की खरीददारी के लिये टॉवर चौक पहुंची थी। उन्होने अपनी कार ग्राउंड होटल के सामने हैदरी शॉप के पास खड़ी की। जब वह वापस लौटी तो कार के अगले गेट का कांच फूटा हुआ था और सीट पर रखा बेग गायब था। जिसमें 35 हजार रुपये नगद, एटीएम कार्ड और मोबाइल रखा हुआ था। वारदात की सूचना माधवनगर थाना पुलिस को मिली तो मौके पर पहुंची। आसपास लगे कैमरों के फुटेज देखे गये। जिसमें एक संदिग्ध भागता हुआ दिखाई दिया है। जिसकी पहचान के प्रयास कर तलाश शुरु की गई है। मामले में प्राचार्या की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान से मिले विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारी युवा वर्ग से संबंधित विषयों पर हुई विस्तृत चर्चा

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड।मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से गत दिवस निवास पर समत्व भवन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारियों ने मुलाकात की। इस मुलाकात में युवा वर्ग से संबंधित विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने आज अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री वीरेंद्र सोलंकी ,प्रांत मंत्री श्री आयुष पाराशर सहित अन्य पदाधिकारी श्री रोहित दुबे (प्रांत संगठन मंत्री) कु. चंचल धोते (प्रांत सह मंत्री) श्री राहुल धाकड़ (महानगर संगठन मंत्री) श्री प्रभाकर मिश्रा (महानगर मंत्री) और श्री ध्रुव राजपूत (महानगर सह मंत्री) ने भेंट में युवा वर्ग से संबंधित अनेक सुझाव प्रस्तुत किए। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने शीघ्र ही इन सुझावों के अनुरूप आवश्यक निर्णय लेने की बात कही। विद्यार्थी परिषद के पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री श्री चौहान को प्रकाशन भी भेंट किए।

अंकित ग्राम', सेवाधाम आश्रम में शहीद दिवस पर सच्चे सपूतो का श्रद्धांजलि अर्पित की

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड।'अंकित ग्राम', सेवाधाम आश्रम के प्रांगण स्थित सत्यमित्र ऑडीटोरियम में देश के सच्चे सपूतों भगत सिंह, सुखदेव थापर एवं शिवराम हरि राजगुरू के शहादत को याद कर शहीद दिवस पर उनके चित्र के साथ संस्थाध्यक्ष स्व. डॉ. वेद प्रताव वैदिक के कार्यो को भी याद कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर सेवाधाम आश्रम संस्थापक सुधीर भाई, उज्जैन जिला बाल कल्याण समिति अध्यक्ष शेर सिंह ठाकुर, सदस्यगण गजेन्द्र सिंह तोमर, श्रीमती मोनिका त्रिवेदी, श्रीमती निधि शर्मा, श्रीमती गायत्री धनगर सहित अवधेश मिश्रा, अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद, केन्द्रिय गांधी स्मारक निधि, नईदिल्ली, वेद प्रकाश वर्मा, समाजसेवी व व्यवसायी, इन्दौर व वरिष्ठ आर्किटेक्ट डॉ. किरण पी. शिन्दे विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर सुधीर भाई, शेर सिंह ठाकुर, गजेन्द्र सिंह तोमर, निधि शर्मा आदि वक्ताओं ने वीर सपूतों के किस्से सुनाए एवं बच्चों को अनेक महत्वपूर्ण जानकारियाँ बताई जिसे वह अपने जीवन जीने की कला में शामिल कर सके।

मालिक, प्रकाशक, मुद्रक विजय शर्मा द्वारा 44, बहादुरगंज, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं भगवती ऑफसेट 44, बहादुरगंज, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित। सम्पादक - विजय शर्मा, मो.नं. 94250-22499, फोन 0734-2553435 प्रधान संपादक : शुभम ताम्रकार (सभी वाद विवाद का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)